

एक कमरे की कहानी

लेखक
यादवेंद्र शर्मा 'घग्ग'



गङ्गा प्रकाशन

सवधिबदार—सतस्र द्वारा मुद्रित

प्रकाशक —सवरतस्र प्रकाशन सार स) ह्रीस्री डी बरतेर

ररररी ककक —१५८१ररररीररर बररररररर ररररी—५

सूसु — सीस बसए

सुदर—सूसु बसक करर ददर
सूसु प्रर
बरीररी बरीर ररररी ५

EK KAMRE KI KAHANI (Novel) by CHANDRA

Price Rs. 3.00

प्रकाशकीय

भारत का प्रकाशन का आधार एक दिन अथवा एक रात्रिमान
अथवा भारतीय भाषाओं में अथवा साहित्यकारों की आवश्यकताओं पर
के रूप में बन गया। श्री अन्ध ने हिन्दी में सष्ठ साहित्य
सृजन करके राजस्थान का मान बढ़ाया है और उनकी नीतियों
पुस्तकालय मराठी सिन्धी तथा उर्दू में अनुवादित प्रकाशित कृतियों ने
राजस्थान का सम्पूर्ण साहित्यिक किया है।

इसकी ओर से उनकी अधिक से अधिक कृतियाँ प्रकाशित करने
की चेष्टा रहेगी और अन्य प्रकाशकों द्वारा अपनी उनकी पुस्तकें भी
बाप वहाँ से महजना से प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अन्तर्गत पर हम सब की ओर से बीकानेरवासी
आत्मीयताओं एवं विचारों की (बीकानेर) और मानो (दिल्ली)
के आसानी हैं। किन्तु श्री ने भारत के मुद्राचार से और मानो
की उनमें किन्तु हीन होने से रंग मरे।

एक बार मैं इन्हीं के रूप से उन राजस्थानवासी के प्रवासी
की ओर से सम्बन्ध हेतु हैं किन्तु हीन वाद की ही पुस्तकें अथवा
सरोर कर मुझे बत दिया।

पं. तिरुवी श्री अन्ध
प्रकाशिका

हमारे यहाँ से प्रकाशित कागज़ी की अन्य छवियाँ

- एक इन्सान की मोत
 - एक इन्सान का बगम
 - ताबित्री
- कहानियाँ
(उपमा)

में इतना ही कहूँगा

एक कमरे की कहानी—जबकि उपन्यास । कथानक दिल्ली का एक कमरा ।

आप इस लघु उपन्यास में आज के बदलते जीवन और निवसताओं से भिरे इन्सानों की एक सच्ची कहानी पायेंगे । यथार्थ का विश्लेषण बहुत ही संमेल-संमेल कर किया है पर कुछ ऐसे यथार्थ हैं जिन पर कलात्मक आवरण नहीं डाला जा सकता ।

में इसके प्रकाशन पर लखनऊ प्रकाशन के उन सभी सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे विचारों को मूर्त रूप दिया ।

वाठक अपनी सम्मति भेजेंगे ।

माखण्ड घर्मा 'बन्धु

बता—

प्राप्ति की होती
बीकानेर

बनर तुम्हाय स्तर नहीं है जो जीवन का
है, बनर तुम्हायी कल्पना ऐसे नमूनों की
रचना नहीं कर सकती जो जीवन में मौजूद
न रहते हुए भी जैसे तुम्हारे के लिए
आवश्यक है तब तुम्हाय इतिहास किम वर्त
की दबा है और तुम्हारे पंजे की क्या
सार्वकता है ?

—पोर्श
(एक पाठक से)

मैं एक कमरा हूँ।

कमरा ? वही हूँ मैं एक कमरा हूँ जिसकी कहानी आज आप उनकी अपनी अपनी सुनें।

मझे पहले मैं अपनी स्थिति से आपको परिचित करा दूँ। स्थिति की जानकारी देते समय मैं कुछ बातें एकदम साफ-साफ नहीं कहूँगा क्योंकि ऐसा करते समय मुझे मेरे नाम के नामे साथी कमरे के मालिक का बख़्तार हुआ याद हो जाता है जो कला-भूंगा याकर भी अपने मालिक की सेवा-भुरखा करता है। फिर भला मैं अपने स्वामी के साथ ऐसी नहारी करीब कर सकता हूँ ? इन्हींलिए मैं आपको अपनी कहानी इस ढंग से सुनाऊँगा कि मेरी यह कहानी मुझ जैसे अनेकों कमरों की कहानी बन जायगी। व्यक्ति की कथा समूह की कथा बन जाय वही खोपट कथा-कथा है।

आप मुझसे यह प्रश्न भी कर बैठेंगे कि जब तुम अपने मालिक के प्रति विचित्र बख़्तार हो तब तुम अपनी यह कहानी क्यों सुनाने बैठे हो ? क्या इनसे तुम्हारे मालिक के उन पृष्ठों की सख़ाई ब्यक्त नहीं होयी जो अत्यन्त दर्दनाक थीर बरी है।

मैं कर इन्कार करता हूँ ? लेकिन जब कोई मालिक एकदम बेबख़ाई पर उतर जाये और उन कमरे को भुन जाये जो उनके कुरे दिनों का साथी रहा है तो बेचारा वह कमरा कहाँ तक बन जाये ?

आज मैं वह कमरा एक पोराम बन गया हूँ। अनाथ-अनाथ

लेकिन मैं अपनी अनुभूतियों को जिग्हा रसता हूँ और जो मेरे ऊपर के कमरों में होता है उसे मैं जान देकर सुनता हूँ और बंबेरे में दूबा हुआ बेगता भी हूँ।

ऊपर के आलीशान कमरे में इस हारी-यकी जिन्दगी के पाँच पहलू रहते हैं। पहलू भी एक दूसरे से सर्वथा अलग। पहलू से वेदा तारपर्यं सबकी सारी सम्मानों एवं एक बहू से है। बड़ा लड़क्य भित्तो बन बड़ी बेटी क्या मंसली बेटी रामा छोटी बेटी रेबा और बेटे की बहू इन्धिया।

मेरे घाये एक तम गली है। साडे तीन फीट चौड़ी। पक्की सड़क। बन्द मोरिया। यमी की पार करने के साथ ही बीस फीट चौड़ी सड़क के दोनों ओर दूकानें। मीड़। वहाँ यह सड़क में रोड से मिलती है वहाँ इस सड़क पर गाड़ियों के आबासमन को रोकने के लिए तीन अहलीर गाड़ बिये गये हैं जिससे इस सड़क से केवल साईकिल सवार ही निपड़क बेटोक टोक जा जा सकते हैं।

यह आज की स्थिति है। पर आज़ारी के पहले मैं मियाँ सदाकत बली की परबून की दूकान थी। मियाँ सदाकत बली एक बड़ा ही कारवाँ और बुदा इम्तान था। ब्याद देने लेकर कम तोलना उसकी आदत थी। बटिया मिर्चों को रंग कर एकदम लाल बना देना आटे में इमली के बीज पीस कर मिला देना कभी कभी से मुहम्मद से पेस न घाना बात बात पर मरीब गाहकों को नौ-बहिम की नाली देना ये कुर्बुन उसमें कूट कूट कर बरे पड़े थे। यही बजह थी कि गुहारबंद परबरबिकार ने उसे बेबीलाह रसा। जब पाकिस्तान बनने लडा तब इस मुमलभानी मोहस्ते में भी सलबनी मथी। लोभ घामने लये। सदाकत मियाँ अपने नाम से सदा उलटा ही काम करता था। जब इम्तान इम्तान को बादमखोर की तरह टका कर रहा था तब सदाकत मियाँ बचवा बटोरने में व्यस्त था। उनसे धीन के मय से — भापते हुए अपने पाहकों के घने से लीन की खंभीरें उगरी

बहुत परेशान होती है। हम ये सारी चीजें लेकर चलेंगे, वहाँ बहुत बड़ी तिजारात करेंगे और' ।

सदसद मड़मड़ा मड़ ।

मियाँ की साँस रुक गयी। मय की लहरें उसकी बाँसों में तिमट तिमट कर उठें फिर कर गयीं। उसने परबीन की ओर देखा। परबीन ने मक्का मदीना के पवित्र स्थानों की ओर देखकर पूछा है बिनती की ओर फिर अपने पति से बोली 'देखा आपके सामने क्या मतीबा ? अब जान से हाथ धोना पड़ेगा।' बाहर एक युवती की आवाज सुनायी पड़ी। आवाज काँप रही थी। 'दरवाजा खोलो चाचा मियाँ दरवाजा खोलो मुझे बचाओ खोलो न दरवाजा।'

'कौन है ? परबीन ने पूछा।

'मैं सुरैया अब्दुल्ला रम बाने की बेटाँ आपकी भतीजी' 'खोलो चाचा खोलो मुझे मेरा पीछा कर रहे हैं।'

परबीन दरवाजा खोलने के लिए जाने लगी। मियाँ ने उसको रोक दिया 'दरवाजा मत खोलो।'

परबीन ने कहा 'सुरैया है आपकी' ।

मिने कहा कि दरवाजा मत खोलो। दग बक्त कोई किसी का नहीं है। तभी कई मारी कदमों की आवाजें आकर बुझान के आगे दहली हो गयी। सुरैया की चीखें रोने में बन्त बनीं। उन चीखों के दर्द से परबीन भी रो पड़ी। उसने अपने बान बन्द कर लिये और वह दूट कर बैठ गयी।

सुरैया की चीखें सूनी पाटियों की तरह दूर बहुत दूर होकर गायी हो गयी पर उसकी बूँद परबीन के रिस के एक और कोमल बिजारों से टकराती रही।

'सदाकन मियाँ।' एक अपरिचित आवाज बाहर से आयी। सदाकन मियाँ का बेहूरा पतीने से भीत गया। मयमीन दृष्टि के उसने परबीन की ओर देखा। परबीन का बेहूरा भी पतीने से भीत

मुहानियों की शक्ति का धोती महबूबानों की मुहम्मद की निघानियों बंधुठियां धीनी । वह आदिम इस्लाम उन सुटेरों से कम नहीं था जो उस समय की भाग में हिन्दू मुसलमान को न देखकर केवल बोनठ को सुटेते थे ।

हिन्दुओं के हमले जारी थे ।

इसके पूर्व इस बनी में हिन्दू मुसलमान का कोई बेवभाव नहीं था । इस मुसलमानी मोहम्मद में कुछ हिन्दू भी थे पर मजाल है कि कोई भी किसी की बहिन-बेटी की मजाक कर सता कोई भ्राता पिछ्मी पीठ पाठा हुआ बुजर जाता । धरीक सोन का एक जाटक था नहीं । पर समय बदला । समय के साथ इन्सान के दिली-बिमास । जून ही घून । तो ही—एक दिन बराकत मिर्वा भी अपनी घोरबानी में नोट घोर सोना हुआ कर भावने की बेवटा करने लगे । मुझे अच्छी तरह याद है । उस समय मोमबत्ती से मेरा दिल बल रहा था बीर में मस्तिम रोषनी से उसकी पिनीनी मूरत देख रहा था । उसके सामने नोट पड़े थे बेबरात पड़े थे बीर वह उन्हें देखकर बार-बार बड़बड़ा रहा था "मैं हउने सारे रूपों से पाकिस्तान में बहुत बड़ी हुकान घोसू था ।

उसका बड़बड़ाना उसकी निक बीबी 'परबीन को पाननपन था समय रहा था । वह हुकानोइक की मूर्ति परबीन जिसका बिहरा इन हैरतबयिज घटनाओं को देखकर स्याह पड़ गया था जिसके अवाग जिस्म की सारी महहौबी पामब हो गई थी उसकी बी पीप बीबी बाबों में हुआपन था छा गया था जो हर बीक पर खुदा का पाक नाम लेती थी वह बीबी (माक करना यह मैं आपकी बठाना मूल गया था कि परबीन सराकत मिर्वा की तीसरी बीबी थी) अपने बीहर की इस हरकत पर बिस्मित हो गयी । कुछ बीटी आप नहीं बीठे-बीठे टिजारत ही करते रहेंगे या अपनी भाग लेकर धानेंगे ।

'आन है तो अहान है मैकपरस्त परआन की बिना बीसत के

बहुत परेशान होती है। हम में सारी बीसत लेकर चलेंगे, वहाँ बहुत बड़ी विप्लव करने की।

उत्सुक बड़बड़ा बड़ !

मियाँ की लीज बक बयी। मम की सहारे उसकी भाँटों में सिमट सिद्धकर उन्हें स्थिर कर बयी। उसने परबीन की ओर देखा। परबीन ने ममका ममीना के पवित्र बिजों की ओर देखकर लुबा से मिलती की ओर फिर अपने पति से बोली देखा आपके नामक का ममीना ? अब जान है हाथ थोता पड़ना। बाहर एक पुनती की आवाज सुनायी पड़ी। आवाज कीप रही थी। दरवाजा खोलो चाचा मियाँ दरवाजा खोलो मुझे बचावा खोलो म दरवाजा।

“कौन है ? परबीन ने पूछा।

“मैं सुरैया अम्बुस्ना रंन वाले की बेटी आपकी ममीजी” खोली चाचा खोलो मुझे मेरा पीछा कर रहे हैं।

परबीन दरवाजा खोलने के लिए भागे बड़ी। मियाँ ने उसको रोक दिया “दरवाजा मत खोलो।”

परबीन ने कहा “सुरैया है आपकी

मैंने कहा कि दरवाजा मत खोलो। हम बस कोई किसी का नहीं है। हमी कई मारी कब्रों की आवाजें आकर सुनाई के भागे दबडी हो गयीं। सुरैया की खोलें रोने में बस गयीं। उन बीसों के दर्द से परबीन भी रो पड़ी। उसने अपने हाथ बन्द कर मियाँ की ओर बह दूट कर बैठ गयी।

सुरैया की खोलें लुनी भाटियों की तरह दूर बहुत दूर हीकर आगे ही बयी पर उसकी मूँज परबीन के दिम के मेक कीर कोमल बिनाओं से टकराती रही।

तबकन मियाँ। एक अपरिचित आवाज बाहर से आयी। तबकन मियाँ का बेहरा पसीने से भीज गया। ममभीन दृष्टि से बसने परबीन की ओर देखा। परबीन का बेहरा भी पसीने से भीजा

हुआ था और अब तबीयत होकर उसके चेहरे पर नाच उठा था ।

श्री सदाशक्त मिर्चा दरवाजा खोलते ही वातावरण ?

सदाशक्त मिर्चा ने अपने कंठ स्वर से पूछा 'कीन है ?'

'मैं हूँ-काली पांडे ।

'काली पांडे ! बोल काली क्या चाहता है ?'

'पहले तुम दरवाजा खोलो ।

'नहीं पांडे अभी मैं दरवाजा नहीं खोल सकता ।' बड़ बरपन्त उठे और पहरी आत्मीयता से बोला 'मैं मजबूर हूँ तेरी माफी जान भी भीतर है । जानते हो न वह इन बून-घराबी से बहुत परेशानी है ।'

काली पांडे ने एक बंदी गाली भी और वह बोला 'भाभीजान के बच्चे दरवाजा खोल दे बर्ना मैं गुस्से ।

मिर्चा सदाशक्त ने दयनीयता से परेशान की ओर देखा । बरवीय मुठ की तरह थी ।

'दरवाजा खोल । एक ओर फरकियाड़ पर ममाका हुआ । मैं रो पड़ा । मेरा सारा बदन कांप उठा । यहाँ तक की मेरी रीढ़ की हड्डी घामे भीष भी कांप उठी ।

'दरवाजा खोल शीघ्रिए । दरबीय ने भीम से कहा इसी मैं हम सबकी खैर है ।

सदाशक्त ने एक बार उसकी ओर नफरत भरी नजर से देखा । उसकी आँखें आग की तरह बहक उठी । हँठों की चबाते हुए बोला 'गुम्हे मैं बून जानता हूँ । तुम उम्र भर मुझसे बफरत करती रही अब मुझसे ।

पर रर खूँ बड़ाक ।

दरवाजे टूट पड़े । मैंने अपनी आँखें बन्द करली । हृष्टपुष्ट काली मूषी और कुर्ता पहने हुये अपनी मूँ खों पर टाक दे रहा था । सदाशक्त मिर्चा बन्धी से अपनी खेरबानी मैं रूपए छुपाकर काली के

धर्मों में फिर कर विड़विड़ाने लगा काली पाधे तू हिम्नू है। तुझे
 यम की कसम यहि मुझे मारा तो मैं तुझे यह दुकान देता
 ।" और वह बड़ी बेर तक क्षमा माचना करता रहा ।

सदाकृत परबीन को भूल गया था । उसने अपनी सम्पूर्ण प्रार्थना
 परबीन का नाम तक नहीं लिया ।

मुझे अच्छी तरह याद है चायस चिड़िया की तरह अपने पंख
 मिटे परबीन मेरी बायोस-कोने में चुबकी थी । वह रो रही थी ।
 उसके सान पालों पर झामुओं का बास छा बिछ गया था ।

परबीन कहाँ है ? काली ने यत्र कर कहा ।

'बो बो' रही काली बो ।' उसने झंपते हुए परबीन की और
 उक्ति किया । परबीन अपने डरपोक और नीच पति पर चूमा से रो
 रही । काली उसकी और बढ़ा । परबीन के पास आया । उसका
 हाथ पकड़ा । चिड़िया खरमरा कर टूट कर बिलर मयी । काली ने
 इसे अपने भीने से लमाया भाये की बिम्बी मिट गयी । परबीन बिरोध
 कर रही थी । सदाकृत अपनी ऐतजानी को संभाल रहा था । काली
 ने एक हाटके में माओ-अम्दान में पत्नी परबीन को डीमा कर दिया ।
 उसे अपनी गोद में उठाया और अपने मापियों से कहा 'इस बूड़े को
 छोड़ देना ।' और वह सदाकृत के पास आकर गर्ज, पिनायत करेबा
 तो रेल में चढ़ते हुए को काट डालूँगा । उसने अपनी कमर से एक
 चमकती हुई कटार निकाली । डर से सदाकृत थोड पड़ा 'नहीं-नहीं ।
 मैं किसी से भी कुछ नहीं कहूँगा । तू इसे लेजा । मुझे छोड़ दे । यह
 दुकान भी तेरी' यह बात भी ऐरा !

काली परबीन का मुँह बाँध कर चला । मुझे ने मेरे सजे
 हुए रूप को गण कर दिया । मुझे एकाम गया बना दिया । मुझे
 अपनी दुईया का जरा भी रज नहीं हुआ पर मैं परबीन की उन बड़ी
 बड़ी बाँधों को बाज भी नहीं मूल तथा हूँ जिन में उन दिन भरती
 की गारीय गया तिरोहित होकर छपत-नुपत मचा रही थी । उसका

पीहूर सशकृत जपनी तौर मना रहा था। ओह ! इतना बितना धुंध गर्ने थीर जलील हो गया है।

परबीन कहाँ है ? मैं यह नहीं जानता क्योंकि काली पाण्डे को मैंने उस दिन के बाद कभी नहीं देखा पर सोड़ी ही देर में लनीके साथी एक बिरुध साध लेकर जाये। और रातगों की तरह अट्टाहास करके मेरी छाती पर उसे फेंक पड़े। वह अत-बितान साध क्रिय की भी मैं नहीं पहचान सका। सोचा जरूर था कि वह एक मुमलमान की साध है। नहीं-नहीं वह एक हिन्दू की साध है। नहीं-नहीं वह एक इतान की साध है जो अपने टपकते हुए गून के कतरों में जेपुनाहियों की हजारों सवारों लिए हुए मेरी छाती पर कई दिन सड़ना रहा। जपनी सड़ान और बरबू से मुझे कई दिनों तक तैज और परेसान करता रहा। उसकी हासत पर मुझे रोना आता था और उसकी बरबू पर मुँसलाहट।

अधामक एक दिन बुद्धसोय जाये और मुझे नहसा बुना दिया। उस साध को कूड़े की तरह उठकर बाहर फेंक जाये और मैं बुफाव की अवह एक कमरा हो गया।

मुझे आज भी याद है। उन दिनों इस बली में सड़ान रहती थी और जाये हुए हजारों घरबाणियों के बन्ध जगह-जगह हँप दिया करते थे। मुझ जब भंपिन पाखाने साफ करने जाती तब यहाँ बरबू का साभाण्य स्थापित हो जाता था। मीड़ ही मीड़। घोरभुस और रोना।

मेरा नया शालिक बहुत दिनों तक बूटनों में मु ह छुपाये रोता रहता था क्योंकि उसे भी काली पाण्डे की तरह किसी शैठान बुधे ने बरबाद कर दिया था। उसके दो छोटे भाई, उसकी पत्नियाँ और उसकी सब से बड़ी बेट्टी रोहणी को वहीं उसके सामने मीग के बाट पतार दिया था।

बीरे-बीरे सब मामाण्य ही बना।

एक वर्ष के भीतर यहाँ के घरबाणों को एकदम उनके पुरगार्थों

ही बसे । कठोर मेहनत ने बिस्मि की काया को ही बचत दिया ।

मेरे मासिक रामलास ने सन्धी का धँसा शुरू कर दिया । सन्धी मंडी में वे एक घाटे पर सन्धियाँ बेचा करते थे और उनका लड़का जो केवल मिठिल पास वा एक परचून की दुकान में लीकरी लग गया था । बड़ी गौर मंझनी बेटी स्कूल में पढ़ने जाने लगी थी और देखते-देखते रामलास की पत्नी फिर गर्भवती हो गई । रेखा जो इस समय १४ वर्ष की है मेरे नये मासिक की आखिरी सन्तान है ।

इस मसी की जाने वाली पत्नी में दो होटल कुल पये । उन दिनों इन होटलों में दो-बा टूटी हुई बेंचे लगी हुई थी पर भोज थाय खूब पीते थे । दो परचून की दुकानें तथा एक सन्धी की दुकान और कुल बयी थी ।

मेरा रंग रूप सब यह था । मेरे चारों ओर नूटन बरबू सीमन और बन्धेय सा रहता था । मसी की मासियों की दुर्बल्य से हवा सहन कर उस बरबू के अस्तित्व का ज्ञान हर बड़ी मुझे कराते रहती थी । कोई नया आदमी इतर जाना जाने जाता तो उस बरबू के मारे जाना नहीं जा सकता था । मेरा रंग बचत दिया गया क्योंकि मुझे हरा भोवा पहना दिया गया । हाथ का धिला हुआ हरा भोवा । सबाइत की मारी श्रुतियाँ मिटा की गयी सिर्फ बची रह गयी उलटे समय की दो बिना दरवाजों की अलमारियाँ जिन पर सब वस्त्र लटक रहे थे पुरानी साड़ी के ।

धीरे-धीरे समय गुजरता रहा है ।

साथ परिवार बनानों और दु.लों में झूठता हुआ भी रहा था कि एक दिन एक बिचवा आयी ।

वह सुबह थी । मैं भी यह पूर्ण रूप से भ्रम गया था कि कभी यहाँ एक सबाइत मियाँ भी रहा था और कभी मेरी गोद में एक हमीन मोछ ही प्युती कड़क-कड़क रोबो थी तथा उनका कायर बति घसे बु डों ने हवाने करके कहीं जाय गया था ।

बिबबा ने अपना परिचय ठेठ पंजाबी भाषा में दिया। तभी जा गया रामनाथ। उस बिबबा को देख कर वह भरपि स्वर बोला नबोभाभी तेरी बहू मूरत मुससे नहीं देखी जाती। क्या रंग रूप और मूरत भी तेरी। पीला रंग तेरे रंगमें मिल कर एक हो जाता था। मूढ़ गोवर्धी लपटी थी।

आपन्तुका कैपस रोटी रही। रामनाथ उनकी बिलनी प्रशंसा करता था उसका हृदय उठना ही उठना था। माथिर यह रोना पोना बन्द हो गया। बात अपने मतलब पर जा गयी।

आप मेरे बर्न के बीर हैं। मैं आप से एक बिलती करके धाबी हूँ।

‘बोल भाभी बील तू मुझे हुषम कर।

‘मेरी इन्धिरा को तू अपनी बहू बना ले। अब इन्धिरा बील की हो गयी है। उसकी चिन्ता मुझे रात को सोने नहीं देती। इसमें मैं रत्ती भी झूठ नहीं बोलती कि इन्धिरा को देखकर मेरा कलेजा बेचैन हो जाता है और धाँकों में उनकी तस्वीर ठिर जाती है।”

रामनाथ ने चिन्तातुर स्वर में कहा ‘हम सभी ही जिरभाये के बर्ना बर्नो अपना बतन छोड़ जाते बर्नो अपना घर छोड़ जाते। मेरा भाई इन्धिरा को धाबी की कितने पोर-पोर से तैयारियाँ कर रहा था। और, जो होता था वह हो गया अब अब तू चिन्ता-किफ छोड़ दे इन्धिरा को मैं अपनी बहू बनाऊँगा।

लड़के के बाप ने बिबबा को अपना कौल दिया और माँ ने दबी खदान में बिरोध किया “मुन रहे हो बिलोचन के पिताजी हूँ भी क्या और रामा का विवाह करना है।

‘हम कौन करने वाले हैं ? विवाह तो अपनाग करते। जा मेरी धाभी जा। तेरी बेटो मेरी बहू।

बस हो गयी बात और एक दिन इत पर मैं बहू जा गयी। मेरी दो धाँकों के बीच पाठीघन बाल दिया गया। बनीमत समझो कि

पाटीचन एक मोठे नीले रंग के कपड़े का ही था। पर ही यह पर्वी तीन वर्ष में ही फट गया और फटने के बाद बुजारा नहीं बन सका।

×

×

×

माप की तरह समय बढ़ा।

त्रिसोचन को उनकाह बना एक ही पञ्चवीस रुपये। पिता की उन्नत छान्त वर्ष के लयभय। माँ का स्वभाव बार किए हुए चाकू की तरह तेज।

यह रात है।

दिल्ली की ठिठुरती काँपती रात। ठीक बस बज रहे हैं। गली में सन्नाटा हो गया है। मेरे एक कोने में त्रिसोचन का बाप हुक्का बुकबुकाता जा रहा है साथ में खीसता भी। उसने अपना बसा बन्द कर दिया क्योंकि बठिया के रोप की बजह से वह बस चल फिर नहीं सकता है। माँ बहू से हर पक्षी जय लेते रहती है। उसका कहना है कि बहू के आते ही उसके पति का मारा व्यापार चौपट हो गया और वे बीमार पड़ गये वह असुम है पर बहू उसकी कोई परवाह नहीं करती है।

रुपा बी० ए० में पढ़ती है और रामा ने इसी वर्ष कालेज में दाखिला पाया है। वह बजिफ्त भी पाठी है क्योंकि वह हाई स्कूल में फर्स्ट क्लास है।

रुपा का रंग—रूप साधारण है। पेंहुवा रंग पर नाक-जवना अच्छे। जवानी की अपनी सुनवाई और आकर्षक होता है। वह बहुत अच्छे ढंग से रहती है और उसकी मामी उस पर आन देती है। छोटी बहिन देवा ने अभी तक हावर सेरेन्डरी पाल नहीं किया है।

रात की चौकरी का सिद्धांत सिमटने लगा है।

बिषवा ने अपना परिचय ठेक पंजाबी भाषा में दिया। तभी का पया रामनाथ। उस बिषवा को देख कर वह भरपि स्वर बोला क्योंभाभी ऐरी बहु तूरत मुझे बहीं देखी जाती। क्या रंय रूप और तूरत बी ऐरी। वीला रंय ऐरे रंयमें मिल कर एक हो जाता बा। कूब सोवधी समती थी।

बाबन्तुका नेमत रोती रही। रामनाथ उसकी भिन्नी प्रथंसा करता था उसका हृदय उठना ही फगता बा। बाबिदर यह रोना बोना बन्द ही गया। बात बनने मतलब बर आ गयी।

बाप मेरे बर्ने के बीर हूँ। मैं बाब से एक भिन्ती करने पायी हूँ।”

‘बोस भाभी बोस तू मुझे हुषम कर।

मेरी इन्धिरा को तू अपनी बहु बना मे। अब इन्धिरा बीस की हो गयी है। उसकी भिन्ता मुझे रात को डोने नहीं देती। इसमें मैं रली भी मूठ नहीं बोसती कि इन्धिरा को देखकर मेरा कपेबा बैचन हो जाता है और बाँधों में उनकी तस्वीर तिर जाती है।

रामनाथ ने भिन्तातुर स्वर में कहा ‘‘हम सभी ही निरबापे पं बर्ना बर्ने अपना बतल छोड़ बाठे क्यों अपना पर छोड़ बाठे। मेरा भाई इन्धिरा की धारी की कितने खोर-खोर से तैयारियाँ कर रहा बा। और बी होना बा बहु हो पया अब ‘अब तू भिन्ता-किंक छोड़ है इन्धिरा की मैं अपनी बहु बनाऊ बा।

तड़के के बाप ने बिषवा को अपना कौन दिया और नाँ मे बची अबान में विरोध किया ‘‘मुन रहे हो भिन्नोपन के पिताजी हमें भी रूपा और रामा का विवाह करना है।

‘हम कौन करने वाले हूँ ? विवाह तो अबान करेंगे। बा मेरी भाभी बा। ऐरी बेटी मेरी बहु।

बस हो गयी बात और एक दिन इस बर में बहु बा गयी। मेरी दो बाँधों के बीच पार्टीकन दास दिया पया। पनीमत समझो कि

पाटीयन एक मोटे मोले रंग के कपड़े का ही था। पर हाँ यह परां तीन बरस में ही फट गया और फटने के बाद बुबारा नहीं बन सका।

×

×

×

माप की तरह समय बढ़ा।

त्रिलोचन को तनकाह बाद एक सी पक्कीस रुपये। पिता की उम्र साठ बरस के समय। माँ का स्वभाव पार किए हुए बाकू की तरह ठेक।

यह रात है।

बिहारी की ठिठरती कापती रात। ठीक बस बस रहे हैं। पत्नी में सगनाय हो गया है। मेरे एक कोने में त्रिलोचन का बाप हुक्का गुड़मुड़ाठा जा रहा है साथ में खीसता भी। उसने अपना बंधा बंध कर दिया क्योंकि बठिया के रोग की बखर से वह अब बस-फिर नहीं सकता है। माँ बहू से हार बढ़ी रस घेड़े रहती है। उसका कहना है कि बहू के बापे ही जग के पति का सारा ब्यापार जीपट हो गया और वे बीमार पड़ पड़े बहू अशुभ है पर बहू उसकी कोई परवाह नहीं करती है।

रुपा बी० ए० में पढ़ती है और रामा ने इती बरस पानेव में दाखिला पाया है। वह बकिच्य भी पाती है क्योंकि वह हाई स्कूल में फर्स्ट क्रायी है।

रुपा का रंग—रूप साधारण है। बंगला गद पर गुरुकुल बन्दे। पदानी की बपनी ललाई और बन्दे हुए है। रू बस बन्दे हय से रहती है और रुपा गुरुकुल पर गुरुकुल है। पाटी बहिन रेवा ने बनी एक हलक के बन्दे गुरुकुल है। रात की पारनी का गुरुकुल गुरुकुल है।

मेरी मोद में सभी प्राणी हैं।

एक कोने में इन्दिरा उनके बाग ही वाली बिल्लारा क्योंकि त्रिलोचन सभी कोने की एक सम्मिलित मैत्र पर बुबाग के साथे-बही ठीक कर रहा है। रामा अपने कोर्न की कोर्न पुस्तक पढ़ी रही है और क्या अपने बहुत परिचित तदय साहित्यकार स्वरूप का एक प्रपञ्चात् पढ़ रही है। स्वरूप की बीस्ती रूप और रामा दोनों से है। यहमा मां कड़क पढ़ी "बहु जरा समुर को दो घूट बुप तो पिला दे।

इन्दिरा पूर्ववत् सोनी रही।

मां फिर बिस्सायी क्या काम में कई बसा कर छोदी ही ? मैं जो कहती हूँ वह सुनायी नहीं पड़ना है क्या।

इन्दिरा न जसा कर उठी। पहले अपनी रवाई बुर से फेंकी और वाली क दिरने जैसी आकाश में जंकार करती हुई वह बोली बोड़ी देर पहले पूछा तो बाप बोली कि सभी नहीं पीयेगे और जैसे ही मेरी आज लयी बैसे ही बाचिमाना गुरु कर दिया। बड़ी भर भी आराम नहीं। जैसे कर्मजनों के हाथों मां ने मुझे बाँधा है। न नामे का मुझ और न सोने का मजा।

इस हाकप ने मुझ में मजगला कर दी।

त्रिलोचन के हाथ की कलम बरक गयी। क्या और रामा ने सभी की मोर देला। देवा गर्दटें भर रही थी। बाप का हुक्का पुड़पुड़ाना बन्द हो गया।

'देला त्रिलोचन ? अपनी बाँसों से देल है कि ठेरी बहु मेरे साथ बैसा समूक कटनी है ? दीरनी की तरह मुझ पर लपटती है काट जाने को है। तेरे नामने मैंने इसे मिठें तेरे बाप को बुब पिलाने के लिए कहा था ? मां काँपती हुई त्रिलोचन के नाम जा बयी। पहले उसकी मैत्र पर और का बाप माटा। मैत्र अपनी बर्बर-बुर्बल दोनों को लेकर काँप उठी।

बिसोचन ने बड़ी तटस्थता से अपनी माँ और बहु को देखा । बाद में वह इन्दिरा से बोला इन्दिरा तुम्हें माँ के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए । बाकिर वह हम सबकी माँ है ।”

“ओ माँ अपना स्वभाव रख सके उसके साथ बर्षा व्यवहार कीन कितने दिन तक करेया ? इन्दिरा की बातें फलत मयी ।

माँ की बातों के आगे मुझे की बुझा मयी । उसने अपनी बातों को दोहरा और विचमिचा कर कहा “देखते अपनी हीर की बुझान को कैसी कैसी सी बन रही है ? मुन रे बिसोचन अपनी हम बिसोचन को ममता दे बर्ना मैं कभी जमुना में डूब मरूँगी ।

बिसोचन ने इन्दिरा को आज्ञा मरेस्वर में कहा ‘तू चुप रह इन्दिरा । माँ जो कुछ भी कह दे उसे चुप कर दिया कर, हमका कहा मुना चुप मत माना कर ।”

‘मेरे मेरे पुतर ऐसे माप मरे कही ? यदि मैं ही कर्मवती निरवामी नहीं होती तो क्यों मुमा पाकिस्तान बनना ? क्यों मैं अपनी इरी-मरी मुहस्वी को छोड़ कर जाती ? क्यों मेरे घर ऐसी मुँह-छा और निपुनी बहु जाती ? काख को तो लोम नहीं जाती पर जबान क मारे दरबाने सात रहे हैं । हाय मेरे माग कब मेरे लोक जहान में दारी की आवाज सुँवयी कब मेरे बँदना में ‘काका’ का रोना सुँवेया ।

इन्दिरा जिस तरह तगाड़ा बरता है उन तरह ठंडाक से बोली “दरी दरी कीपण्या साग जी पहले बँदना बासा घर तो लो ।”

‘चुप रह कर बचबुझान ! यह ताना मुझे नहीं अपने रंझा को दे । मेरे तो मात-मात बँदना बासा घर या और एक नहीं दस बीस बनने-कूदने बाल से । मुने रोप मत दे बहू जिस दिन मैं अपने मितारों का जड़ा बोड़ना मँड कर जायो थी छडी दिन से छप घर नव बिधि और दस विधि काम करने सयी हो दुमझी ? यकीन न हो

तो अपने इस साठ साल के ससुर से नुसल ले । क्यों रेवा के पिता जी बोझते क्यों नहीं ?

राजसाल ने उनकी और कुछ भी ध्यान नहीं दिया । जल्दी-जल्दी हुक्का बुड़बुड़ाने लगा ।

इन्दिरा ने तुमझुंकर अभाव दिया 'यह इन पाँवों को क्या हो गया मेरी मास पाँव तो बही हैं, क्यों नहीं यहाँ पर बपनों की बारिस होती ?

बिलोचन ने जोर से मेज पर पाप मारी । मेज हिल गयी । मैं भी डर गया ।

बिलोचन मुँह तलपर संभिक की तरह उठा । पंर कर बोला 'तुम दोनों चुप नहीं रह सकती । कम-से-कम एक को तो शांत रहना चाहिए ।'

रूपा ने माँ को समझाया 'माँ तुमने जब इस तरह का गुराहा नहीं करना चाहिए ।'

रामा सटपट बाबी और रूपा की बात को काटने हुए बोली 'तू माँ को क्यों कहती है ? माँ को क्यों नहीं समझाती ? माँ से इस तरह बवाल मझाते हुए इसे धर्म नहीं आती ।'

इन्दिरा ने उसे आन्वेष नेत्रों से देखा । रामा ने इसकी कोई परवाह नहीं की । माँ और इन्दिरा दोनों एक साथ बड़बड़ा चलीं । रो नहीं । बीरे-बीरे सोंठि छु मयी । जो काम होमा या बह ही गया । बुड़ा बुक पीकर सो गया ।

बीरे-बीरे सब सो गये । बिलोचन ने एक बार बड़ी सावधानी से सबकी देखा । अपनी बहिनों को बन्द किया । बीरे-बीरे खोर की तरह अपनी पत्नी के पात आमा । उसे सिसोड़ा । इन्दिरा ने तड़प कर कहा 'क्या है ?

'बूढ़ ।' बसुने अपनी मुँह पर सँपुसी रखी । इन्दिरा करबट बदल कर सो गयी । बिलोचन की आँखों में विदग्धता और बगुण्डियों

का साथ-साथ लहरा उठा । उसने एक बार उड़ी-उड़ी सी नजर अपनी सोयी हुई बुनिया पर डाली और वह अपने दिम में प्यासों की नासों बाहें लेकर झबझरा सा सो गया ।

×

×

×

सुबह ।

स्टोव जल रहा था । एक दरवाजे से प्रकाश सहमा-सहमा सा आ रहा था । बाइए, मैं अपना बोज़ा और परिचय दे दूँ । दरवाजे पर एक टाट का पर्दा लगा हुआ है । ऊपर की पटरियों पर बर्तन सज हुए हैं । बेतरतीबी से सामान पका है । एक ओर चूल्हा है और दूसरी ओर खाने का सामान ।

स्टोव पर पानी उबल रहा है । लन्-लन् की हलकी ध्वनि आ रही है । दूध और चाय स्टोव के पास पड़े हैं । इन्दिरा ने लपक कर बीनी के पीपे को समझा । वह एक बम खासी था उसने बिलोचन से कहा "भाप जरा रामा से कहें कि वह माता से सेर भर बीनी ला दे ।"

"तुम नहीं कह सकती ।

"नहीं ।

क्यों ?

"कह दिया न मेरा मन ठीक नहीं है । गुस्से में फिर ऊपजतूल निकल गया तो यह धारा भर मुझे मोचने को शौड़ेगा ।"

"क्या बत्रीब औरत हो ? टैबी बात किये बिना रह ही नहीं सकती । बरे जरा अपने दिमाग को ठंडा रखा कर ।

उसने बिलोचन की ओर जतली दृष्टि से देखा और फिर अपने काम में व्यस्त हो गयी ।

निसोचन में रामा से कहा 'रामा ! जा ताला से जखी से खेर मर बीनी से जा ।'

'तामी भैया ।' कहकर रामा बिना बुपट्टे ही ताला के बूकान की खोर चम पड़ी । बूकान मुचकड़ पर ही थी । ताला के बचन बेटे केदार ने रामा के जलजल छटोनों को सीधी नजर से देखा । रामा सज्जा गयी । जतने अपने हाथों को इकट्ठा कर लिया । तभी जा पये आचार्य भारती थी । एक आर्य समाजी स्कूल में हिन्दी के अध्यापक से और हिन्दी कासीन कबिताए बजाते थे । जगहोंने क्यों ही रामा की देखा त्यों ही नाक भी सिकोड़ कर बोले 'हरे-हरे, क्या जमावा माया है । बेटा इमको बखी से सीरा दे ।'

रामा सीरा सेकर भाम आयी । जतने तुना, 'बधा कड़ाके की छत्र पड़ रही है पर खोकरियां बिना बोडे ही आवेंगी ।

चाय पीने के बाद खाना पकाना होता था पर आज इम्बिरा का मन खराब था । वह चाय पीती-पीती सोच रही थी—मैं कैसी निरमात्री हूँ । माँ ने मुझे बाँस पीया की तरह इस कोठरी में बाल दिया । न वहाँ काम की कड़ है न वहाँ बहसानों का सिहाय । दिन-भर इनके लिए बरे-सपे पर गतीया तीखे बोसों से मिले । हे मुक साहिन मुझे इस नरक में क्यों बाला ? वह कु भीपाक है आम ही आम सब खोर चाय । सास मुझे निपुटी कहती है पर यहाँ कोई औरत अपनी कोल कोल भी कैसे सक्ती है ? न सोने की बबह, न हंसने का मीका । कैसे छातिमा दून से मरे और कैसे भाँपन में लड़का ठमके । जतका मन एकदम खराब ही गया । जतकी इच्छा हुई कि वह कै करदे । जो बिचार जतके पस्तिष्क में चक्कर लगा रहे हैं उन्हें वह कै हाथ जवम दे । वह बठी । अपनी बान्तरिक बठियों की आवा से वह दरवाजे के बीच बैठकर जवकने लयी ।

रुपा ने बीठ के पीछे हाथ खेरते हुए पूछा 'क्या हुआ भात्री ?'
बी भिजवा रहा है ।

क्यों ?

“पता नहीं।”

रामा ने नाक भी निकोड़ा जैसे यह सब सच नहीं नाटक रिहर्सल किया हुआ नाटक। तभी कृपा ने पुकारा रामा जा कर पानबाल से एक पीपरमैट का पान ले जा।”

रामा इस बार सिद्धांत छोड़ कर पयी। उसे सहसा भावार्थ की मार आ गये। पान आ गया। पान खाकर इन्द्रिय छोड़ कर सोयी। सोते-सीते उसने मोचा कि आज मैं दिन भर कोई काम नहीं करूँगी। मुझे से जगदूने का कप बच मिलेगा। सारी बकक मूल जायेगी रोटियाँ सेकते-सेकते। फिर जैसे वह कुस से भर भर आयी कोई गुन नहीं जिस बीरठ को पति के नंब सोने का मुद्य न हो उसकी कौख जैसे गुन तकनी है! उसके मन जामिन में एक नई पिपु के पाँव बग्ग आये। पाँव टमक-टमक कर चलने लगे। वह ममता से भीव गयी। यने में घुटती हुई स्लाई भांगू बन कर बरस पड़ी। बिचार सब भी बनबरत रूप में चल रहे थे “कोई स्नेह की माव मूमि पर उसे प्यार नहीं करता वह दासी की तरह दिन भर काम करती है, कोई भी उसके काम की तारीफ नहीं करता कोई भी उसकी पीठ को नहीं बपबपाता सभी उसे छताते हैं, तड़पाते हैं।” बस एक रूपा उसके मर्म को छूती है, उसके दिन की बात समझती है। वह विह्वल हो गयी।

सास ने ऊँचे स्वर में पूछा ‘जाज छाना नहीं पड़ेया गया ? इगिरा ने कोई बचर नहीं दिया।

माँ तप-स्वर में बोली “साहबजारी को कत छत छोड़ा मा कह गया दिया माताँ कोई बड़ा भारी जुहम कर दिया। मैं निरमापी ऐसी हूँ कि जबान पर काबू नहीं रख सकती।

रूपा इन्द्रिय के बास पयी। रूपा सदा आपस में समझौटा करताया करती थी। उसके जीवन की भीति थी कि जगदूने को बकाने

की बजाय उसे शांत कर दिया था। आकाश को घूमे वाली बीनों
शास्ताओं को भीड़ा-भोड़ा सुना है तो उनमें मिला हो सकता है।

इन्दिरा ने उगकी ओर आँसू भरी आँखों से देखा। बीसे रोने
से कुछ साह हो गयी थी। बरीनियों के मुलाबम बाल नीव पड़े थे।
बेहरा मूनी पाटियो की तरह पराम था।

‘क्या बाल है भाभी?’

‘जी ठीक नहीं है।’

‘कोई बात नहीं। बाला मैं पका लेती हूँ।’ क्या ने बुरहा
संभाला।

उनके बुरहा संभालने के साथ ही रामा की आँखों में एक अजीब
सी आग जमकी और वह माँ से बोली ‘माँ मैं आज यहाँ खाना नहीं
खाऊँगी मुझे मेरी महेमी के यहाँ खाना है।’ और वह क्या के पास
आकर बोली ‘क्या मैं आज यहाँ आऊँगी मेरे लिए खाना यहाँ
बनाना।’

क्या उगकी आलाकी समझ पयो। अब वह रामा बनाने की
बोचना करती है तब वह अपने साथ रामा को भी जुटा लेती है पर
आज रामा ने बड़ी तफाई से फिलारा कर लिया। वह जल्दी हाथ
मुँह धोकर बाहर निकल गयी।

वह कहाँ गयी? स्वल्प के पास। स्वल्प के पास एक मेसक।
स्वल्प मेसक पेठा करता है।

देवारी क्या १२ बजे तक खाना पकाती रही। इन्दिरा ने उस
दिन खाना नहीं खाया। क्या कलेज भी सेठ पहुँची।

×

×

×

इन्दिरा अपने मँके बली बनीए-क दिन के लिए। पर ये रह

नबी भी क्या रामा रेवा और माँ-बाप । हालाँकि पात्र इतवार
 हैं पर मिलोवन का मासिक ताला बीन ब्यास उठे बोड़ी देर के लिए
 बचने घर बुलाकर ब्लेक का एग्जैस्टमेंट करता है । माँ बार-
 बार अपने पति को बाँवनी बौर के शीघ्र यंत्र मुकद्दारे के बर्खान करने
 का अनुरोध कर रही थी पर बाप कह रहा था कि पैसों के बिना
 नहीं कैसे बाया जा सकता है ?

तमी क्या ने तीन रुपय निकालकर पिता जी को दिये और रेवा
 को आज्ञा दी कि वह इनके साथ जाती जाय । अब रह पयी बी—
 क्या और रामा ।

तमी जा गया स्वरूप ।

स्वरूप को देखते ही रामा तित छठी । क्या ने यमीर मुझ
 बनाये हुए उठे ममस्कार किया ।

“कहो कैसे जाना हुआ ? क्या ने बीटने के माप ही कहा
 मैं तो धागे बँटे के बाद बाहर जा रही हूँ ।”

“यूँ ही जा गया । इधर जा रहा था । सो पात्र खात्रो फन्कारे
 के मत पात्र ?” क्या ने मुस्काकर पूछा ।

“बाप तो तुम भी पीता सफ़टी हो ?”

क्या बाप का कहने के लिए बाहर पयी । बाहर उठे पड़ोसी
 घरघर का लड़का बँटा मिस पया । उसने बँटा को कहा 'जा
 होटल वाले से कहना कि तीन बाब मिलोवन बाबू के घर पहुँचा
 है ।'

इसी बीच स्वरूप ने अपनी बासना भरी बाँवों को रामा पर
 पमा कर कहा 'पात्र उसके लिए नहीं ठेरे लिए जाया हूँ
 बाबोपी न ?

हूँ । पर क्या के जाने के बाद ठेरे हाथ है ।” उसने अपनी बाँवों
 को मचाया । तमी क्या ने बापस टर्न लिया । वह लपक कर

में कपड़े धोने लगी। अचानक हुआ कि कृपा ने स्वरूप की जगह होय
 शरकत को नहीं देना जो संभवतः बड़ा हुआमा मचा मकती थी। मैं
 भी बोड़ा सा डीवाडोस हो गया। स्वरूप ने सबक कर रामा क फूटते
 हुए एक कलस को दबा दिया।”

कृपा ने विह्वल कर कहा “चाय भी आप के लिए आ रही है।
 और कोई हुनम ?”

हुनम नहीं। मुझे चाय मिल आव बहुत है। पात्र मैंने बहुत
 ही कम कर दिये हैं। यह सब आपके लगातार रोकने का तरीका
 है। इनके लिए मैं आप का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

रामा बड़ने का बहाना करने लगी। पुस्तक के बीच उ गुली रखकर
 उसे बाहर की ओर बोली “कौन सी नई पुस्तक खप रही है आपकी ?

‘तीन नाटक खप रहे हैं। तीनों ऐतिहासिक क्रम में अपने के
 प्वाइंट ऑफ व्यू से मिले हैं।”

‘तभी आनकल बाठ पीत में नाटकीयता आ रही है।” कृपा ने
 हसकी चुटकी ली।

स्वभाविक है।”

चाय आ गयी। सभी ने चाय पी। कृपा पीना देने के लिए
 अपना संदूक धोलने लगी। तभी स्वरूप ने अपने हाथ की पुस्तक मेज
 के नीचे रख कर रामा की ओर से संकेत किया कि मैं जानत आकर
 ने जाऊँ या और यह प्रकट में उठता हुआ बोला, “अच्छा कृपा थी
 मैं जा रहा हूँ। और तु रामा इस बार भी फर्स्ट जाना।”

‘अच्छा जानकी भीया। उसने बटबट पल से मचल कर कहा।
 स्वरूप बाहर चलता बना।

कृपा भी कपड़े बदल कर लगी गयी।

बकेली रामा और मैं। मैंने भी रामा को पीर से देखा। रामा
 बार-बार अपने जानकी एक छोटे से दर्जन में उतारने की चेष्टा कर

जीवन था रहा था ।

नदी के बहाव में बुमान पैदा हो रहे थे । रामा ने दरवाजा उड़का । अपने कुर्से को खोला और हूँसरा पहुँचा । तभी मुझे उसकी चालाकी याद आयी ।

जब रुपा बाहर आते लपकी तब रामा ने बड़े भोलेपन से कहा "रुपा स्वरूप भैया अपनी यह पुस्तक मूल गये । उसने पुस्तक हाथ में उठासी ।

"मूल गये तो लेने भी चापेंगे । 'तू कमरे में ही रहना । इसे गुला छोड़कर मत जाना समझी ।"

‘ठीक है ।

यह कितनी चतुर हो गई है । सब जीवन के अमान प्राणी को सब कुछ छोड़ा देते हैं ।

तभी स्वरूप ने किनाड़ा खोले ।

रामा ने मधमते हुए उसका स्वागत किया । "उसकी आँखों में प्रथम जीवन का अलङ्करण था उसके अक्षरों पर नटसट भरी मुस्मान थी । उनके वाग्य माटी हुईं बोलो 'पुस्तक लेने चापें हो ?"

‘जी ।"

बाजकत गुम्हारी यादशासन बट्ट कमजोर हो गयी है ।

‘गुम्हारे कारण ।"

"उमने उसे इन भीषमा से देना घोषा बह पुष रहो हो कि क्यों ?

"क्योंकि गुम्हारी मूरत देतने के बाद मुम कुछ भी क्यात नहीं रहता ।"

स्वरूप ने र्थधीर मुत्रा बनाली ।

"तुम क्या सोचने लने ?"

"मैं सोच रहा था कि इत प्यार का अमान बना होना ? जो हम कर रहे हैं वह बालिर क्या है ?"

यह प्यार है।

‘मैं भी माबता हूँ पर यह विधेया।

‘बकर विधेया। तुम में हिम्मत होनी चाहिए।

‘मुझे किगका भय है।’

अपने बरपासों का।

‘नहीं। मैं उनसे घाने के लिए रोटियाँ बोक्रे ही माँबता हूँ।

रामा ! वही स्पदिन अपने विचारों के अनुकूल अपनी इच्छा को पूरा कर सकता है जो आविक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो।

‘फिर मैं भी हिम्मत रखूँगी’ उसने बात को धरम करके पूछा
‘अपने हाथ से पात्र बना कर पिमाऊ।

पिसाबो।

मैं कमरा इनक बाद देखता रहा कि स्वकप मुझ से बाहर जाने तक बहुत संमीर बना रहा। उसने कोई भी धिष्यती इरकत नहीं की। उसने खंचा रामा को लूधा तक नहीं। वह सोचता रहा संमीर जोर बना सोचता रहा।

‘तुम्हें क्या हो गया?’ रामा ने पूछा।

‘कुछ नहीं। सोचा रहा हूँ कि क्या को जब यह मामूम होया कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ उस दिन उठे बड़ा दुःख होया। मैं दिन प्रतिदिन गिर रहा हूँ क्योंकि जितने भी स्नेह-अम्बन-नमता और विश्वास के आकार हैं जम्हें मैं माई-बहिन ने स्नेह में साथ रहा हूँ। ‘रामा ! कत तुम बकायक मेरे घर पहुँची तो मैं हृषप्रम रह बसा वा। मुझे अपने में भी यह क्यात नहीं था कि हमारे मीन संकेत प्रेम धामन्त्रकों का यह प्रभाव और यह प्रतिक्रिया होंगी। उन भावुकता धरे पत्तों का यह प्रतिक्रम प्रतिबान मिलेया।

रामा बीच में ही बोध बड़ी ‘मैं तुम्हें सच्चे दिल से चाहती हूँ। ईश्वर ने चाहा तो मैं तुम्हारी ही रहूँगी। जोको इन किभूत को बातों को भी यह पात्र मेरे हाथ से लावों।

गहरी ।

फिर इस पल को गुम अपने हाथ से मुझे दिखाओ ।”
स्वरूप में बिलकुल निरस्तसाह से उसे पाग दिखाया । वह
अपराधी की तरह सर्वज्ञ मुकाफर बाहर निकला । मैंने सोचा कि
इन्सान की आत्मा की गहृण्डों में छोपी अन्धकारों जब जागती
है तब वह अपने आप पर सागजें बरसाता है ।

X

X

X

बान पर क मन्सों की एक गमा थी । सभी मन्स्य छोटी रेवा
को छोड़ कर उपस्थित थे ।

मामसा बड़ा गम्भीर था ।

सासा धीरे धुप बान का एक-एक माह का बकाया पड़
पया था और दूगण महीना भी खत्म होने वाला था । पन माह
निमोचन की सारी तमसा और पचाम बपये अधिक कपड़ों म पच ही
पये थे । इस माह उसे निर्क पचहत्तर बपये हो गिन्ने । क्यादा वह
सांग नहीं मरगा । इस पर सभी तरु उग पर दुकान का डेढ मी-मी
की कर्म है ही ।

पान सासा ने सोदा देने से इनकार कर दिया फलस्वरूप बहुत
देर तक तथा बुन्दे पर जसठा रहा । इन्दिरा मन्डी बनाकर हाप पर
हाप रगे बैठी रही । किसी ने एक रपया भी निकाम कर नहीं दिया
कि जिससे मरुद बाटा लाया जा सके ।

माम न तिठ्ठी बैठी उमा की कहा जाकर बाटा क्यों नहीं
माजें ? बैठी-बैठी मन्सियां पार रगे हैं ।”

उमा अपनी पुन्क को देर पर पटक कर बुध चिड हुए स्वर
में बोनी ‘मरी मेरी मां मैं ठेरे बिना नहीं ही सासा के नहीं करी

की उसने मैदा मुह साफाते हुए कहा कि पहले बकामा ला बाब में लोवा ले। अब तू ही बता कि मैं मोटा कैसे लाऊ ?

माँ के झुर्रियोंदार चेहरे पर एक कम्पन सा आया। झुर्रियाँ और गहरी हो गयी। बोली 'अपनी भाभी से एक रुपया ले ले त्रिलोचन आने वाला है कम से कम तुम लोग उसका ठो प्यास रखा करो।

इन्दिरा तुमक पड़ी। अपने सामने पड़ी कटोरी को क्षण से पटकती हुई बोली 'मैं कहीं से रुपया दू ? तेरा पूरा मुझे मुठ्ठी भर भरकर मुका छुपा कर प्यो देता है न ? अरी मैं तो ऐसी निरन्धरी हूँ कि इस घर में आने के बाद इस का नया मोट किस रस का है, नहीं देखा। गये रीसे जकर एकाध बार देखे हैं। हूँ !"

सम्भाटा।

मैं तो देखा इन्दिरा बहु सात टमाटर की तरह हो बनी है। मुझे मैं बह धीरे सुम्बर ती नहीं समती थी पर उसका चेहरा एक गये डंग का बजीब प्रभाव छोड़ता था। उसके होंठ मुझे मैं लम्बे होकर फँसते थे और हिसते थे।

माँ ने रामा से कहा, ठेरे पास ।"

हालांकि उसके पास दो रुपए बचामे हुए थे पर वह जानती थी कि देने के बाद उसे बापप नहीं मिल सकते इसलिए वह बारम्बार का भाव प्रकट करते हुए बोली 'मेरे पास छूटी कोड़ी भी नहीं है। महीने के छुट में पाँच रुपए मिलते हैं, वह कभी के खर्च हो गये।

बीरे-बीरे लकड़ियाँ बुझने लगीं। बुझती लकड़ियों के धुएँ ने मुझमें बुट्टा पैदा कर दी। मेरा हम बुट्टे लगा। मला ही उस इन्दिरा बहु का कि उसने बाप को एक बस ठंडा कर दिया। बीरे बीरे बुझी जाता गया। सबकी आँकड़ियाँ स्पष्ट दिखने लगीं।

रामा बापप पहले में तन्मय ही बनी। इन्दिरा बुट्टों को खड़ा करते हाथों में दर्दग की छुपाकर बैठ गयी। कमी-कमी वह अपना

छुपा मुँह बल भर के लिए छठाकर यह बताने का प्रयास करती कि वह परचाठाप की बाप में जल रही है।

माँ बूत थी। उसकी बाँझों में बप्पाह सूतापन समक रहा था। बाप निरपेक्ष घोड़ी की तरह अपना हुक्का पुकपुका रहा था।

मूरज डूब गया। बंभेरा बुएँ के साम दिखकर यमुना के जल बार बस उपनमरों से उनके मुँह जल-प्रवाह पर से हाठा हुआ मारी दिल्ली को स्पाह कर गया।

रुपा गई सेगिडल पहनकर आई थी। उसकी छट-छट ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। हाथ की पुस्तकों को बगल में दबाकर वह चढ़ी। चढ़ते समय वह एक लम्बा साँस मिया करती थी। कारपोरेटन ने सिड़ीमाँ बनाने का हुकम नहीं दिया था इसलिए एक सक्की का बप्पा भीचे रखा हुआ था जो अनुनाठ से बहुत भीचे था और चढ़ने में एक विशेष एजित का प्रयोग करना पड़ता था।

रामा ने बीसे ही सेगिडल को देखा, बीसे ही कमस की तरह लिख कर पूछा "यह सेगिडल कहीं से लाई?"

खरीदकर।

सेगिडल कैसे? जगने हूठान् पूछा।

रुपा को इस तरह के प्रश्न करना प्यारा नहीं हुआ पर वह चुप रही। उसने रामा के चेहरे को पढ़ते हुए कहा "फिजूस का बीसता घोमा नहीं देता, मैंने बीसा से पन्द्रह रुपए उधार लिए थे बीसा मेरी बर्ष बहिन है और वह बहुत ही अच्छे खाँसे-मीसे घर की है समझो।"

माँ ने बीच में ही कहा "सेगिडल किसने की है?"

'माँसे ठेरह रुपए की।'

"फिर तू जल्दी से रामा को एक रुपया दे ताकि वह भाग कर बाटा ने जाये आज लाना ने मोश देने ने माफ इनकार कर दिया है।" उसकी छाँवों में जलता प्रथम था।

रूपा ने ही रूप दिखे । राजा बाटा ने आयी । बुरहा पुन बेतन हो गया । मपट्टे छे के पिछेने श्रीमस भाव को स्पष्ट करने लयी । रौटिया इन्दिरा बनमने भाव से सँझी लयी ।

बाज नाथम का बघेरा था । लमी आरपी जिन्दा से पर मुहों की तरह । मुझे हँसी का पई कि इन्साज मुर्दा बन कर भी जीता है । यह बाज की अस्वस्त पीड़ित विहम्बना है ।

इतनी संकटकामीय स्थिति में भी जहूँनि लामा लाबा । भुन से परिणाम संसार में कोई बहो है । बड़ी प्रबंध-प्रहार है लनकी भाव । किमी भी तरह जसको ठंडा करना ही पड़ता है ।

लबने अपने पेट की बाज को बुला लिया ।

लमी तिलोचन घाया । रात के बाठ बजे से और लमी में होटल में बन रहे रेडियो के बीत की कोई चढ़ती हुई भुन पर आती थी । सामन यह किती डिस्म का कोई उत्तेजक पीत था ।

तिलोचन बहुत जरात था । उसकी बर्म पेट पीछे से कट गयी थी । रूपा ने उन कटी पेन्ट को देखा तो अचरज से वह पूछ बैठी ' यह पेन्ट पीछे से कैसे फट गयी ?'

'जब तकबीर कटी हो लन ऐना ही होठा है रूपा ।' उसने व्यथापूरित निश्वास छोड़ा ।

'लेकिन कटी कैसे ?'

रिश्ता से । उगर रहा था लमी पीछे से एक लोहे की बत्ती से फट गयी ।

रूपा ने रिश्ता और उसके मामिक को कोसना शुरू किया । देवा लामा काकर अपनी सहेली बस्ता की बहिन सुरिन्द्र के घर लबने लमी लयी ।

तिलोचन भाव पछाने में निबटने गया । वहाँ से आकर वह बेमन रौटिया लोड़ने लया । लामे की संझा देना उन किम्पा को व्यर्थ ही है ।

इसके बाद बाप की यन्त्रीर सजा का आरम्भ होता है ।

निसीचन ने पुछा "माता ने क्या कहा ?"

रामा ने अपनी हाथ की पुस्तक पर ध्यान जमा कर भाई पर एक सरसरी दृष्टि से फेंक कर कहा "उमने माफ-याफ माफजों में कह दिया कि पहले का बकाया दे दो और नया चीरा लेखो ।"

निसीचन भापे से बाहर हो गया । माता को कई नई पालियाँ दी । बातों को आपस में पीसता हुआ वह सोना ताता कितना नीच है ! एक तो हमसे मन चाहे काम लेकर मुताफा करता है दूसरा अगर से बरा भी मिहान नहीं रखता । मैं बनी जाकर कम्बकन की बबर लेता हूँ ।

क्या बहुत ही विवेकशील है । बहुत ही मोच समझकर, बेबमाम कर काम उछाती है । ऐसा प्रतीत होता है कि हम प्रस्फुटित कसी को पराम की जगह परिवार का मार सहना पड़ता है । जो पराम के मार से टूट जाय वह परिवार के मार से कैसे जीवित रहेगी ? एक असतत प्रन मुझे कीचता रहता है ।

वह गयत स्वर में वाली "इतना पुस्त में नहीं जाना चाहिए मैया वह कमबार है इसलिए उसकी परबन ऊची ही रहेगी । बाप उसे बिनती कीलिए कि वह कुछ दिनों की धीर मोहसन दे दें ताकि उसका बकाया चुटना हो जाए ।

"मैं उसको एक पाई भी नहीं दूँगा । जब उस नया चीरा भी देना इराम कराकर है । मैं दूसरी दुकान से सीरा से जाऊंगा । यह माया का पक्का जो करना चाहे करल । बर बहुत उत्तेजित हो गया । उत्तेजना के कारण वह बापने मया । उसके गिर की नये फून मयी ।

"भाप स्वयं में उत्तेजित हो रहे हैं । जो काम पैसों का है । पैसों से ही होता है ।" इन्दिरा ने मयत स्वर में कहा ।

"पैसा घसी जहर माने को भी नहीं है ।

बुप्पी ।

केवल हुपके की बुकमुड़ाहट ।

माँ ने अचानक अपने तिर पर हाथ मारकर रींसे स्वर में कहा 'मैं बमागी मर-अप पाठी तो निहास हो जाती इत बुझाये में मुझ से अपने बच्चों का मह बुझ बर्द नहीं देया पाता । ऐसे दिन देखने के पहले तत पुब भेरी बाँसेँ नै भेठा तो बच्चा होता । बाज विरे ऐसे लोमों पर जिन्होंने हमसे हमारा बचन छीन लिया ।'

उब माँ ने इन अति नाटकीय अरे अमिन्न को देखने लये । रुपा ने माँ के अनुरोध किया 'माँ इन तरह समी होत यो रेवे तो हम बच्चों का क्या हास होगा ? हम अपने बीरज को कहीं हर बेवे ?'

'तू चुप रह मेरी माँ ।' माँ शकसायी 'मेरे बुज बर्द को कोई नहीं जानता ? घर में बुज बिस में बुज और इस पर बो-बी कु बारी पकात छोकरियोँ । न रात बैन न दिन को पइत । हर नई हाय हाय ।

बिमोचन ने आक्षेप भरी नजर से देखा । रामा में साबरवाही मरा पू पापन बा । रुपा अवसाह की अवाह सहरोँ में बिर बयी थी । इन्दिरा बाँसेँ फाड़ फाड़ कर माँ को देख रही थी । लेकिन धारे जहाँ से म्यारा हम सबका बाप प्यारा अपना कोने में प्रस्तर प्रतिमा बना हुपका पूड़बुड़ा रहा बा ।

रुपा ने उध भारी मीन को ठोड़ा 'माँ तू चुप रह । बभी कु बारी अचान छोकरियोँ के बारे में सोचने का समय नहीं है । बभी यह सोचना है कि साधा प दूबबाले के अपए कैसे चुकाये बाप ?

इन्दिरा ने बाँसों को स्तिर करके मुझ भीहों की क्यान को खींच कर कहा "रुपा ठीक कहती है ।"

बिमोचन ने बर्द नोची करके कहा, 'पर अपये बाबेवे कहीं से ?' मेरा साधा मुझ पर ऐसे ही बिबड़ता रहता है । बार-बार अपनी कम इक्कम होने का रोगा रोता है । मेरी हिम्मत उधके से बर्ताब को

देखकर कुछ माँगने की नहीं होती। यदि माँग भी लू या तो वह कोरा-उत्तर ही देगा।

रामा ने एक भया प्रस्ताव रखा 'क्या। तू बीजा से क्यों नहीं उधार माँग लेती ?'

सबकी बाँझों एक साथ क्या पर बम मयीं। क्या एक साथ इतनी माँझों को नहीं सह सकती। वह जैसे अपने बापको किसी अपराध से बुर करने की भावना लेकर बोली 'नहीं नहीं मैं उनसे रूप नहीं माँग सकती।

ऐसा भया यह अपनी खेन्डिल के लिए रूप माँग सकती है पर घर के के लिए नहीं। रामा ने क्या पर ताना कसा।

त्रिसोचन बिलबिलाता हुआ बोला 'क्या तेरे हाथ में हमारी भाव है। तू मेरी बहिन है लूब जानती है कि मैं किम तरह इन गृहस्थ का बचका बसा रहा हूँ। सब रास्ते बन्द हैं इसलिए तुझे यह ठकमीक दे रहा हूँ।

माँ ने भी ऊँचे स्वर में कहा 'मरी तेरी सहेली का रूपमा-चायेये नहीं बीरे-बीरे चुकता कर दिये। माँ ने न मरी लाडो।

बिबघना की एक परत उसकी माँझों की पुनलियों के आगे भावी और मयी जैसे उसकी माँझों की ग्योस्ता का स्रोत एक पल के लिए मूग गया हो। जैसे उसकी बिचार बाग लणभर के लिए पहले कुहासे से घाबल हो मयी हो।

इन्दिरा माँमी ने भी अपनी मास की दाठ का समर्थन किया 'तुम्हें हमें इस संकट से बचाना ही पड़ेगा। यह हमारे घर को इजडठ का तबाल है।

सबका अनुरोध।

क्या ने बड़ी बिबघना से हाँ मरी। उसकी स्वीहृति में बड़ी मजबूरी थी जो पुनिस की निर्मम पिटायी से जोर जोरी करने की स्वीहृति प्रदान करता है।

दुमरे दिन हुए जा गये । सामा बीर दुब का कर्ना चुक गया ।
रूपा ने पाँच रुपए अपनी माँ के हाथ में भी खोरी छपे दिए । माँ ने
मन ही मन लक्ष्मि के बचपनी इतना खामेनूर की आलीशान ही ओर
उसे एक धब्बा बूझा मिसे इसकी सुभकाजना की ।

लेकिन इतने मिलीजान की मयी बेस्ट नहीं बनी । उमके रुपड़ों
बीर गहन-महन का स्तर ऊँचा नहीं उठा ।

इन्दिरा की भी बरेसु सिलखारे चीर्यधीबं हो गयी थी । बाधिर
सतने घर में ही छानि की निसबार गहन सी । फिर क्या था ? गान
ने घर में गोबन भवा दिया । गाथ-गहू में उन दिन फिर बकी तू-तू में
में हुई ।

रूपा ने दूसरे ही दिन इन्दिरा का बोझा सा एक पत्रा मेठे हुए माँ
की डाँट दिया 'भाभी को हर नवन डाँटमा जन्मा नहीं ? बाधिर यह
भी इन्सान है । इसे जितना मुह्यन करोगी उतना ही मनु तुम्हें
बरकत देगा ।

माँ की तपोरिबी बड़ मयी । पटककर कर बोली चुप रह ।
बवान के लयाम सवा । एक बिसात की बसर लकर आकाश बिति
बात मत बजार । मुझे उपदेश देने नहीं है । बरी तू मेरी कोल के पैरा
होकर मेरी हेठी बिपाठी है । अपनी इत भाभी को नमास मुझे
लकलीक होली है । तभी मैं रोक्ती-डोक्ती हूँ बनी मरी जूनी परवाह
करे किसी की । माँ ने जोर का हाथ जमीन पे मारा ।

बैतम्य ।

कौन बैतम्य । मैं बताऊँ मेरी तरह मेरा अबोल साबी राममान
एक बाप बोला 'तू चुप रह मिलीजान की माँ ठेरी जुवान कती भी
धुम धम्क नहीं निकालती । ठेरी ह्याय-ह्याय मे इत घर की सुख-ध्यायि
चूट ली है ।

अस हय तू भी इनकी भीड़ बीतने जना बाया । राम जाके

इस बहू ने सब पर क्या जाहू-टोला कर दिया है। सभी हत्ती की ही सीर मना रहे हैं।

मैं कहता हूँ कि तू चुप रह बर्ता मैं तेरी जुबान खींच लू ना।
रह चुप।

माँ फूट-फूट कर रो पड़ी। उसक लज रोने से मैं बहुरा हो गया। हलका ठेकी से बुकबुकाने लगा। छोटी लड़की रैबा भी सिसक पड़ी। घामब चचे माँ के रोने को देखकर रोना आ गया था। रामा लमाछा-बीन की तरह हाथ की पुस्तक के सहारे अपनी पर्यन को टिकाने निस्पव भी बैठी रही।

धीरे-धीरे सब बक पय। खाना बहर हा गया। किसी ने भी बचि से नहीं खाया। रूपा बुद्धे-बुद्धिया और इम्बिरा ने मुह में दागा भी नहीं बासा। तिसोचन ने इस तनाव को केवल अभाव ही समझा।

रात धा गयी। खनीदी भी पक गयी। इम्बिराने लाउ चाहा कि वह अपने पति को सब मुल बता कर अपना बिल हलका कर लें लेकिन वह कैसे बताये ? रात ही सभी सोये हुए थे। बरा सी आवाज से कम से कम बुद्धे-बुद्धिया की नींद खुल ही जाती है।

वह रात भर हमी कतमकत में पहरी नीद नहीं सो पायी।

×

×

×

एन् ।

एन् ।

दूर ठिठुरती हवा के पंखों पर बिरों की बंटा अन्धि बैठी हुई रूपा के कारों में अन्धित हो रही थी। रूपा कोई उपग्यास पढ़ रही थी पढ़ते-पढ़ते वह पक गयी। असस और पकान का हलका घाटीपम

उसकी पसलों को ड़ापने लगा । हमने एक बम्हार्द सी और बातें सरोड़ा ।

मैंने देखा—रुपा के कतघ फूट कर लखक पड़े हैं । कपीलों पर रातों के हुलके-हुलके बिगू भी हैं ।

उठ धीर एकान्त ।

मेरी आँखें उसके बेहरे पर जम गयीं । वह बबप कर उठी । सीपे में अपने मुस को देखने लगी । फिर बबरा कर उसने चारों ओर देखा । सब धीमे हुए थे । उसने इतमिनाम का रास लिया । फिर वह बेर तक अपने बेहरे की देखती रही ।

देखते-देखते उसकी आँखें भर भायीं । उसने सीपे को रल दिया और वह अपने चारों ओर फँसे हुए नरक की देखने लगी । भाभी की एक टॉप नीह में ही भैया की टॉप पर जा विरी । बाप मुर्दा सा पठरी बना एक कोने में ओर से धरल्लि से रहा था । उसके पायठाने में अपना मुह डके सोमी हुई थी । उसकी नजर बीरे-बीरे खुशी ओर भाबी । बून्हा डंडा पड़ा था और घापक उसकी रास भी ठंडी हो बमी थी । दो बर्तन बूठे पड़े थे । वहाँ से उसकी नजर और फियली । भाई की फटी पेंट और पीने बिफ्ट पमे कौड पर अपनी सम्पूर्ण कबना के साथ रुक गयी ।

वह विह्वल हो बसी । उसका स्वर मोन हाहाकार कर उठा 'वह कौसी बिन्वयी है ? यह कौसा बीता है ? यह नरक है, बीतता हुआ नरक रौरव और कु भीपाक ।

उसने बाम्बेरा कर लिया ।

नरक का दूष्य समाप्त हो गया ।

वर उसके अन्तघ में जाने नरक को कौन निटा सकता है ? उसकी तस्वीर को कौन सा रबर बिफकर साफ कर सकता है ? वह बमित है-वहरे बाह की तरह ।

बहु बहुत बेर तक सिंसकती रही बहुत बेर तक ठड़पती रही ।
न जाने उसे कब नींद आ बनी ?

स्वप्न का सतरंया संसार ।

बीहड़ बीरान अंजल ।

अंजल के एक ओर ऊँची-ऊँची पर्वत माताएँ और दूसरी ओर
सूना-नंदा रेविस्तान ।

उस मयानक अंजल में एक सुबती एक कंबुकी और एक पीठ
रेखती आधी साड़ी पहने करप बिछाप कर रही है । उसके गालों
पर गर्म-गर्म भाँसू बूलक रहे हैं और उसका चेहरा निरन्तर रोने से
से मुर्छा गया है । बिपार से म्याकुल उसकी आँखें चारों ओर डूँड
रही हैं मैड्रिन एक ओर अंजल और दूसरी ओर सम्नाटे में सोयी
पर्वत माताएँ ।

सुबती बहुत डूर सड़ी है ।

धीरे-धीरे वह पास घाती है । उसकी आकृति स्पष्ट हो रही है ।
जरे यह ती कपा है मैं हूँ । कपा पर्वत गालाओं की ओर देखती
है । पीछे की गर्बना होती है । उसका रोम रोम काँप जाता है । वह
नामनी है । उसकी बति पबल बेप सी है और उसका अचरंया धरीर
भायता हुआ बहुत ही आकर्षक लग रहा है ।

वह एक सूनी सोर्या पर्वत चाटी में पहुँच ब ती है । धीठल समीर
का झोका समके बवेद कपों को सूखाने लगता है । धीरे-धीरे वह सहज
होनी है । पकान के मारे उसका धंम अंग टूट रहा है इमतिप उसे
अनचाही नींद आ बेरती है ।

एकाएक नमाः बज छल्ले है ।

उसकी आँखें खुलती है । वह नीम पड़ती है । अंगनी कामे सोम
नये में उग्यल गाब रहे हैं । उनके हाथ में बिपाळ हबियार है
और उनही यमों पायलों बीबी है ।

कपा बय से पुन बीखती है ।

एक जंपती पाने के स्वर में कहता है—

‘हम अपने देवना का करेपे प्रमत्त

देकर तेरे रक्त की बलि है देवी

बटौ नहीं तुम्हारी बलि काङ्गु से होयी नहीं ।

हम बूद-बूद तेरे रक्त से करेंगे खप्पर’

रूपा जोर से हाहाकार कर बहती है ।

उसकी धारों सुन गयी । घबना भंग हो गया । उसने लपक कर लाइट पकारी । पानी का एक पितास पिवा । बड़ी देर तक अपने बापको वह आरक्षित करती रही ।

वह स्वप्न उसकी क्यों आया ?

भीरे-भीरे हमने विस्मेषण किया ।

ये सभी हमके विषम जीवन के ब्रतीक हैं । ‘घमाचों में उठे बमोच रता है और वह हमसे फिर रही हैं । आने वाली विन्धवी में घायल पते एक-एक बूब का लोबा करना बड़े । अपने बापकी महा बीड़ार्प देवी पड़े ।

उसने बापम अन्धेरा कर लिया ।

पर उसे नींद नहीं आयी । ठंड की मम्बों और सूखी रात के प्रस्थान की पड़ी अभी बहुत दूर थी । उसके लिए यह सब दुष्कर हो गया कि वह इस सूनेपन को कैसे अपनी आँखों से दूर करे ?

फिर अज्ञानक उसके दिमाग में भुन मये—मैदा विनोचन के बसम । वह भर भर जाती । वह बिलब पड़ी—महूँ कैता जीवन है ? वह कैता जीवित रहना है ?

भारी पेछाव करके उठी ।

माँ का कड़ा आदेश था कि पेछाव बाहर किया जाय पर घात्री ने इन सबको लोया जानकर भीतर ही पेछाव करने बैठ गयी ।

×

, ×

×

ठंड का मौसम जसी मयी ।

भर्मी में त्रिजोषन और इन्दिरा को बाठपीत करने के कुछ मन्त्रे बदसर मिलते हैं । माँ और बाप बाहर खाट कामकर सोते हैं। साम ही एक छोटी सी खाट पर रेवा । इसके साम ही दूर गली तक त्रिजोषन भी बूढ़े-बुढ़िया होते हैं। उनके बिस्तरे बाहर निकल जाते हैं व उन बम्पतियों के भी त्रिजोषन भीतर की भर्मी सहज नहीं होती है ।

माँ और बाप मो बने थे । भामी इन्दिरा छोटी के समस्त रात को बन-ठन और सत्र-संवर रही थी । वह कभी-कभी रात को एक वेटेस्ट रेवमी घूट पहनती थी त्रिजोषन वह सुबह होने के कुछ पूर्व बु बलके में बापस भीतर रस देती थी । रामा इन परिवर्तन का मर्म समझती है । रामा इन पोशाक का अर्थ समझती है । तब वह भामी को रस देस कर मह मुस्कान बिखेरती रहती है । उनके बेहरे पर एक उम्माद मरा सलोनापन जाय जाता है ।

रूपा अभी तक नहीं आयी थी । आजकल वह डेर से जाती थी । उसका कहना था कि उसने एक ट्यूशन कर लिया है त्रिजोषन पर की इन्कम में पचास रुपयों की वृद्धि हो गयी है । माँ इस ट्यूशन से सक्र मरवा थी पर भामी बहुत ही लुच थी । त्रिजोषन के बहिन के इस प्रस्ताव को बड़े स्वर में मान लिया । उसने रूपा से यह भी कहा कि वह इसमें से बच्चीत रुपए हर माह अपनी छोली बीजा को देवे ।

रूपा आयी । उसको माँसों में थकान का सूँगापन था । छाती से थिपकायी हुई पुस्तकें बोड़ी सी अस्त-व्यस्त थी । उसने घम से पुस्तकों को आले में खेंका । बड़े ही स्नेह-बिच्छ स्वर में बोली "भामी जाना बरोस दे, बड़ी मूछ लयी है ।"

भामी तुरन्त बाल सँबारना छोड़ कर जाना बरोसने लयी । रामा ने रूपा के पाग बाकर कहा "कल मुझे पाँच रुपयों की जरूरत है ।"

"रुपयों ?

सहेलियों की पिकनिक है।”

“भैया से माँब सिना।”

‘नहीं।’

‘क्यों?’

‘भैया के पास कहीं है ऐसे आनकन। उतका मासिक भी उनसे माराज है। क्वा तू ही रैना, बीनी न?’

‘से लेना।’

रामा बड़ी प्रसन्न हो बपी। वह जट से अपने बिस्तरे पर जाकर पड़ गयी। बर्नों बटुन भी घत-बसे बीच नहीं आ रही थी। वह पू-पू करके पठी और क्वा से बोली “तुझे यमी नहीं लगती।

नहीं।”

‘मैं यमी के मारे मर रही हूँ।’

‘तू कम्पीट में पैदा हुई है न?’

“क्वा तू मेरा मकाक मत कर।” उतके स्वर में सहसा अनुभव तैर आया— माँ से कहकर आज नर के लिए मुझे बाहर लेने का प्रयत्न दिता दे।

“जा चुप-चाप रैवा के साथ ली जा।”

रामा हँसी-मुँगी बाहर बसी बपी। इम्बिरा क्वा की जगना बिलाने बीठी। क्वा ने इम्बिरा की कमकठी पोधाक को देखा। उतका मन अनजानी ब्यथा से भर आया। वह उतके बिबाह का बोड़ा है, मून मग्दाल कर रसती है। जब मन में प्रस्ताह आवता है तब वह उसे पहन लेती है।

इम्बिरा ननक के बेहरे पर अपनी नजर टिका कर दूजे स्वर में बोली “इस बार तू अपनी सहेली को क्वाए न बेकर मेरे लिए कपड़े बनवा दे लो किठना अच्छा रहे। मेरे सारे कपड़े फट पये हैं।”

‘कैसे बनवाऊँ भाभी? हर महीने क्वाए नहीं पहुँचेंगे तो हमारी — — — तैस सपेनी और नकत-बिबाक नर हमें कोई भी एक पैसा

संभार नहीं देया। मुश्किलों में ही ऐसे सौय काम आते हैं।

“तू ठीक कहती है पर मुझे बपफटे कपड़ों में रहना अच्छा नहीं लगता। उसने पसक सपका कर एक लम्बा साँस लिया और कहा कि मैं पढ़ी लिखी भी नहीं हूँ। काला बखर भेंस बरकर है बरना मैं भी तेरी तरह कहीं नोकरी कर लेती कहीं ट्यूशन कर लेती। मैं तो केवल दो टैम रोटियाँ सफ़ सकती हूँ।

अच्छा माभी मैं कोसिप करूँगी।

इन्दिरा को इनसे बड़ी साँत्वना मिली।

मैया का पये वे। कपा हाथ मोड़कर बाहर खसी पयी। बाबू इन्दिरा और त्रिलोचन दोनों ने साथ-साथ खाना खाया। एक दो बार एक दूसरे ने एक दूसरे के मुँह में कौर भी डाले। जीवन के असीम सुख उनके लिए बहुत कम आते थे।

इन्दिरा ने खाना परोस कर कहा ‘मैं बरा अपने बाल संभार लेती हूँ।’

त्रिलोचन ने उसका माम पर चुटकी मरी। हठान कपा आ पयी। कपा का मन दर्द से भर आया। मोच बँठी हम लोग कितने बमामे हैं। जीवन का कोई भी सुख हमारे हिस्से में नहीं। हम उस देश के पपीहे हैं जहाँ स्वाति का बपन नहीं।

उसने अनिच्छा से पानी पिया।

‘मैं माभी बाहर मोड़ की खसी बहुत मरी है।

इन्दिरा सब समझ पयी। त्रिलोचन लँकोच से चढ़ गया।

मैस देया की वह मुबह इन्दिरा के लिए बहुत अच्छी मुबह थी। वह सबसे बड़ी गुम की बहुत गुम थी।

दो दिन बीत गये।

यह ईश्वर की मर्जी है या प्रकृति का दस्तूर कि जिनको अकरन नहीं उसे बहुत मिलता है और जिनके पास कुछ नहीं उसने वह और

धीमता है।

बाप बीमार पड़ गया।

एकाएक उसके पाँव में मकड़ा पार गया। हस्पताल में भर्ती कराया गया। हासल विन्तायनक और वैतों का अभाव। त्रिभोचन के मासिक में भी ऐसे संकट के समय हो ली रूप अग्रिम दिये। लेकिन बीसा और चाहिए वा क्या किया जाय ? इस समय भी क्या की सहेली काम आयी। इपया बहुत खर्च हुआ पर पिताजी नहीं बच सके। माँ बिबवा हो गयी। मेरा एक मुस्र जैसा ही साथी हमेशा के लिए जाता गया। सारा परिवार भबंकर आर्थिक संकटों में पुजरने लगा।

स्वरूप बराबर आता था। सारे परिवार में वह अब बुनमित गया था। एक अग्रिम सदस्य और आरपीय की तरह।

ममी के साथ वहाँ शुरू हुई।

त्रिभोचन की मौकरी छुट गयी। उसके मासिक में अपनी बाँवनी थोक की दुकान की २० हजार की बचड़ी में बेष दिया। यह तारी रकम ब्लेक में ली गयी थी। जहाँ का पु जीपति बर्ब भी गया बचव है ? सरकार की धाँकों के नीचे वह मानव्य काम करता है। सरकार एक बाल पेंकती है तो वह हजार पाकू पैसा करके उसे काट देता है।

त्रिभोचन घर था बीछ।

दोपहर थी।

इन्दिरा ने उदास पति को अनमम सीट्टे हुए देखा तो उसका बसेजा पक डि रह गया। समीप जाकर जम्ही ठे बोली, 'क्या हुआ ?'

'बट्टी।

'किसकी ?'

'मौकरी की।'

'क्या कहते हो ?'

“ठीक कह रहा हूँ। उसके एबज में मुझे सिर्फ इतना ही मिला कि जो चार पाँच सी रूपए लाला ने कर्नै य बह माफ हो गये और एक महीने की प्यार मुफ्त में मिली। इन प्राइवेट नौकरियों में यही तो तराबी है कि कब मासिक नौकर का पत्ता खाट हों।

बब क्या हाया ?

जो तकबीर में लिखा होया।”

माम को घर में एक बैठक और हुई।

उसमें काफी बात-बिबाद के परचात यह निश्चय हुआ कि रुपा अपना बड़गा छोड़ कर नौकरी करेगी और त्रिलोचन नयी नौकरी की तलाश करेगा।

‘सकिन तुम्हें नौकरी देया कौन ? त्रिलोचन ने पूछा।

‘जहाँ में टपूशन करती हूँ वही सेठ माहब। बड़े अच्छे माम है बे।’ उगसे बिनमता म कहा।

‘मुझे भी उतने यहाँ लमा दो। ममा मे कहा।

‘तुम्हें वहाँ नौकरी नहीं मिल सकती।

‘सकिन क्यों ?

‘क्याकि तुम मीट्रिक पास नहीं हो। कुसी या चपरासी तुम्हें रखवा कर मै बहा अपना अपना नही करवा सकती। मैया तुम क्यों फिक करते हा ? भीरे भीरे तुम्हें नौकरी मिल ही पायगी।

रुपा की नौकरी मम पयी।

त्रिलोचन नौकरी को तसाम मे दिन भर मारा-मारा फिरता बा। बड़ी बरीमानी में बह अपना एक एक दिन बिताता बा। रात को बह जागता तो इन्धिया और माँ में मुठ उठा हुआ मिलता बा। इन्धिया का प्रमुख ओर उसकी कर्कषा मनोरुनि दिन प्रनिदिन बढ़ रही थी। बह माँ का जबके गामने बिरोप करनी थी। उमे बह उनी तरह कोपनी की त्रिउ तरह बह उठे रहने कोसा करती की।

एक दिन उब दोनों के बीच घाली बनीब हो रही थी । क्या जा पयी । वह भाभी पर शस्त्रा पकी 'तुम्हें धर्म नहीं जाती माँ को डोटते ? बागिर वह हमारी माँ है ।

'तो मैं क्या करूँ ! मैंने तो इसका बड़ा सिद्धान्त रखा बड़े पुस्तक छोड़े पर जब मुझ से कुछ भी नहीं छोड़ा जाता । जब मैं एक को दो गुनामे बिना नहीं रह सकती । इन्दिरा का बेहूषा तमतमा उठ कर वह यह सब शायो का बटक-बटक कर कह रही थी । उठते नधुने पूजा में बकी हुई पोड़ी की तरह झुरक रहे थे ।

सेकिन हम भी ठीकी यह बेबबबी नहीं सह सकते । बाप मर गया इतका मतलब यह नहीं हुआ कि माँ को कोई इज्जत ही न करे ?

'माँ की इज्जत । उसने नुरुसे मैं बात काटे । उठकी बाघों में पूजा बहक कर इकट्ठी हो पयी । वह बहुत बड़ा विस्फोट करना चाहती थी किन्तु उसी समय बिसोचन ने प्रवेष्ट किया और वह सारी स्थिति से परिचित होने के लिए चठावता होने गया । वह बीघ ही सारी स्थिति से परिचित हो गया और उसने इन्दिरा को पापल की तरह बीटना शुरू कर दिया ।

अत्यन्त ही अचर्य और हृदयविदारक दृश्य था ।

बिसोचन की पिटायी के साथ इन्दिरा ने अपने आपको बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया । उसके बाल बिखर गये और उसका रंग लाल हो गया । धीसुपों से उसके पास तर हो गये और वह जोर जोर से मूँ-मूँ करने लगे लगी । क्या मैं बिसोचन को बड़ी कठिनाता से काबू किया और उसने नबभीत दृष्टि से उसकी आर देखा । वह बड़बड़ा उठा यह कोई बर है नरक है नरक । जब देखो तब हाय हाय और किच-किच मची रहती है । सबके सब जानकर हो गये हैं । एक मिमट भी बँब और छाँठि नहीं । इकर माँ गम नहीं जाती और चकर यह चुड़ैल । और वह गिर बकड़ कर लुब ही मुबकने

2130 14.11.28

लगा । देखा और रामा भी-सीट कर बां पसी थी । समूहनि जब नुंगु
की रोते हुए देखा तब वे दोनों की सुर्खासी झुंझर लकीं हीं गयीं ।

इन्द्रिय बमीन पर बड़ी हुई बुरी ठरह रो रही थी ।

रमा मामी के पास गयी । उसे उठना चाहा । मामी ने मड़क-
कर दगके हाथ को लेंक दिया 'मुझे बड कू, जब ठी हो गया
ठेरा कसेना ठंवा । पिटा बी, पिटा इन लकड़ी से पिटा तपी
तेरी मां की भीन बड़ेवा । जब मेरा नहु टपनेवा तब तेरी मां के कसेने
की आप ठंडी होगी । और वह बहाड़ मारकर रो उठी ।

रमा को महसूस हुआ कि उससे कोई महा अपराध हो गया है ।
वह अपने आपको अपराधी समझने लगी फलस्वरूप उसकी आँसों से
जम्, धनछना बाये ।

"मरले से तू इन बायब की मह, हम सबको लाकर ही दम
लेगी । पिता जी मर गये और मेरे पले जजाम बाँप गये ।

अंदर मला बोटकर मुझे मार दीजिए । इन्द्रिय भीन बड़ी ।

"तुम चुप रहो रीया । जमना के लिए चुप रहो । मैं यदि इन
दोनों के लमड़े में नहीं बोसती तो मह मजड़ा बड़ता ही नहीं । जान
मेरी इन बोम को मने ।"

"मां जब बुरी हा गयी है । उसकी अबल सठिया गयी है । पर
यह बचान है जवनमंद है, इसे तो कम-से-कम मां के सामने नहीं
बोसना चाहिए ।

"मैं बोलूँगी और हजार बार बोमूँगी चाहे आप मेरी जान
ही निकाल दीजिए बचका देकर पर से बाहर कर दीजिए, मैं सब
बचने वाली नहीं हूँ । वह लड़ाकू की तरह लमकर बैठ गयी ।

रिया तुम गम घासा मैं तुम्हें हाथ जोड़नी हूँ ।

बिभोचन चुप हो गया ।

बीरे बीरे बोसित बातबरन घायाम्य हाने लगा । जाना उन

बिन भी बना। लेकिन रात को रुपा ने सुना कि रबी बहुत देर तक बानी की लुछामर कर रहा है पर वह राबी नहीं हुई। वह बड़बड़ाती रही। तिसकठी-सुबकठी रही।

रुपा भी मर मर आयी। वह इन दोनों के बीच क्यों मोपी। यह तो इन दोनों का उषा का झगड़ा है।

उसने बन्देरे में देखा—सब सोये हुए हैं। मुझे भी नींद ने बा बेरा।

×

×

×

इन्दिरा उस दिन से रुपा की बुझन हो गयी। रुपा ने बड़े साहस मनाया चाहा पर वह नहीं मानी। रुपा उसके साथ करने की कौशिल्य करती उसके अपनी पुरानी गलतियों को धमा माबधा की। रुपा की आपसूती से थिड़कर कह इंदिरा ने कह भी दिया "मुझे यह सब पसंद नहीं। मुझे अपने हान पर छोड़ दे। तू अपने सुन बग, मैं अपने सुन बगु।

रुपा हार गयी।

दिलोचन धाबकत गली के मुकड़ वाले बटिया होटल में बीम रहता था। दिन मर में वह चार-बाठ जाने की चाम पी पाता और घाम को भर आकर सो जाता। जब उसका जो बहादा उकठा जाता और उसके अपने बभाओं की बुटन उसके बिन की एक-एक परत से टकराती तो वह मेरी सोयी हुई बन्देरे में डूबी मोद में अपनी पत्नी इन्दिरा को बानीध में भर लेता और उसे इत बुरी तरह से बूमता कि रुपा और रामा ने फान कई हो पाते। रुपा अपने आपको बध्न कर लेती लेकिन रामा को नहीं जवानी के परे में छिपी बासना की चाम बहक कर हवारों बेरों में फैल पाती और वह स्वकप को निकर मानसिक तृप्तिवों में डूब जाती।

मैं इस पके-झारे-टूटे परिवार को देखता। पता नहीं क्यों मुझ यह मन लगता कि कुछ अनिष्ट होगा और यह मूल इस परिवार की गैरत और आबरू को मिटा देगी।

त्रिसोचन जा रहा है।

उठकी वेंट पीछे से फट गयी है और कमोड की काँतर पर मन बम कर उसकी मरीची का मजराक उड़ा रहा है। वह बीड़ो पी रहा है। उसके बहरे की हड्डियों ने इधर उमर कर उसकी बची-खुची सुन्दरता को भी खत्म कर दिया है।

रेवा स्कूल से आकर मामी से बोली "मामी मरी यह फॉक फट गयी है। स्कूल में लड़कियाँ मेरी बड़ी हँसी उड़ाती हैं।

'अपनी बड़ी बहन को क्यों नहीं कहती? तेरा मैया आबरू बिकार है, मैं तेरी आइकर भी कोई मदद नहीं कर सकती। हाँ तेरी माँ से भसबसा कुछ रुपए मिल सकते हैं।

रेवा माँ के पास गयी। माँ सदा की तरह खोर से चीलना चाहती थी पर इन्दिरा की कठोर मुद्रा और तीखी मखर में सज्जे हुए आक्रोश को देखकर वह चुप हो गयी। उस दिन की मामिक घटना के बाद माँ इन्दिरा से कुछ करने लगी थी।

'मुझे रैमा देने वाला बेटा इन्द्रार जला गया। माँ ने जानू बहाते हुए कहा।

तभी जा गयी रामा।

वह उदास और मुस्त थी। आकर चुपचाप मेज पर गिर टेक कर कुर्सी पर बैठ गयी।

त्रिसोचन ने पूछा "बया बान है रामा? तू आज इनकी मुन्न क्यों है?"

विर मे दर है।

'जाय पी स।

'पर मैं दूब नहीं है।' इन्दिरा बोली।

‘ठहर मैं तुम्हें हीटल से सा देता हूँ ।

इसकी बकरत नहीं । इन्दिरा रामा के पाग आ बची ‘मिरे साम बन अरा कमचबनी से आटा भी लाना बीर सामा से सामान । अब तक आटा पीयेगा तब तक तू चाम पी लेना बीर एक एनातिव की बोसी नी से सेवा ।

रामा ने जाने की असमर्थता ब्रफ्ट की पर इन्दिरा आज उसे स्नेह के अतिरेक से भिखोती पयी । रामा भी भाभी के इस अग्रयाचित स्नेह को पाकर जाने की उद्यत हो पयी ।

भाभी ने बेहूँ का बीपा अपने सिर पर लावा ।

बोनों आवा घंटे में लौटी । यहाँ कोई नहीं पा ।

भाभी ने घाराम से बैठे हुए कहा मैं तेरे सिर बर्ब का मत्सव पमसती हूँ ।

‘क्या मत्सव ? शौक बड़ी रामा । उसके हाथ में एक मैसा सा सखी सामेवामा बैसा पा ।

‘मैं मत्सव बूब समसती हूँ कि तूरा असती बर्ब क्या है ?

‘क्या है ।

‘मिरी बखी नगर मैं भी बीरल बात हूँ बीरल के दिल की बात मुससे छिपी नहीं रह सकती । मैं सब समसती हूँ ।

‘क्या ?

‘क्या स्वरूप से लबड़ा हो क्या ?

‘क्यों ? उससे मेरा लयड़ा क्यों होगा ।

‘क्योंकि वह मुससे मुहम्बत करता है ?

‘भाभी वह मेरे भाई की तरह है ।’ उसने बड़ी तटस्थता से यह सफेद सूठ बोला ।

इन्दिरा का बाँव खामी जसा क्या । उसने पुरस्त बात को बरता ‘‘रामा बात यह है कि क्या कर का बर्ब जसाती है । यह अब इस कर की मासकिम है । क्या देखो तो हम कितने बर्ब कपड़े पहनते हैं ।

हमारे पास खप करने को एक बैठा भी नहीं होता। जरा क्या को देखो हर महीने एक नया मूट। मुझे कुछ काम में कामा नबर जाता है।”

‘मतलब ?

“मतलब का पता तू ही लगा।”

बहुत बक़्दा।

उसी रात रामा ने जब नमी सोग सी बड़े तब क्या के पर्व को खोल लिया। वह हीराज हो गयी। बहुपचाब के बहाने नमी में गयी। उसने देखा कि नमी-नो क नोन माज घोर कुछ छोटे मोट। एक स्तिप ! उसमें निभा का कि कम तुम देरे साथ रात को रहना है। बर पर कोई बहाना बनाकर जा जाता। कलिय मप्याह में निरुं एक रात। मूलना मन तेरा दायीर !

रामा मुग्न सी उस स्तिप को देखती रही। फिर उसने उसमें से नो का एक नोन निकाला। उस पर्व को ज्यों का त्यों बर करक रख दिया।

उसे रात भर नींद नहीं आयी। बार-बार वह उठकर बैठ जाती थी जैसे उसके मन में कोई संका जाग जाती है। रामा ने जीवन क्हापोह में रात ब्योत की।

सुबह हुई। पुरकन काम चलता रहा। क्या बरतद जाने को लैदार हुई। उसने अपना पर्व संमाल। एक नो का मोट पापब पा। रामा का दिन बढ़क रहा पा। क्या ने एक बार नरमटी बबर से सबको देगा। उसे सुरम्य यह मामूम हो गया कि बरए किमने लिये है ?

यह कमरे से बाहर निकली।

बाहर जाकर उसने रामा को बुकाया। रामा का बौर मन काँप गया। जबराकर वह बाहर आयी। बोसी ‘क्या है ? उठकी नजर नीचे मुकी हुई थी।

'तूने मेरे पर्न से रूप निकाले । बीने से क्या बीनी ।
'कहीं बीबी मैं तेरे रूप क्यों निकामूवी ?

बच्चा । क्या उदाठ सी चल पड़ी । उमा के होंठों पर
तुरन्त बुद्धता भरी मुस्कान नाथ घटी और उसने अपनी मुहा कठोर
करमी ।

बिलोचन चला गया । माँ बाहर खाट डामकर लो गयी । उमा
ने बीरे से कहा 'भाभी क्या बड़ी होदिवार निकली । बरे वह एक
शामीदर लड़के ।'

'क्या कहा ?'

'हाँ वह अपने छठ के बेटे शामीदर' ।

धि-धि: धर की इन्धत-भाबरु खाक में मिसा रही है । नाथ
रात जाने दे ।

'और वह कत रात फिर बाहर रहेगी ।'

'क्या कहती है ?'

'ठीक कहती हूँ । भिरा मरोगा कर, मूठ नहीं बोलती ।

'बच्चा । उसकी मुकुटियां उन गयो ।

उमा उस रात को बेर से बामी । चाँसे ही उसने भैया के हान
में बत का मोट बसाया । बिहूँन कर बोली 'भैया मुझे उत बीरह
के बस स्टैंड पर मिसा ।

बिलोचन मूँके नाथ की तरह उस मोट पर सपठ पड़ा । कई दिनों
के बाद उसने इतना बड़ा मोट अपने हाथ में देखा ना । वह मोट की
प्यासी मकर से देखता रहा ।

इन्दिरा ने कड़ककर पूछा 'जाम रात बेर से क्यों बामी ?'

'उहेनी के साथ सिनेमा देखने चली गयी थी ।'

'कहकर जाना चाहिए ।'

'क्या नहीं मिसा ।

देखा। आपने।" इन्दिरा ने नितोचन की ओर मुड़ कर कहा।
नितोचन एक साखली हुई ही हुई कर वाला 'तू भी कमी-कमी छोटी
छोटी बात को लेकर बैठ जाती है। बेचारी बच्ची है, जरा घुम जायी
तो क्या हुआ?"

रामा को मन-ही-मन आश्चर्य हो रहा था कि भामी एकपक्ष
कैसे बदन मयी है? मुबह तो वह उसके पक्ष में थी? उसने प्रश्न
परी नजर से उसे देखा। भामी ने नाक भी सिकोड़ा।
उस दिन के परचाठ घर में ही बस हो गये।

रामा के भी रूप खत्म हो गये। उसकी आँखें दया पुन
राब हो गयी। क्या का पर्ल जब मरा खाली मिलता था। क्योंकि
उसने एक जममारी के किबाड़ लया जिसे वे जिनमें एक मजबूत ताता
लया रहता था और जिसकी ताली इन्दिरा के पास रहती थी। इन्दिरा
सूने रूप से क्या का पक्ष लेने लग गयी थी। नितोचन भी क्या की
ही तारीफ करता था।

एक दिन मुबह ही मुबह स्वरूप जाया।

क्या बाहर बाँसुन कर रही थी। स्वरूप को रीत कर मुस्करायी।
हुस्ता बूँद कर बोली "मैंने जो ममसाया वह तनम बयें ना?"

"एक वम।

"नाटक में काँ कमी नहीं जानी चाहिए।

"जरा भी नहीं।"

"जाइए भीतर।"

स्वरूप भीतर गया। नितोचन ने कहा "जाइए स्वरूप की घाय
मुबह-मुबह कैसे टपक पड़े?"

घाय बीने की इच्छा हो गयी। दूगटा क्या जी ने बुनाया था।
उसने क्या की ओर देखा।

"हाँ मैंने आपको बुनाया था।" क्या ने तरह स्वर से कहा।

बात यह है कि हमें वो ही स्वयों की सक्त करारत है। आप योरे
विशों के लिए वे सफ़ते हैं ?

'बकर। उसने जब मैं से वेंके भिकास कर कहा "बाब मुबह
मुबह ही आपके पाठ वाले बरिखधर के घर से रूपए लाया हूँ।

बिमोचन ने बीच में ही कहा नहीं-नहीं आप रहने बीगिए।

'इसका मतलब है कि आप मुझे पराया समझते हैं।

बीच में इन्दिरा ने धाकर रूपए छीन लिये। वे आपको
पराया समझते हैं तो समझते रहें पर मैं नहीं समझती। इनकी
नीकरी लपते ही बापस कर दूँगी।'

रामा की आँसों में एक चमक थी।

'उसने मन-ही-मन कहा 'स्वरूप के पास इतने रूपए ? वह
उसके पास ठकी ही जा बपी।

उसके जाने पर स्वरूप कुछ खेप सा गया। रामा ने मगुर स्वर
में कहा 'भैया हम लोग तुम्हारा यह बहसान नहीं मूलेंगे ?

जब स्वरूप वहाँ से निवृत्त होकर बाहर गया तब रामा एकाएक
धीक कर पर से बाहर निकली और चित्तमायी, स्वरूप भैया को
स्वरूप भैया।

स्वरूप एकदम रुक कर बापस मुड़ा।

हाफ़ने का अभिनय करती हुई वह स्वरूप के पास पहुँची। नानी
में नन्दबी बह रही थी। स्वरूप ने अपनी नाक के बाने कमाक रख
सिखा। वह अपसक रामा को देखने लगा।

'भैया है ?'

'भुनो भैया ।'

'एक बात कर्हूँ आपर तुम बुरा न मानो तो ?'

बपी।

'तुम मुझे मय्या कहना छोड़ दो। बीड़े हमारे सम्बन्ध हैं
उसके अनुसार यह सम्बोधन ठीक नहीं है।'

“ओह !” वह संजीर होकर बोली “तुम्हारे कहने का मतलब है कि जैसे हमारे बीच सम्बन्ध है वैसे ही हमारे सम्बोधन होने चाहिए। जैसे मुझे यहाँ इन्द्रजित से बिना रहना ही नहीं है ? स्वल्प कष्ट और व्यवहार में बड़ा अन्तर है। हम सभी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और व्यवहार में हम क्या बहुत ही बुरे काम करते हैं। हम एकदम सत्यवादी नहीं बन सकते। बन जायें तो यह दुनियाँ हमें जिन्ना नहीं रहने देती। इस दुनिया में अपने चारों ओर एक पराई बात रखा है परों के उपाड़ने ही यह बहुत ही नयी और अगह्र बन जाती है।

स्वल्प में रामा के समीर मुख को देखा और वह कुछ नहीं बोला।

“तुम कम दोपहर का पर आतीये।

“क्यों ?

“बहुत जरूरी काम है।

“क्या ?

“आयोग या नहीं ?” अपने फेंगसा करने पर स्वर में पूछा।

“तकिय माने ग क्या काम ? तुम्हारे घर में ।

“जानी नया साहर जा रहे हैं। तुमन से भी स्पष्ट किये हैं न ?

माँ दोपहर को पढ़ानी बुझिया क यहाँ बनी जाती है।”

दिल में आन की खेप्या कहीया।

×

×

×

दूसरा दिन।

दोपहर।

रामा बड़ी बेताशा में स्वल्प की प्रतीक्षा कर रही था। उतने बचने थापकी मज्जाया था। अपने हाथ में एक आत्मीय आर्तिब की बुलन्द दी। बग्न ही कम्प और मंदी।

एक बार मैंने उस पुस्तक के इस बारह पृष्ठ पढ़ लिए थे। बाबा रे बाबा मैं अपने मन का संतुलन खो बैठा। बासना का बिकट मूठ मेरी सोपनों में बुरी तरह छा गया। साप अपने मन को समझाना चाहता था वह नहीं समझा। बाहिर मजबूर होकर मैंने अपनी गमीप वाली कोठरी पर बवालकार कर लिया। गया कर उठ पुस्तक को पढ़ने के बाद मैं बासना से अंधा हो गया था।

वही पुस्तक उसके हाथ में थी। पठा नहीं ऐसी गम्भी पुस्तकें के सोफरिवा कहाँ से जाती हैं? यह दिल्ली देश की राजधानी विदेशियों का तीर्थ स्वान (राजघाट की बजह से) और यहाँ ऐसा साहित्य? छिः छिः हमारे देश के कुष्ठरों और सिपाहियों के गालों पर यह एक तमाशा-वा है?

स्वल्प वा गया।

सन्नाटा एकांत और उस गम्भी पुस्तक का प्रभाव। रामा ने इपर-उपर की बानें करके उसके गले में बाँधिं आसकर कहा 'मुझे भी तुम्हें नय मुमके बिलाने होंगे सिर्फ तीस रुपये बचये।

'कौन से मुमके ?

देखते क्यों नहीं? कानों के मुमके कितने बन्दे हो गये हैं। ईशो स्वरूप तुम्हारे पास आजकल बहुत बचये हैं। जब तुम भीजा को बो ली रुपये के सबूत हो जब मुझे इसके से मुमके भी क्यों नहीं बिला सकते ?

'सैकिन ?

सैकिन बेकिन मैं कुछ नहीं समझती। तुम्हें मुमके बिलाने ही पड़ेंगे बर्ना हमारी बोस्ती फट।'

'ऐसा न कहो। रामा मेरे मन में कुछ भी हो पर यह भी सत्य है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ।'

वह बिड़कर बोली 'बाहते अकर ही पर मुमके नहीं बिला सकते।'

'तुम दिन की मोहलज दे दो।'

'बनों ?'

'इस हाम बड़ा लंपी में है।

'समझी।' उसने कठोर मुद्रा कर ली मुझे ही बहम हो गया था कि तुम मुझे प्यार करते हो। दरबयुक्त तुम क्या को चाहते हो ? यह क्या सभी को अपने शायन में समेट लेगी।'

'नहीं-नहीं रामा उसने विपद् कर कहा ऐसा क्यों कहती हो ?'

'बनों न कहूँ ?'

'बन्दा मैं तुम्हें सुमके रिता हुआ।

रामा के बेहरे पर सुगियों का सामर सहृण उठा। उसके मन धरोवर में कई तरह के हंस तैरने लगे। वह उसके सामने खिंची हुई बोली 'स्वरूप मेरी कृपम साकर बताओ कि इसने रहने भी तुमने किसी से प्यार किया था ?'

वह चुप रहा। उस मर के लिए उसके मननों की तपन मर यनी और उसे महसूस हुआ जैसे अपने की माटी साकर उसके बापे लंप मयी है।

'बोमते बनों नहीं ? उनने इन्जिम मरामयी के साथ तताट में ममनटे साकर कहा।

'बनों बोमू ? रामा प्यार नहीं करता है मिय कोई प्यार नहीं करना। प्यार के लिए सभी तरहके-जहनते हैं और उन सागर की एक बुँद ही लाग बदलपनों की बारबाओं को तृप्त कर सकती है।'

'तुम्हें भी किसी ने प्यार किया मैं जिर्क यह जानना चाहती हूँ ? रामा ने बापह बरे स्वर में कहा।

स्वरूप ने मुन बर भरपूर दृष्टि डाली। उस दृष्टि में किसी सेवना की मैं कह नहीं सकता। तुम उसके बुप-मंशार में ऊँचे बरंत की तरह बचत दिवायी बड़ रहा था। उसने मुझे हुए स्वर में कहा

मैंने प्यार किया था। एक सड़की थी तरसा। मैं और उठका भाई गाय-माय पढ़ते थे। प्रायः साय ही पाठे थे और उठ को मैं नहीं पठता था। धीरे-धीरे मेरा सम्बन्ध तरसा से बढ़ा। पहले हम बनबाल और भाभेगन में एक दूसरे को बनने अपने प्रेम का प्रदर्शन करते रहे। बाद में हम थोड़े प्रकट हुए।

यह पटना रामा उन दिनों की है जब मैं सैक्रिड इयर में पढ़ता था। मेरा सारा समय प्रायः कनिज के बनाना तरसा के घर पर ही गुजरता था। एक नैतिकता का आचरण बोटे हम सोच अपने प्रेम की ओर का मजबूत कर रहे थे।

यह एक पच्छी फेमिली थी। उमका बाप एक इंजीनियर था और सगकी माँ जो नगीत में लक्षि थी। तरसा के दो बहिनें और भी थे। मैं एक एक सड़क को प्यार करती थी और मुझे आश्चर्य होया कि हर बहिन दूसरी बहिन के प्रेम सम्बन्ध से परिचित थी पर उन बहिनों के बीच एक मीन समझौता था। यही कारण था कि हर एक दुगटी का राज छुपाती थी और बदाकदा मचल भी होती थी और मुझे यह सुनकर बड़ा ही विस्मय हुआ कि उमकी सबसे छोटी बहिन भिसकी उम सम समय कैवल बाहर बर्ष की थी वह भी एक पढ़ोती सीकरे से प्यार करती थी। सगता था कि इस कुमुन्ध में प्रेम का तूफान आया हुआ है और ये सभी सड़कियाँ बर्ष में ही प्यार करना नीक कर आयी हैं।

धर्मों के मीमम से सारा परिवार बस की दृष्टियों से आन्ध्र कमरों में सां बाना बाने शुरू करसा सबसे बढ़ी थी और मैं उठ बर का एक महसूस था था इसलिए हम दोनों दूसरे कमरे में बसे पाठे थे और प्यार की मचूर और स्वप्नीली बातें किया करते थे।

एकदिन अचानक उतने कहा, 'आबी मुस से पंजा सड़ाबी। मैंने उसे प्रबल नरी नजर से देखा। वह मुस्कराई। महरे अपनत्व से बोली 'सड़ाबी न।

मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। उस समय तक यौन सम्बन्धी मेरा ज्ञान झूम्य के बराबर था। मुझे तरसा से छप-छप कर मिसने में आनन्द आता था। एक अनिर्बन्धनीय मुझ प्राप्त होता था। हम दोनों ने पंजे लड़ाये। मुझे सिहरन भी हुई। रंजना लड़ाना अच्छा मया।

दिन सूखे। महीनो ने भी बीरे-बीरे करम बढ़ाये। हम में यौवन बीर यौन की सभी अच्छी-बुरी बातें पैदा हो गयी। हमारा प्रणय किसी भी ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त प्रणय कथा के नायक-नायिका से कम नहीं था। बीरे-बीरे यह राक्ष फ़रा हो गया। उसके घाप ने मुझे अपने घर में आने की मनाही कर बी पर हम रात का छप-छप कर मिसते थे। रात की लम्हाइयों में आमोषी की ओर में चुपचाप। इसके बाद मे ट्रेनिंग के लिए दूसरी जगह जाता मया। वहाँ से मैंने उसे एक प्रेम पत्र लिखा। वह प्रेम पत्र पकड़ा मया। बीर पता नहीं रामा उसके बाप ने उसको क्या कहा कि सब टूट गया। मेरे बाप ने भी मुझ से सम्बन्ध समाप्त सा कर लिया। क्योंकि मैंने उनसे भी विवाह रिश्ते का लोड़ दिया था। मेरे विभाग में केवल तरसा ही तरसा थी मैंने तरसा से कई बार मिसने की कैप्टा की पर वह बयल मयी। उसका कई प्रेम पत्र मेरे पास हैं। उन पत्रों को पढ़ कर तुम्हें लगेगा कि यह प्यार प्रतिज्ञार्थ वचन सभी बकवास है। उपहास है। उनमें कोई अमरता खराबटा नहीं। मारी या जीवन में किसी से एक बार ही प्यार करती है वह अपन प्यार को किस ताहजता से मसा भी देती है इसका प्रमाण होये मेरी तरसा के पत्र।

'तुम मुझे पढ़ने दोये ?

'बू या। तारे पत्र मेरे पास नहीं हैं। कुछ ही हैं।

'कब साबोने ?

सभी जसो। पर तुम उन पत्रों का जिक्र किसी से भी नहीं करोगी बीर नहीं उगाका अनुचित साम उठाबोगी।

माँ का गमी थी। वे दोनों कम पये। बाहर निकलते ही स्वरूप ने बचमर्भता प्रकट करते हुए कहा 'घमके मैं तुम्हें अपने सप्ताह तक बिना पाऊँगा।

भिक्षा बिलाना जरूर पड़ेगा।

जरूर।

दोनों मेरी बातों से मौमल हो गये।

×

×

+

रात।

घर में सभी सदस्य मौजूद थे। सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त। इन्दिरा आज बड़ी व्युथ थी। भिक्षा भी बार-बार इन्दिरा की ओर देख रहा था। रुपा चुपचाप सेटी हुई थी। वह सेटी-सेटी कोई चपम्यास पड़ रही थी।

मेज पर लुकी रामा भी पड़ रही थी। जब सब सो गये। तब इन्दिरा ने रामा को मो जाने के लिए कहा। रामा ने झट से कहा 'घमी मैं पड़ रही हूँ। इन्दिरा को गुस्सा आ गया। वह लुकी पकड़ती हुई सो गयी।

उनके माने ही रामा ने पत्र निकाले। पत्रों में कोई तारतम्य नहीं था। परन्तु इन पत्रों में एक मड़की के प्रणय का अत्यन्त भावुक रूप था। आज के विद्वति प्रसन्न परिवार की आँकी थी। स्वरूप का पूरा नाम स्वरूप प्रकाश था।

बहुधा पत्र—

प्राथमिक स्वामी S P

मैं तुम्हारे पीछे सब कुछ कर रही हूँ बुनिया का मुकाबला यहाँ तक कि अपने बाप का भी मुकाबला कर रही हूँ। अपने दिल

की बात माने कोई भी बात तुमसे नहीं छिपाती हूँ । मक कह देती हूँ लेकिन मुझे कुछ इस बात का ही है कि तुम हर बात मुझ से छिपाते हो । आज शोषहर को भी तुम रामेश्वर (उमकी सबसे छोटी बहन का प्रेमी) को हथारों में कुछ बातें समझा रहे थे । उससे बातें करना चाहते थे पर मैं जानबूझ कर बीच में आ बैठी । तभी तुमने कहा कि घायल किबाड़ खुले हैं बन्द कर आगो पर मैं जाँच गई थी । तुम मुझे वहाँ से टरकाना चाहते थे इसलिए मैं उठी नहीं । पर मैं तुम्हें इतना कह देती हूँ कि तुम्हारा यह पुराना हम दोनों के प्यार को भवका न लगा दे ? और इसी तरह तुम मेरे से बातें छिपाने रह तो घायल एक दिन जायदा कि मैं तुम्हारे प्यार को भी गुठा समझने को मजबूर हो जाऊँ ? और फिर इसलिए अगर बातें छिपाने की बजाय तुम मुझे बता दिया करो तो अच्छा रहेगा । मैं अपनी तुम्हें इतना चाहती हूँ प्यार करती हूँ मैं तुम्हारे बिना वन भर भी नहीं रह सकती पर तुम मुझे इस बात के लिए मजबूर कर रहे हो कि मैं तुम से बचता करूँ ? मैं तुम्हें अपना पति मान चुकी हूँ । तुमने मेरी माँ मर बी है । गाड़ी करु की तो तुम से बर्ना नहीं करूँगी । पत्र देना ।

only your queen तरला

दूसरा पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S P

मुझे घायल का जवाब मरला (उमके छोटी बहन) काबू (बिना बी) काबा आदि ने यह कहा कि स्वल्प इसलिए दो दिन तक नहीं आया क्योंकि उमकी किमो होटल में सफाई हो गयी है । इस बात को तुन कर मेरे दिल पर आरी डेम मयी । मुने मानूम है कि तुम धा का बी-बी बने तक होटल में बैठे रहते हो । क्या ये बातें घरीक आशमियों की है ? मैं तुम्हें बिगनी बार कह चुकी हूँ कि तुम अपनी इस घनी मोमायटी को छोड़ दो बर्ना मैं तुम्हें छोड़

इसी सिक्किम जब तुमने मुझे छोड़नी ही टाग लिया है तो ठीक है। करवा लुब बनारसमर्बा। रात भर होटलों में रही। मैं कुछ नहीं कहूँगी। क्योंकि वो बीबी में से तुम्हें एक चीज चुननी है और मुझे विश्वास है कि तुमने चुन ली है गंभीर सोपामटो और मार पीट "मेरी तबीयत यू ही खराब रहनी है पर जब यह बात सुनी ता और खराब हो गयी।

[एक कोने में टेंडे भेड़े अक्षरों में लिखा था]

वही तुम्हारी पवान और बायबा है कि जग जकर बाळोपा देक लिया है।

वही त्रिस्वगी की ठुकराबी हुई

Tarla

तीसरा पत्र

प्रापप्रिय स्वामी S p

जान बीबी (माँ) ने अपन को kiss करते देखा लिया। उसके बाद जब वह रसोई में आयी तो मैंने कहा कि बीबी जब तक तुम क्या कह रही थीं? मैंने यह सीरियस मूड में कहा। तो बीबी कहने लगी कि जब रहने से हुई-हुई ठीक है। काई को बगती है बेकार में। जब यह बात बीबी ने कही तब मूड खराब बख़्त था। सब बातें हूँ-हूँ के कह रही थी। फिर मैंने कहा कि बाबू का मूड क्यों खराब है? तो कहने लगी 'वह तो बीसे ही। मैंने कुछ भी नहीं कहा। मैं अपनी जान पर खेल जाऊँगी लेकिन तेरी कोई बात नहीं कहूँगी। मैं तुम दोनों कि सततियाँ देत रही हूँ। पर मैंने कहा कि हमने ऐसी क्या सतती कर ली? फिर कहने लगी कि मैं स्वरूप से पुष्पा हूँ कि मैंने बाबू से कुछ भी नहीं कहा। फिर तुम्हें बुसाया। उसके बाद बीबी ने [तुम्हें समझाया और कहा] जब पठ-उठ। उसके बाद तुम बीबी के साथ बाहर गये। मैंने बीबी से पूछा था कि

बकस है तुम्हारी क्या बातें हुई ? उन्होंने कहा कि कुछ भी नहीं । वह माझी मीन रहा था पीर बाब ही से न जाने को कह रहा था । स्वल्प कह रहा था कि इसमें बकस नहीं है । मैंने इतनी बार समझाया । फिर बकस में उन्होंने मुझे भी समझाया कि कस का कोई बात हो जाती हो मेरा ही बु ह कसका होता ? बस बकस Baby baba होंगे न बकसे बर हके सान बाब ।

only your queen

Taria

बीबा पत्र

प्रामप्रिम स्वायी S P

तुम्हें बीबी ने कहा कि सरला को नुस बाबो और घायी होनी मुश्किल है पर यह बातें उसने मुझे नहीं बताई । मेरे से तो बस कहा कि मैंने उसे समझाया था । खैर मेरे लिए तुम सभी वहीं हो जो पहले थे । वही प्यार है जो पहले था और बीबी घायी कैसे नहीं होने देती । बकर होती । मेरे हाथ में भी तो इनकी बाबा वाली बात है । बीबी का बाबा मे प्रेम है । इसलिए वह मुझ से भीठी-माठी बामती है । झारी पकड़ होयी । मैंने तो तुम्हारा हाथ पामा है इसे ही बाजीबन निभाऊंयी । बस वो बर की बात है । बकस घालाबी-भामी (स्वल्प क मी-बाप) राबी हो जायें । ही अब मैं कामेज ज्वाइन नहीं कर सकती क्योंकि दवाइयाँ बत रही हैं । बवहनमी को बबह से किसी में भी मन नहीं लगता । बिमान सुन्न रहा है । बर में संगीत सिधू भी सी सान काटने है किसी भी तरह । काट हूँगी ? हाँ तुम अब दोपहर को मठ बापा करा । सुबह और घाम बापा करो या कमी-कमी बो दार्द बजे दोपहर में बा बापा करो । हम एक दूसरे दूर भले ही रहें पर हमारा दिल तो हमेशा पास ही है । (ब्रेकट में) हाँ कस सुबह

साढ़े बाठ बजे जीजी और बीबी बाबू के साथ अस्पताल जायेंगी तो
 जा जाना। मोका मिल जाने कातिपन का। Baby baba होने न
 पकर only your queen

Tarja

पाँचवाँ पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S P

तुम या यमे इतने मुझे इतनी घुसी हुई, कि बठा नहीं सकती।
 लेकिन एक पास बात है वह यह है कि तुमने हमारे नये मास्टर
पीरीचकर के बारे में जो बातें बतायीं वह ठीक ही निकली। लेकिन
 उसमें सरला की पसती नहीं थी। छिप छुप मुत से मठसब निष्कमना
 चाहता था और मुझे अपने पास में फँसाना चाहता था। लेकिन तुमने
 मुझे पहले ही बानाह कर दिया था इसलिए मैं उसके पास में फँसी
 नहीं और उस दिन के बाद मैं उससे न बोलती हूँ न मनसे ही
 कहती हूँ। उसकी जाँचों से भीतल ही रहती हूँ लेकिन यह नाटक
 मुझे और थिफ़ सरला को ही मामूम है और किसी को नहीं। क्योंकि
 इस घटना को क्यासे फँसाने से अबतार जी की बदनामी होगी
 क्योंकि अबतार जी ही पीरीचकर जी को लामे से इसलिए इस
 बात को अपने पैठ में रखना।

बटा इस प्रकार है—

तुम्हें मामूम ही होगा कि अबतार जी ने सरला को बोला है
 दिया है और अपनी इच्छा से जयपुर में मीरज कर भी है। कुछ दिन
 पहल फरवरी में पीरीचकर जी असपर गये थे। वह एक चिट्ठी साबा
 था जो कि अबतार जी की थी। सरला के नाम। उस चिट्ठी में
 अबतार जी ने अपनी मूठी मजबूरी और मूठी चापलूसी सरला को
 दिखाई है। वह पत्र मैंने भी पढ़ा था। और कुछ दिन बाद एक पत्र
 पीरीचकर जी का आया और उसने वह पत्र मुझे चुपचाप प्रत्य से

बिया वा भीर कहा कि इस पत्र का जिक्र सरला से मत करना भीर पढ़कर वापस कर देना । मैंने पत्र पढ़ा भीर वह पत्र अबतार जी का था ।

[रामा के पत्र पढ़ने में कुछ देर व्ययमान हो गया क्योंकि इन्बिच मामी ने उठकर नसी में देखा कि बिया भीर वह रामा को सूखी दृष्टि से देखकर सी गयी ।]

अबतार जी ने लिखा था कि सरला तुम्हारी बहुत पार घाटी है मुझे तुम्हारा एक पत्र भी नहीं मिला बड़ा परेशान हूँ । मेरा पता पीरीचंकर से पूछ लेना भीर इस पत्र का जिक्र सरला से मत करना । मैं मुझे में मर डठी । ये सभी लोग कितने पतित और नीच हो गये हैं । मैंने उग पत्र का सरला से जिक्र कर दिया । मैंने सोचा कि वायब वह सरला के बारे में खुपचाप मुझसे पूजना चाहते हैं अगले दिन मैंने बोरी से कहा कि मास्टर जी इस पत्र का क्या मतसब है तो कहा कि आप बताइये । मैंने कहा कि अबतार जी सरला के बारे में पूछना चाहते हैं तो पीरी ने कहा नहीं । इसका मतसब तो बिलकुल भीषा है कि अब वह आपकी भी मैं खुपचाप सुनती रही । फिर पीरी ने कहा कि इतना ही नहीं अबतार जी से आपका लिए बहुत कुछ कहनामा है । आप मेरे घर इतवार को बनसी इन-इन टाइम आना । मैं फिर आपको रात में नाइकिम पर छोड़ आऊँ वा भीर बार-बार कहा कि आप बरेसी आना । मैंने कहा कि मास्टर जी बोबी के साथ आ जाऊँ तो ? कहा कि नहीं बरेसी दस-दस टाइम पर आना । यह बात सुनते ही मुझे फौरन तुम्हारे बामे पर पार माह मा मय कि यह आदमी अच्छा नहीं है मास्टर के नेप में भेड़िया है होपियार रहना । फिर मैं गया मयो कि बात कुछ नहीं है, यह गुरु ही कैरे से मतसब निकामना चाहता है । आते-आते पीरी ने फिर कहा कि अच्छा आप चारोंबी म ? मैंने कहा कि मास्टर जी नाचूँगी । अगले दिन मैंने मास्टर जी को फन्कारा ।

मैंने कहा कि मास्टर जी बाप हाथ में भा जाइए । सबजार भी को जी कतु बीजिए । यदि बाप के पुत्र होते तो चायप में उन्हें बप्पड़-मार बैठी छहोने मरी सरसा को पोछा दिया है । मैंने कहा कि अब मैं कमी भी बाप से और सबजार जी से कोई बिट्टी नहीं लूँगी । इस पर पोरी ने कहा कि बाप को मेरे घर आना ही होगा और मेरे कई प्रश्नों का उत्तर देना ही पड़ेगा । क्या कक स्वस्व उमरक पास सरसा क कर्द प्रेम-पत्र जो है ? मैंने कहा कि मास्टर जी मरा जो फंसला वा सो मैंने मुना दिया । मैंने कहा कि घर नहीं आऊँगी बस । उस दिन के बाद पोरी मुझे देखी निगाह से देखता है । कमी पूछ लूँ बताना है पर मैं उससे नहीं बोलती । अभी वह बसकर गया हुआ है अब मेरा कहना है कि तुम उसे कुछ कहना-मुनना न ठोका-पिगी भी मत करना और यह बात हरदिन किती और से मत बताना । बापे यह कुछ न कहेगा और अगर कहेगा तो मैं अब के इसे बच्ची तरह देख लूँगी । बेघात सबड़े से क्या छयवा ? और हाँ अबतार भी यहाँ कोई Examनेने बापे है । सरसा उनसे मिलने कमी भी । वह मुझसे कुछ नहीं बोलती । बहुत दुर्गी है बेचारी । मेरे साथ तुम ऐसा न करना डिपर ।

बच्चा और इस उम्मी के पट्ट सूर्य (विमला का प्रेमी) ने भी बड़े-बड़े नाटक किये—घर में घुसने के लिए । बड़ी-बड़ी मिठाइयाँ मेजी बाबू को प्राइवेट रूप से एक टैबल दिखाया । अभी भी वह आता-जाता है । *only your guests*

Tarla

छठा पत्र

प्राथमिक स्वामी 8 P

तुमने रात की बरामद में मिलने के लिए कहा और मैंने भी हाँ मर ली क्योंकि तुम्हारे आतिथ्य में बापे बहुत ही रोज हो गये थे । बेचिन फिर एकाएक बर गयी । यह हररोज का मिलना कहीं

हरबाह न करे। बिमला उन नालायक मूय में यही पर हर रोज
मिसती है ता उन्का क्या अंजान है रहा है? नार पर में बर्बा हो
रही है। और बूस क फूस वागी हातत बसत है। और यह हास्य
घायब करी नहीं होगी। लेकिन अब मैं बरामदे में मिसकर मश की
बदनामी नहीं न करती। मेरा नाम बदनाम होया तुन्हार नाम
बदनाम होगा। बुनिया की निमाह में हम ऊँचे उँचे तो हनार
माँ-बाप शायद बादिर में घाबी क मिए भी हाँ कर सें। उही निमने
की दात्र मो बाज बहुत बख्शा मीका मिसा पा। क्योंकि मैं तुम्हें
बाहर जाते हुए समझाने बायी और तुमसे आसिनन को कहा पर तुम
नहीं माने। तुम हर राज इस टाइम आ जाया करा। इस समय पर
कोई नहीं रहता। बीबी सेटी रहती है। फिर क्या है एक आसिनन
हम आराम स न सकते हैं। उबर दरमदे में मिसने की बात सो
कही बाबू मा बाबा मे देख मिया तो क्या होगा? समना है तुम फिर
सूर्य की संपत्त में आ गये हो। घाबी को छोड़ कर बरामदे वाली
बात कहते हो? तुमने कहा था कि घाबी फरेंगे baby-baba होंगे
और अब क्या बन्त पये हो? बाज मैं बर्बा दुली हूँ बन्त बुन्धी।
पश्चोत्तर घीम देना गीम।

हाँ नहीं तुम्हारी

Taxla

साठवाँ वच

प्राणप्रिय स्वामी S. P

बाज बीपहर में बाबू दरतर से आये। संभका टाइम था। तब
उग्हूनि बीबी ने कहा कि आना आतो। बीबी ने कहा कि नहीं
आऊगी मुझे बरकर से आ रहे हैं। बाबू ने गुम्मा होकर कहा कि
बरकर नहीं आयेगा तो और क्या आयेगा? न मुबह साया न
बन राउ गाया न पब गा रही हो। इस पर बीबी रोने लगी और

कहा कि काऊ वहाँ जब बीताव ही माँ को बारमे पर उठारु हो तो क्या लाऊँ ? बाबू ने भी अपना मिर फोड़ दिया और आगे जाने पर उठ गये घर करीब तीन बजे बाबू ने मुझे धकेले में बुलाया और कहा कि तू बीबी से माँको माँग ले । बेकार में तेरी माँ न आ रही है न बी रही । मैंने कहा कि फिर वह पुस्ता हाने लगेगी तो बाबू ने भी कहा कि तू बिमला से वह कहलवा देना कि तरना बहुत दुखी है, फर्मा-फर्मा । कम सेकिल मैंने तोषा कि अगर माँकी माँकी तो फिर बीत जात होगी और फिर लड़ाई-बसे होंगे । जब बीबी सोकर उठी तो बाबू ने कहा (बीबी को रोव विलाने के लिए) देखा बिमला-तरना तुम सबको बीबी को आज्ञा माननी पड़ेगी और बीबी तुम पर बीबी बकड़ कर बाहर जाती मयी । फिर मैंने बाबू से कहा कि बसलो यों ही ठीक है बोलने से फिर बेकार बात बड़ेगी । कम यह बटना है । मछल में बीबी बिडी हय बात से मेरे से क्योंकि कम बीगहर में पुस्ते से घरी हुई थी । मैंने बीबी से पूछा सिवा कि घाजकल काति चाओ कहाँ है ? (क्योंकि माँ का चाचा से अद्वैत सम्बन्ध था जिसे तरना जानती थी) तो वह तुमक बनी और कहने लगी कि जाती या तू भी अगर वह अच्छी है तो ? कम जब तुम खीम ही पओतर में लिखना कि मैं क्या करूँ ? माँकी माँ या नहीं ? जब ठा तेरा मूड ठीक है न । पुछ हो न ? हाँ एक बात और है कि सुबह के और १ बजे के बीच में तुम जा जाया करो और साच में किमी बोस्त को लाया करो क्योंकि तुम्हारे बकेसे का जाना ठीक नहीं है क्योंकि ये किन्ती से बोलती नहीं तिषाम घरना के । बिमला जाती जाती है । पाली बैठे फिर बिमान खराब होता है । उच हँस बोलने में बस 'पात' ही जावेना । baby-baba होंगे न ? पओतर देना ।

तिर्क बही तरना तुम्हारी ।

बाठवाँ पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S P

कम चाहे तुम सरला स पुछ मेना मने रहने को कितनी बेप्या
 को सेकिन क्या कहे मजदूर थी । सारा घर एक तरफ में जानेगी एक
 तरफ । मुझे बाबू पर रहम आ गया । तुम्हीं कहो कि ससारा में इतना
 दुखो इम्मान है कोई ? उसके चारों ओर बाप ही बाप है । बीबी छिनास
 हर एक बेटी प्रेम के पोछे दीवानी लोगों के ताने सच मुझे उन पर बड़ा
 रहम आया । सोचने लगी की हम सब इस घर की औरनें बापनें हैं
 हम मत इम्मान को सा रही हैं । मेरा बिल भर बापा । मने
 कहा कि आप सब सिनेमा जाती बाया । मैं घर की देगभान एक गी ।
 सकिन बिमला नहीं मानी आसिर मुझे जाना पड़ा । मैं तुम्हें बिदबास
 दितानी हूँ कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ और हमेशा-हमेशा तुम्हारी
 रहूँगी । हम जन्म में ही नहीं जन्मे जन्म में नी । मैं रोज मदनान के प्रायंन
 करती हूँ । और, हाँ तुम कमला वाली बाप के बीच में मत बढ़ना—
 बेकार में । और न मैं ऐना होने लूँगी । यह ता मने भी तुम से
 बहा पा कि यदि तुम कमला से ज्यादा मन हँसा-बोला करो क्योंकि
 वह यह चाहती है कि किनी तरह तरहको स्वप्न स मकरन हो
 जाय तो मैं इच्छा को अपने बंदुस में फँसा लूँ । तुम मत पढ़ना । हम
 दोनों किन्ने लूँगे और हैं और रहे । छोटा सा घर हाया ।
 baby होदी । baba होमा । तुम ब्याम (घाम) को जब पर
 आबोये बेबी—बाबा बोलदे कि पापा थी पा बये । मैं तुम्हारे लिए
 नाम बनाकर तैयार रखूँगी तुम आठे ही मेरे तर पर प्यार से
 हाथ फेरोये और मैं तुम्हारे सीने से लप जाऊँगी । तुम बहन
 बचदे लडके हा । बस अब जल्दी पढ़ लो । तीन साल मूजर जावें ।
 हाँ मैं कम वह बकिनाम नहीं बहनुँगी । हाँ एक बात यह है कि तुम्हें
 बदर नूरं मिल भी जाय तो ज्यादा मन बोलना । अपनी मोमानदी

पर पक्का मत घाने दो। बुद्ध (बुध) को पिक्कर बरूर बसना। कल भी बकेसे जी नहीं लया। लेकिन क्या करूँ मजबूर थी। मैं भाभी को के पर बरूर जाऊँगी। १५५ में घामर रोम हे शिषा करूँगी। बालिनन बर मैं मीका पड़ा ठव हे दु थी। एक महीने बाद तुम्हारे जाने के बाद क्या हास होया। मैं तुम्हारे बिना मर जाऊँगी। पर। इच्छा होती है कि हमेशा तुम्हारी नौरी पर सर रहे बीठी रहूँ।

bady papa होंगे ना ? जकर होंगे।

tarla

[भापा की गलतियाँ सुनारना ठीक नहीं समझा]

रात बहुत हो गयी थी। रामा ने अँगड़ाई के साथ एक उबासी ली। धीरे से खो-लीन चुटकियाँ बजायी। जब उसे बिरिठ हुआ कि समय काफी है और वह पत्नीसे से लगपन है। उसने घूटी पर टंके हुए एक पनसे से अपना पसीना पोंछा। वह बैठ पयी। उसकी पाँखों में के गभी प्रेम-यग्न बूम रहे थे। फिरने उत्तेजित धीर कितने मजुर। इसने बाद उसे स्वल्प की याद हो आयी।

तभी इन्दिरा भाभी पेशान करने के लिए उठी। रामा उसे देखकर मन-ही मन मुस्करायी। आज भाभी को बहुत पेशान आ रहा है। इस बाग्य में निहित उसकी दुष्टता उसके कपड़ों पर मुस्मान बन कर फिरक उठी जो अन्धेरे की बजह से इन्दिरा नहीं देख पायी। उसने भाभी से कहा "मुझे नींद आ रही है तुम रोघनी बन्ध कर दो।

इन्दिरा से रोघनी बन्ध कर दो। रामा को नींद नहीं आयी। उसके मन-यग्न पर स्वल्प आने लगा। वह कितना हठमाना है ? आज तरला उससे बोलती नहीं। आज वह उसके प्यार में बिना पाती

की मछली की तरह लड़प रहा है। सब कुछ बह द्रुत बनाया है।
 लेकिन मैं उस प्यार प्यार करूँगी मैं उनका बकर साथ निनाऊँगी।

धीरे मैं एक निर्भीक बनूँ उन पत्तों को पकड़ कर मोच रहा
 हूँ कि वे पत्र एक सजीवि कास के एक परिवार के संघर्ष की बहनी
 हैं, प्रतीक हैं। नयी धीरे पुरानी मान्यताओं के बीच में बड़ा ही
 बजार बाजार का दौर है। हम नहीं जानते कि य पुँबीभावों बिहिनियों
 से समय बदलते हुए मान्यताओं में किंग परिवाम से टकरायेंगे।

मुझे चारों धीरे एक सर्वतोप नजर आता है और यह सर्वतोप हमारे
 धारण को बड़ी तेजी से बह रहा है। पुरानी मान्यताएँ गड़बड़ हो
 रही हैं और नयी पुनर्जागरण या तो हमारे जीवन में धीरे-धीरे
 मान्यताएँ प्राप्त कर रही हैं। धरती की माँ परिवर्तित है। बदला
 अपने दिग्गज के साथ अनुचित गम्य है। उसे उनकी सभी लड़कियाँ
 पानती हैं और उनका प्रतिदिना यह हूँ कि सभी लड़कियाँ पात्र
 भुपात्र का दिये बिना प्यार करने मयी। उन्हें किसी का भय नहीं।
 उनके वे पत्र उनके जीवन को एक चिरन्तन साथ में चलने के लिए
 दिवस कर लड़ते हैं।

धरे माह। मैं भी वहीं मान मानों को उभेग देने बैठ पता।
 राधा गीते का बहकन करने में निरन्तर है और इन्दिरा मुँ की माँग
 मेहर बगदाइलों पर बाइबलियाँ से रही है। उनकी संघर्षइली
 एकदम मुँदी थी। धीरे-धीरे गुगुगु हूँ। रामा के दोनों कास पने
 के बात को तरह लड़े हो पने।

कपरे का भासा एक बनप उगाता होगा है।

उस उगात में रामा की बीने दुस मन्की बई बीबीं पर पड़ी।

मनसाणि उसकी उल्लेखना लुग कर कर गरी। प्रतिद्वेष की
 हर्षितम लपके हूरय में अतिउ हो पनी। नानी ने रुना से दिन कर
 उनका बनमान किया था। वे दोनों दिन कर उसकी बहनी है। वह
 माभी बड़ी धींगत है। इन्की बरर दया बनाना बाहिए।

इतना बहकर वह धीरे से उठी। लपक कर उसने बिजली बजा दी। फिर अग्नेय किया। भाभी और भैया की सांठ रक गयी और वहाँ राय भर के लिए ऐसा सम्नाटा छा गया जैसे उस सम्नाटे में तैरती बुटल में सबका बम बूट जायेगा।

रामा ने फिवाड़ गोले। बाहर जाकर पेछाब किया। बहुत सुध भी पर उसने अपनी सुधी को जाहिर नहीं किया। वह जनमान बनी हुई बापस सो गयी।

मैं जानता हूँ कि उस रात इन्दिरा सो नहीं सुधी। उसे अपने और अपनी मजदूरियों पर तरस आ रहा था। यह कैसा जीवन है? यह कैसा जिव्हा रहता है? उससे तो फुटपास के मित्तारी ही अच्छे। निश्चित होकर पाठे-पीठे और मोठे तो हैं। कभी-कभी उसके मानस में हिंसा का सुप्न सठ जाता था और उसकी इच्छा होती थी कि वह उठकर इत रामा की बच्ची को पीटे और उसने मम-ही-मम उसे पीटने का अभिमत भी किया।

सुबह से ही उसका मूड बहुत उराब हो गया था वह सिर बुसने का बहाना बना कर सो रही। रूपा ने पचा के लिए पूछा उसने ना कह दिया। बिलोचन को जिस बघा में बैठा था उस बघा में उसका यह साहस नहीं हुआ कि वह रामा से भी उसकी बजाय बहिन है मगर मिभा सके बात यह होटस में चाम पीने जसा गया। रूपा को बहस जकर हो गया था कि कुछ हुआ पकर है। यह उचामी और यह तनाब? पर वह सरम तक पहु जने में अघमर्ष रही।

रामा सबा की तरह पब रही थी। मां स्नानादि से निवृत्त होकर रामायण का पाठ कह रही थी। रूपा की इच्छा न होठे हुए भी उसे बूल्हे के बागे बीरना पड़ा। रेवा ने उसका छाब बिबसतापस दिया।

यह सही सही था कि तीनों सड़कियाँ बरत भी बरेलू काम करना नहीं चाहती थी। सबकी यही इच्छा होती थी कि उन्हें पका-पकाया भिन्न जाय और वे बाराम से पेठ भरनें। केवल इन्दिरा बूल्हे के बाये

बारहमासों बैठनी थी और उसकी अनुपस्थिति में मैं जब कि उसके पास समय होता चाहिए। क्योंकि वह व्यर्थ की बातचीत और पूजा वर्जन में बहुत व्यस्त रहती थी।

उमा ने सोचा कि उसकी उपस्थिति जब उसे चूम्हे का नाम सोंप सकनी है इसलिए उसने वहाँ से छिपक जाना ही बख्शा समझा। वह उसी से कपड़े पहनने का बहाना बना कर जाती गयी।

उसके जाते ही इन्दिरा ने करबट बरनी। रुपा ने उसके लिए दुबारा नाम बनायी। चाय लेकर उसने पास गयी। उससे पीने का अनुरोध किया। वह उठी। चाय का बूट लेती हुई वह रुपा का इस दृष्टि से देखने लगी कि जैसे वह कुछ उसे कहना चाहती है।

रुपा उसकी दृष्टि का अनिश्चय समझ गयी। उसने बरपन्त बीमै स्वर में पूछा "कबीरज ग्यादा खराब है मामी?"

नहीं तो?"

"इतनी सदास क्यों है?"

"मेरी एक बात मानोयी?"

"कहो।"

"यहाँ एक परी तनया दो।"

रुपा सारा बिस्वा समझ गयी और वह यह भी जान गयी कि मामी का स्वभाव ह्मर दिन प्रतिदिन इतना बिड़बिड़ा क्यों हो रहा है? उसने मामी को बारबस्त करले हुए कहा "परी तन जायेगा।"

परी तन गया।

परी!

बचपुत्र यह परी ही मात्र हमारे जीवन की गन्तव्य की बच्चार है। परी न हो या हम बिड़बे समहाय हा जारें? ह्म इतने मर्द और दुःख दिगने लगे कि ह्म बारिप लोपों को भी मात्र करदें!

रामा बायीं पूजां फुमां होती हुई उसको मृदुलियां रीर कमी छिप-की तरह तनी हुई थीं। उसने आठे ही हाथ की पुस्तकें मेज पर फेंकी थीर बहु पेट क बात पर सैट मयी। मां ने पूछा 'बया बात है रामा लबीयउ टीक है न ?

"मेरे तिर में दर्द है।

"बयों ?

"मैं बया टाक्टर हूँ ?" उसने बिड़कर कहा 'दर्द है बर वर है।"

उसने इम्बिरा की धोर मुद्रातिव होकर कहा 'बहु ! बर एक कप बाम बनाकर रहे दे दे।

'रूप नहीं है।

'रूप मही है। बरा होटल के मंगभासे।"

वैसा नहीं है।

तू चुप रह मां बयों अपनी बबान जोबती है। यह क्या को बिभाठी है धोर क्या इसे पिभाती है। मैं भी इसकी सोसी मरने मयूँ तो यह मुझे भी अपनी पलकों वर बिछाये रहे।"

'ऐसी बरिमादिनी क्या की मैंने नहीं देखी है' बहु उनका लाकर देनी है धोर मैं उससे धारा वर का धर्म बबाली हूँ। इम्बिरा ने कड़क कर कहा।

उस ठगला में रेसमी छाड़िबां नहीं पहनी जाती ?"

'बज्जा मेरी के पटी-पुरानी रेसमी, छाड़ियां भी तुम्हें नहीं सुहाती।" यह कह कर बहु रिरिबाने लयी "मैं करमजती हूँ हो ऐनी दम वर का सुब नहीं है मेरे भाग्य में। मेरे बरव पर यहाँ के बाबमियों को बिबड़ा भी नहीं सुहाता।"

धीरे धीरे वर का बाठाबरन निपाछ होके बया। मां ने अपनी बैटी का पथ सिया। बाबियों का स्तर भी कमी-कमी बहुत ही नीचे उतर जाता था। तनी बिबोजन ने प्रवेश किया। वर के धर्म बाठ

मरम को देखते ही उसके बेहूरे का रस बदल गया। कटाखता उसके बेहूरे को बचने लगी। वह मर्बे कर बोला "यह किस बात का सपना है?"

बस दोनों गगङ्गामु रोने लगे।

मैं पूछता हूँ बाकिर बाग क्या है?

रामा ने झामू पीछे हुए कहा "निरे खिर में दद या मीने मामी से एक प्यामी बाय मांगी। मामी ने कोरा उतर दे दिया कि दूध नहीं है। अब मैंने होटल से मसजाने क लिए बहा तब मामी ने वीने न होने का सहाना बना लिया। बात खतनी ही हुई।

"यह बात ऐसी तो नहीं है कि जिसमें तुम दोनों पर को खिर पर उठानी। यह उन दोनों को समझाने क स्वर में पीता दर में घांति बरती है और घांति क कारण ही मदनो जाती है। जहाँ कनह वहाँ बाक्यों। उतने निहायन ही उनसे उ के डंभ में करा।

इन्दिरा न मुबकिया मरते हुए करा "मुझे बकिराम का दुग हुआ। वीना हाते हुए मीने रामा की बात तक ना नहीं कहा।"

"अब सब तुम दोनों गाँव रहो। जहाँ मैं दूध लाना हूँ। तुम बाय बनाओ।"

बाय बन लगी। रामा बाय पीकर गा लगी। मैं उसके पास गया। उतने खिर पर हाथ रगा। यह मधुम-प्या से खीर पड़ी। अपने देता मीने पुबधारते हुए कहा "बकराबा नहीं रामा में कमरा हूँ। यह हाथ मेरे हैं। तुम्हारे दुग में मेरा हृदय इति हो पना है। बनाओ मात्र तुम सदाय बरों हो?

उनको घाँटों में कोने भीम गये। कुछ बियरियों के लूछन उतने बन्नाम में मुमड़ कर घूट गये।

मीने उमे बापना बहने हुए कहा "बकराबा नहीं मन की बात करने से मन हफका हो जाना है। बोनी क्या बात है?"

बात यह है कि आज स्वरूप मे पैरा प्रौर मेरे प्यार का अवमान किया है ।

'कैसे ?

'उसने मुझसे वायदा किया था कि मैं तुम्हें मुझके दिमाक का । मैं आज उसके पास बची । उसने मुझे इधर-उधर बुकाओं पर बुमा कर एक बम हाम डाक दिए ।

'वायद उसके पास वैसा न हो ?

'वैसा उसके पास बकर है । रामा मे पूछता कि साब कहा 'वैसे न होते तो वह बो सो अपने मामी की कहाँ से देता ? असल में बात यह है कि मैं बहुत निरमावी हूँ । रूपा बहुत ही सुमावी । मुस से वह मावी भी गुल्पर नहीं है पर उसे सभी प्यार करते हैं । कभी कभी मुझे रूपा पर बड़ा मुस्ता जाता है । इच्छा होती है कि उसे खरी खरी मुता हूँ ?

'ऐसा नहीं करना चाहिए तुम्हें ।

'क्यों नहीं करना चाहिए । क्या वह नहीं जानती कि स्वरूप मुझे प्यार करता है । उसने कई बार मेरी प्रौर स्वरूप की बातचीत सुनी है । वह बातचीत उर्वया प्र म भरी थी ?

'आयब यह तुम्हारा भ्रम ही कि उसने तुम्हारी बात सुनी हो ।

जीती मरुती निपचना सरल नहीं है । वह कड़क कर बोसी 'वह सब जानती है और जानकर अनजान बनती है । उसकी इच्छा हो रही है कि वह सभी को धुस ही पटाते ।" बुबा उसके बेहरे पर इध ठरह माची जैसे किता मे उसके बेहरे को रंय दिया हो । मैं चुप रहा और उसकी मौलों में नाचती हुई एक बाजार प्रौरतों वाली परछाइयों को देखता रहा । वह पल भर के बाद बोसी 'मेरा सुख किसी को नहीं सुहाता । मैं सबको असह्य बनती हूँ ।

शांति रखो । जरा अपनी मामी की भी स्थिति देखो । बचारी को कुस से सोना भी गचीव नहीं होता । बाधिर वह भी बीरत है ।

बहु चाह कर भी किसी से भीठा नहीं बोल सकती । तुम्हारा पर
बप और यौन से बहुत पीड़ित है ।”

‘पीड़ित है तो रहे । मैं किसी की परवाह नहीं करनी । मैं
स्वल्प की भी परवाह नहीं करती । यह समझता है कि मुझे उनके
दिवाय कोई भी सड़का नहीं मिलता है । हूँ ! मुझे तीन सौ छापन
सड़के मिलते हैं । क्या कमी है मुझ में ? और तत्काल उसकी क्षमता
में एक मने सड़के की तस्वीर बूम मयी । यह लड़का एक बहुत
बन्धे सूत्र-स्टोर के मालिक का बेटा सुनील । कालज में भी ए
पढ़ता था और सूत्र फैशन करता था । नयी डिजाइन की बुस् और
कम-मोरी की पैंटे पहनता था ।

मैंने उसे समझाया ‘रामा ऐसा निर्णय उचिन नहीं । यह
जीवन को धरमस्य परम्परामों की ओर ड़ेसता है ।”

‘स्वल्प-मस्वल्प अपने अपने मन के होते हैं । एक पान किसी के
लिए अच्छी होती है, वही बात दूसरे के लिए बच्छी नहीं होती ।
मैं स्वल्प से सम्बन्ध विच्छिद कर गी । जोह ! समने मुन बिग तरह
दुकानों क भाये घुमाया । बच्छी-बच्छी सटापों की दुकानें । मैं प्यासी
दुष्टि से बमकडे-बमकडे गो रमों में रग हुए मुमकों को देखनी रही ।
सम दुष्ट मे मुगे यह पढ़ने नहीं बताया कि मरे पाम वैसे नहीं है । मुझे
पहरी भास्वीयता मे कहता रहा पहल डिजाइनों देखो । घूम घूम कर
देखा । जं पनद धाये मुझे बता बो । वही मुमरु मैं तुम्हें दितमाड्वा ।
यह बच्छों की तरह मुझे प्रसोनन देकर बहुताता रहा । मैं बड़ी लुघ
होनी रही । बातिर मैंने एक बोड़ी लुमका पतंद कर लिया । यह जयादा
म हगा भी नहीं था । समने कहा पढ़ने हम एक कव कॉपी विदेगे ।
हम दोनों कॉपी पीने एक अब्द रेन्वा में घुमे । रेन्वा भीतताप
निर्वाजित था । हमने कॉपी के पहले बुघ नारना भी किया । एक-एक
पामनेट घोर बो-बो स्टाइम । मैंने सोचा यह एक मेसक है और
बु नारा मी । आज मैं उगरी प्रेषिका हूँ और कम उसकी पत्नी भी

बन सक्ती हूँ। उसका साथ चाम पीठे हुए मुझे इतना ही पर्व हुआ
 जितना किमी मदान घोड़ा की प्रेमिका को मम्पकाम में होता था।
 हम दोनों ने बड़े मजे के बने दाज पुकारे।

रेखा से बाहर निकले। बाहर निकलते ही चतने मुझसे
 अप्रत्याशित यह प्रश्न किया मेरी एक बात मालोमी।

‘बकर मानू पी।

पहले बामबा करो।

मुझ पर बिदगाग नहीं है ?

‘बहुत है।

‘कहो।’

मैं तुम्हें झुमके बाज नहीं दिखा सकूँ था। भाज मेर पास फँसे
 नहीं है। लेकिन मैं तुम्हें पाँच दिन के बाद वे ही बालीव रूपए बाजे
 झुम + बकर बिना हुआ।”

मेरी बाधाओं पर दूनुपाउपाठ हो गया। मैंने अपनाक उसकी बार
 देखा। मुझे मैं मैं लाग हो गयी। इच्छा हुई कि मैं उसे जोर से
 लिङ्क हूँ ? पर मैंने अपने को जगन किया। हठीसे स्वर में बोली
 “नहीं मुझे अभी ही बिताओ।

‘अभी कहाँ से बिताऊँ ? अभी मेरे पास इतने फँसे नहीं हैं।’
 और स्वरूप ने अपना बटुपा धोल कर बिना दिया। बास्तव में उससे
 मुझिक्त से पाँच-अ रूपए थे। मेरे तन मन में आग ली मना गयी।
 मैंने उसे एकठाँठ में लेकर कहा ‘तुमने मुझे बिचौना समझ रखा है।
 तुम मेरी भावनाओं को इस बेरहमी से कुचसत हो ? स्वरूप। तुमने
 मेरे नाम अन्धकार समूक नहीं किया है।

मानता हूँ और उसके लिए अपना माफना भी करता हूँ। क्या
 एक इतर पर से किसी भी तरह की आर्थिक सहायता नहीं मिलती
 और छतर हिन्दी के प्रकाशक लेखक की प्राथमिकता पर एक पैसा
 भी नहीं देते हैं।

“कित्त तुमने इतना नाटक क्यों रचा ?”

‘सोचा अगर तुम एकाएक इन्कार तुनोगी ता बहुत मुस्का होबो यी ।’

‘तुम्हें मुझ से डर लगता है ?’

‘हाँ ।’

‘मूठे कहीं के’ ‘तुम यह नहीं जानते कि हम नाम बहुत बिरे हुए हैं । हमारी दुर्दशा की हँसी तुम जब चाहो तब उड़ा सकते हो ।’

‘नहीं-नहीं । तुम्हें इस तरह नहीं सोचना चाहिए । मैं तुम्हें बड़ी बारर की दृष्टि से देखता हूँ । मजबूरियाँ हर एक क पीछ सपी हैं । बाज कीन है ऐसा वो किसी न किसी तरह मजबूर नहीं है ?’

‘अकिन हम बहुत ही मजबूर हैं । तुम हमारे घर की हर मुठ बाठ को जानते हो ? तुम एक साथ हम बीनों बहिनों को प्यार करने हो ?’

‘नहीं । मेरी रुपा से केबल बोस्ती है ।’

‘मुझ को प्यार करते हो ?’

‘बहु चुप रहा ।’

‘बोसते क्यों नहीं ।’

‘करता हूँ । पर दरअसल बात यह है कि तरसा से सम्बन्ध बिच्छेद होने के बाद तुम पहनी सककी हो जिमने मुझे निपट दिया है । कित्त भी मैं नाम बढ़ा हमा बक जाता हूँ ।’

‘जो ?’

‘क्योंकि मैं तुम्हारी आश्चर्याएँ पूरी नहीं कर पाऊंगा । मैं एक साधारण आत्मी हूँ । कित्त मुझे बार-बार यह लगता है कि मुझे मैठी तरसा एत दिन अगर मिल जायगी ।’

‘ओह ! मैंने तुम से केबल इतना ही कहा थीर जती जानी

उसने मुझे नहीं रोका। फिर मैंने सोचा कि वह मेरे जीवन में कुछ की एक चिन्मयारी भी नहीं बसा सकता। और मैं छत्र घर बमारों में पसती रहूँगी। सिक्किम उसने वे दो लो रूपए कहीं से लाकर मामी को दिये? मैंने इस पर बहुतेरा सोचा। मुझे निश्चास हो गया कि यह मुझ से झूठ बोलता है। यह मुझे मुपके दिनाता नहीं चाहता है। इसे मेरे प्यार की कोई ऊँच नहीं। मैं इसी उनेकबून में कर्नाट प्लेस घूम रही थी। मेरा मन कहीं नहीं समता ना और मेरे पास बस के किराये के अतिरिक्त एक भी पैसा नहीं था। अपने आप पर मुझे बहुत नु ससाइट था रही थी।

तभी मैं देखती हूँ कि क्या स्वल्प के साथ है। मैंने दूर से देखा-बोनों बहुत प्रसन्न हैं। मुझे फिर मुस्ता था क्या 'इसे बप भी कुछ नहीं और मैं इधर चल रही हूँ।' मैंने एक जासूस की तरह उनका पीछा किया। कई बार मेरी इच्छा हुई कि मैं उन दोनों के सामने जाकर उन्हें थोका हूँ। सिक्किम मैंने ऐसा नहीं किया। वे एक रेस्त्रा में बैठे। वह रेस्त्रा बक्षिया ना बत मैं एक साधारण मद्रासी रेस्त्रा में चुप पयो और बस्ती-बस्ती कौफी पीकर बाहर निकली और उन दोनों की प्रतीला करने लगी।

घायल बगटा बीठ गया। वे दोनों नहीं बाये। मैं साहस के साथ उस रेस्त्रा में पयी। दृष्टि बीकामी। हूएन। वे दोनों बहा नहीं वे। मुझे निश्चास हो गया है कि जब वे दोनों भीतर घाये हूँपि तब उन्हें अयह नहीं मिसी होगी और वे थोड़ी देर इस्तजार करके चले गये होंगे।

मैं विचलित हो बयी और अबसर मिसने के बाद हारे हुए बुबारी की तरह मैं कुछ उल्लेखित भी हो पयी। मैं इधर उधर घूम रही थी। अचानक मेरी दृष्टि क्या पर पड़ी। वह अपनी बपल में एक 'पूठ' का कपड़ा बबाए हुए भी जो काबज के बंते में था।

मुझे देखते ही वह हैरान हो गयी। मैंने अचरज से पूछा 'बाब नु बपतर नहीं पयी?'

“यही भी पर बीच में ही आ गयी।”
“क्यों ?”

“यह कपड़ा खरीबना था। परसों मेरी बर्प गई है न ?”
“बरा हेतू ?” उसने मेरे हाथ में कपड़ा समा दिया। मैं उसे देखकर दग रह गयी। काली निस्वार और पीसा कुर्ता। बाह ! क्या बीच करेया ?”

क्या भाव खरीया ?

“मुझे नहीं मामूम।”

“क्या मुक्त का भिमा है ?”

“नहीं।”

“किर कहीं से आया ?”

“स्वरूप ने दिसाया है।”

“उसके पास तो पैसा ही नहीं था।”

“यह तुम्हें कैसे मामूम ?”

“मैं बोड़ी देर पहले उसके पास थी।”

बोह ! वह एकदम उदास हो गयी। “रामा ! अपने भापको भेजाना क्यों अपने जीवन को तरक बना रही हो ? यह स्वरूप बहुत

बख्शा मेघक है पर यह । रामा तुम अपनी शिठ भयनी पढ़ाई किया करा। अभी तुम्हें बहुत कुछ करना है। बहकने से कोई लाभ नहीं होया। जीवन बरबाद हो जायेगा। यह उम्र की अपरिपक्वता बड़ी ही गहरताक हापी है।

मुझे क्या का उनमें बख्शा नहीं सया। यह सब सोय जो काम पुर करते हैं उमर लिए ही दूसरों को मना करते हैं। गराबी घर के बरतुपों पर भोगा है अकारा मुझ न देखने की लगीहन देगा है और दुमग खरिन और मैनिग की बाने करनी है। यह क्या दिखन्ता नहीं ? मैदिन मने अपने कुछ नहीं कहा। मैं बुरबाप बनी जायो। सोचनी रही—यह मेरी बहिन एक सोदानटी-नय

विमोचन की ओर बढ़ा कर कहा 'सीलिए, नहीं बूम माइए । आज मापकी बहिन की बर्ष बाँठ है न ?

उमने बह मोट से लिया और चल पड़ा—उसी बेरया के बत्तास की तरह जिसकी कोई बहिन बेरया हो । और बह उसकी कमरई पर भीबित ह। । उसका मज पीड़ा-बायक ग्तागि से भर गया । इन्हीं बिचारों की छत्तेजवा में बह मनी के बाहर हो गया । परिचित होटल में कोई फिन्नी शीत बज रहा बा । किमी बिदेयी पुन पर आचारित यह नीत एक बार हर एक का मन अपनी ओर आकर्षित कर लिता था ।

×

×

×

दूसरे दिन रामा खुबह ही बबुल का पातुन भेकर बैठ पर्या । स्वरूप क प्रति उसकी बुगा खरम सीमा पर पहुँच गयी थी । बह उसे कुछ बमत्कार बिलाना चाहती थी । बह उसे यह बताना चाहती थी कि अगर बह किमी से प्यार करे तो बह लड़का उसके प्यार में केवल मुमके ही नहीं सभी कुछ धपप कर सकता है । बह बानुन कर रही थी और उसकी नजर सुनील के कमरे की लिङ्की की ओर थी ।

बोड़ी बेर बाद सुनील ने देखा । बीनों की नजरें पार हुईं । नजरों की धपनी एक बलम भाषा होती है । जैसे बह आरमी को नहीं जाती पर जैसे ही प्रेम की अनुमृति होती है, जैसे ही बह इतकी बूढ़ से पुरु सभ्याबली संकेत से परिचित हो जाता है ।

रामा सुनील को देखती रही आपसक और सुनील उसे । पहली बार अपने देखने का समर्बन पाकर सुनील मुस्करा पड़ा । तब हाथ में बीता भेकर बह उसके आगे से गुजरा । समीप आकर खँकारने लगा । 'योग समधिष्ट छठी समय सुनील का कोई मित्र था गया । उसने

आपका प्रकलित स्वर में कहा 'आज सुबह-सुबह कैसे ?
'बस तम्हारी बीर ही का रहा पा ।

'क्यों ?'

बस यू ही ।

उसने अपने लड़े होने का पीजीशन बताया । जब वह रामा के सामने का बीर रामा मुस्सा करती हुई हर दूसरे पल उगे देख रही थी । उसने रामा पर दृष्टि बना कर कहा 'मैं सब्जी लेने जा रहा हूँ ।

कहाँ ।'

'मोड़ पर ।

'मैं भी जाता हूँ ।

'जहाँ पार तुम पर जाकर माँ को भाव बनाने के लिए कहो बीर मैं लपक कर अभी भाया । बीर उसने रामा को कनपी मार कर संकेत किया । कनपी ने छात्र ही उसके शरीर में मय की लहर दीड़ी । मुर-मुरी सी छूटी । वह लपक कर कनपी से बाहर हो गया । मुनीस बीराड़े पर लडा हो गया । उसकी हर पड़कन इस तरह रामा की प्रतीक्षा कर रही थी जिन तरह वह उसकी बिर परिचित हो ।

रामा भी जा कपी । सब्जी का बना उसके हाथ में पा । दोनों के बिस पड़क रहे थे । पाव बाते ही मुनीस ने कहा 'तम मुससे हूँ ।'

'कहाँ ।

जहाँ तुम रहो ।

'कनपीरी गेट के कॉन्ट्रैक्ट में ।

'कितने बजे ?

तीन बजे ।'

यह सबकी सेक्टर थापस बा मयी । यमा की उबाची सुयी में
 बसस मयी मोर बहु बहु जल्पाह ऐ हर ससि से र्दी थी । बाज
 सगने विना तरह का थी बपड़ नहीं किया । बहु धाना बाकर
 कसिन बची मयी ।

×

×

×

बहु धाम को सीटी । ससकी मुजा मयीर थी । सठने याना नाममात्र
 को याना क्याकि मुलीस के याम उसने रोपहर कोबहुत मारी नास्त्रा
 से दिया था । बाज उसने इगिरा मामी को भी मुज नहीं कहा ।
 बाज माँ की तरह उसकी भी पर की प्रत्येक बक्ति विधि में दिनबस्वी
 महत ही कम थी । क्या मे बाज फिर कहता दिया था कि बाज
 यह गत को नहीं आ सकठी ।

बूरी माँ ने प्रत्येक दृष्टि इन्दिरा पर जमा कर कहा
 'अयाम पेटी का राठ को पर न याना बज्या नहीं है बहु !
 और वास-पड़ोस वाले लोग इसे क्या समझेंगे ?'

इन्दिरा ने तुरन्त अपनी सास की ओर भलती दृष्टि से देखा ।
 उस दृष्टि में मुस्से का सेनाब था । माँ उस दृष्टि को नहीं सह सकी ।
 अपनी दृष्टि को बलते हुए पंखे पर जमा कर माँ बोली "ये ठीक
 कहनी ह बहु बूझी धीरुँ कमजोर बकर हो जाती हैं पर दुनियावादी
 बहुत समझती हैं । क्या का राठ-राठ भर न याना मुसे बज्या नहीं
 समता ।"

"सोम जाहे बर्बा करें या न करें पर आपने ली धुरक कर ही थी ।
 मेरी सासजी क्या पर जयमी सठाने वाले की मैं चँदनी काठ लाऊँ ।
 क्या कोई मामूली सड़की नहीं है । बहु पैरी मनब है ।"

लेकिन मुझे यह बज्या नहीं लगता ।"

‘आप पुराने क्यामात की हैं न ? आपको इस जमाने की बहुत सी बातें अच्छी नहीं लग सकती ।

रामा इन दोनों की बातचीत में लटख थी । जब मांजी माँ पर हामी होने लगी तब उसने धीरे से कहा ‘फिर भी सड़की की अपनी एक बसम मर्यादा होती है भाभी ! हफ्ते में नियमित रूप से एक-दो दिन रात का न बाना सन्देह को ही जग्य देता है । मैं दिखनुम निराधार बात नहीं कहती ।

इन्दिरा के होंठ खँस गये । बाँधों में घृणा बीज ही जठी ‘तुम इस तरह बोल रही हो जैसे तुम कृपा के संयन्त्रम फिरती हो । कान खोल कर सुनलो पर क बारे में इस तरह सोचना आप दोनों को योग्य नहीं देता । मैं जरा सामान खरीदने बाहर जा रही हूँ ।

इन्दिरा ने बाहर चले जाने के बाद मुझमें टाप मर क लिए सम्नाटा छा गया । माँ की आँखें नजब हो जठीं । उसने अपना मुँह हाथों में छपा लिया । माँ की बेदना रामा से नहीं देखी गयी । एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह मारा भेव माँ को कतू दे मीर यह भी बना दे कि एक पक्षा भी ‘पर तभी छठे मुनील का ध्यान आ गया और वह माँ के गमीप बैठ कर बिचारसीम की तरह बोमी तुम कामया बिजित होनी हो । कृपा को भी यमत करम नहीं उठा सकती । वह एक सज्जनहार सड़की है ।”

माँ ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह जोड़ी बेर पूर्ववत् घँटी रही घन्त में बड़ाहायी मुँने यह सब अच्छा नहीं लगना । जरा भी नहीं माना ।

और रामा सोच रही थी, ‘मांजी को मुझे सुरम्त छपने कब्जे में कर लेना चाहिए । बिना उसको कब्जे में दिने में आशारी से घूम फिर नहीं सकती ।”

संयोग से दूसरे दिन बतने कृपा के लक्ष्मि के भीतर से दो बज प्राप्त कर लिये । इन पक्षों में दामोदर ने उनसे कहा का कि यह पक्षा

रात वहाँ आ जाए। उसको सम्बोधन भी 'जाने मन जैसे हृस्क सख्यों में
 किया गया था। उसने उन पत्रों को पढ़ा। मुन्ना ये वह बिकर बची।
 नाम यह माँभी को टांक करेयी। वह बहुत प्रसन्न ही बची और
 माँभी को बार-बार पूछने लगी कि येमा कहाँ है भया कब आवेगे ?

दुन्दिरा न चागिर पूछ सिया 'बार-बार भया, को क्यों पूछ
 रही है ?

एक बकरी काम है।

भया ?

'माँभी ! तुम बता सकती हो कि यह बीषा कीन है ?

रूपा की सहेली।

'तुम उसे जानती हो ?'

'बच्ची तरह। उससे कई बार मिस चुकी हूँ।'

रूपा अपने गारा पर एक तर्जनी बदा कर बुझ मूसती हुई बोली
 'वह बहुत पेशवामी है।

'जी।

'रूपा राठ को प्राम' वहाँ रहती है।

'ओ पर तू यह सब क्यों पूछ रही है ?

वे इसलिए पूछनी हूँ। 'रामा ने देखा कि माँ के कान बड़े
 हैं इसलिए वे दोनों पत्रों के भीतर लगी बची। रामा ने अपने भाव्य
 को बहुत ही धीमे से किया। माँभी तुम मूठ बोसती हो ?

'तुम तुम' "

आयर वह मर भी है। पता नहीं। इन मरों को औरत बनकर
 परिचय देने में क्यों मजा माने लमा है ?'

"रामा।"

माँभी आज भैया को जाने दो। मैं उनसे कहीं भी कि बीषा की
 यह रूपा शानोहर के महाँ जाती है। बीषा नाम की कोई मक्की
 नहीं है। यह बीषा के नाम पर।"

रुवा । मामी खोख पड़ी ।

“खोखो मत । मो पास में बंटी है । वह सब कुछ काम जायगी । वह यह सब नहीं सह पायेगी । बेचारी धर्म से आत्महत्या कर लेगी । मामी येरे पास रामोदर के पत्र हैं बीर जयमें ।”

मामी का बहुरा पापी आत्मा की तरह छठे हो गया । वह निष्कम्प सी की तरह खड़ी रही । उसके होंठ तड़प कर रह गये ।

‘तुम दोनों कितने दिन तक हमें पोछा दोगी । आज भीया को जाने दो । मैं सब कुछ बता दूंगी ।’

किनी ने किबाड़े गटखटाये ।

मामी ने रुवा क हाथ मजबूती से पकड़ लिये । वह अनुभव मने स्तर में बोली ‘तुम चुप रहना । भीया को जाने दो मैं फिर तुमसे कुछ पकूगी बाँने ककूनी ।’

किबाड़े खुले ।

उन दोनों की आँखें उस बीर उठ गयी । उन्होंने देखा—रुवा थी । मामी खपक कर रुवा की ओर गयी । उसने उसका हाथ पकड़ा संकित बीर काँपते स्वर में कहा ‘सब खीनट ही गया ।’

‘क्या ?’

‘रामा सब कुछ जान गयी है । वह तेरे भीया को मनी कुछ बताने के लिए उपास है ।’

रुवा ने उनको चुप कर दिया । यह समझ गयी थी कि वह आश्चर्यकता से अधिक उत्तेजित हो गया है । रुवा के बेहूरे पर भी स्थापन छा गया । उसने माँ की ओर देखा । वह इन सभी की दृष्टि-विशेषों से अलग अपने आप में लगभग थी । उसके होंठ बाँप रहे थे बीर बबमू ही आँखें किसी अनुर जामुन आँखों की तरह कभी-कभी तुम कर इन तीन दृष्टियों क बीच फैल हुए रहस्य को जानने की चेष्टा कर रही थी ।

“क्या बात है रामा ?” रुवा ने संवत स्तर में पूछा ।

भाभी से पूछ लो ।

रुपा उनसे कुछ कहे, इनके पहले ही भाभी व्यपता से बोझ उठी
 “इसने तुम्हारे लठ-झूठ लिए हैं। इसका कहना है कि तुम्हारी बीबा
 नाम की कोई सहेली नहीं है। तुम रात को बीबा के यहाँ नहीं
 रामोवर के यहाँ सोती हो? वह काफी उत्तेजित हो गयी और
 उसकी आँखों में असीम व्यथा छर भाभी “यह कितना झूठ बोलती
 है? इनकी घर की इज्जत का भी क्या नहीं।

रुपा ने रामा की ओर नाभिग्राम दृष्टि से देखा और यह उसे सींच
 कर बाहर से गयी। बाहर से जा कर उनके पीछे स्वर में पूछा “तुम
 क्या जानती हो?

“मैं सब कुछ जानती हूँ ?

‘सिफ़त क्या ?

‘कि तुम’ ।”

मैं रामोवर के यहाँ जाती हूँ। मैं उसे प्रेम करती हूँ कि इस
 प्रेम के बलसे हमें वह जीवन का मुक्त देता है। रामा से चाहती हूँ
 कि यह यरीबी और कठिनाइयाँ हम सब के जीवन को न तिनके
 बाध बना ही चुककर है। मैं तुम रामी लोगों के लिए । मैं को
 यह मत कहना । हमसे मैं को बड़ा दुःख होना थायव वह यह
 जानकर अपने बापको फुर्तान कर दे ।”

“क्या यह सब भाभी भी जानती है।

“जहाँ। भाभी बेचारी मौसी है। वह इन बातों को यहराई से
 जाना नहीं चाहती। उसे पैसा चाहिए, मुँह-मुँबिधा चाहिए जो उसे
 इतर मिस रही है। वह कुछ खर्च चुप रही जब हम जरा चुन
 धारों।

जब वे दोनों चुन कर धात्री तक दोनों बड़ी प्रसन्न थी। जानता
 था कि दोनों के बीच कोई बड़ा भारी समझौता हो गया है। भाभी
 व मैं उन दोनों को देखकर अफिद ही रह गयीं।

उस दिन दोनों ने साथ-साथ खाना खाया । माँ ने कई बार रामा को धमक से डाँक कर पूछना चाहा पर रामा ने जबसर ही नहीं दिया । लेकिन दूसरी सुबह माँ को जबसर भिन्न ही मया और उसने रामा से पूछा - कम रामोबर को लेकर क्या बातें हो रही थीं ?

‘बुझ नहीं ।’

‘मुझ से छुपाती हो ।’

‘नहीं माँ । बसत यह है कि मेरी भाभी से जरा भी नहीं पटती है । मैं दरबसत क्या बीबी से नहीं भाभी से बूना करती हूँ इसलिए मैंने कम जानबूझ कर एक घायुका छोड़ा ।’

कौन सा ?

‘कि भाभी मेरे साथ यह भाव-बह भाव रखती है । मैं चाहती हूँ कि भाभी को कुछ दुःख-दर मिले । कम मैं इस बात को लेकर काफी उल्लेखित व उत्र हूँ बपी बी किन्तु क्या बीबी ने मुझे समझा दिया । उसने कहा कि परिवार की शांति मग की शांति से ज्यादा महत्वपूर्ण है । तुम्हें अपने मग क सुख के लिए परिवार को छिन्न-भिन्न करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए । उसने मुझे जो-जो बातें बतायी उससे मैंने भी यह स्वीकार कर लिया कि मैं ही पसती पर बी ।’

माँ को घायुमी निराधार हो गयी । रामा कोई छिन्नो बीत नुनमुनाते नहीं ।

×

∨

×

राग के बग बने हैं । बाहर कोई छिन्नो बीत या रहा है मेरा बूगा है बापानी । पीनकार रीनेर का यह मोकशिय घाना कभी-कभी सुनीत मुझ भी नुमा देना है और हम मोत की ध्वनि क्यों ही भीतर जाती है क्यों ही रामा बूकने का बहाना बनाकर बाहर देगी है ।

पाव । वह मीन सी लड़ी रही । केवल उनकी नर्तिका प्रकाश-स्तंभ की रोगनी की तरह उसका कमरे में बीड़ रही थी ।

तम बहुत मकरा मनी ही ?

मुझे डर लगता है ।

“यहाँ बैठ जाओ । यहाँ किसी का डर नहीं है । यहाँ मैं हूँ और तुम हो । देखो रामा यह स्थान बड़ा सुरक्षित है और यहाँ हम दोनों पूरी स्वतंत्रता के साथ बात-चीत कर सकते हैं । अभी गारी मनी सोयी हुई है ।

कहीं किसी ने डेर लगा तो ?”

“कोई नहीं देखेगा । अपने आने में से एक बिस्कुट का पैकेट निकाला । उतमें से दो बिस्कुट अपने हाथ में लिये क्योंकि मुनील बस्ती से जल्दी हंग मप क विषय को बदल देना चाहता था । उसके मस्तिष्क में औरन से सम्मानित उल्लेखित मूक के हृदय का रूपान्तरण था ।

‘तो मुह लोली ।

‘नहीं हाथ में दे दो ।

‘प्यार में ऐसा बोड़े ही होता है । उतने को बिस्कुट उसके मुँह में दूँगे बिदे ओर उसके बालों को ओर से बहा दिया । रामा ने उसे अलती प्रसन्नवाचक दृष्टि से देखा मानो वह पूछ रही है कि क्या प्यार इस प्रकार के स्पर्श को कर्तव्य है । पता नहीं जो स्वयं को समर्पण करने की इच्छुक रहती थी यह मुनील के स्पर्श मान से बुधा से क्यों मर जाता थी ? वह उसका एकदम डूर रह गयी ।

मुझे यह पसंद नहीं है । रामा ने यह वाक्य इस तरह कहा जैसे वह किसी महीरी पाई से बोल रही हो ।

‘क्यों ?

वह निश्चर रही । बतकी आँखों में भयजनित भाव उभर कर आने और वह निताम्न विचित्र हो गयी ।

पर मुनीस ने उसे बाहों में भर लिया और ।

धीरे वह अपने होठों पर एक नया कड़ुवाहट लेकर आयी । वह मुझों दोनों में बिटी छोड़ी थी-माती के सप्पाटे में । उसके हाव में कुछ रुपये थे । आठे समय मुनीस ने कहा था मैं यह सब तुम्हें दे रहा हूँ प्यार के बदले में । यह मेरे प्यार का प्रतिदान नहीं बस उपहार है कि कल तुम अपनी बबरकता की ममी भीड़ें खरीद कर निम्नित हो जाओ । एक लम्बे घूट का कपड़ा भी खरीदना ।

दुमरे दिन वह अपनी ही मपती धामी के लिए कुछ कपड़े लेकर आयी । कपड़े देखकर मैं ने पामस की तरह चिन्ता कर पूछा 'तुम यह सब कहाँ से लायी ?

इसे मैंने दिलाया है । इन्दिरा बीच में ही बाम पड़ी ।

मैं चुप हो गयी ।

मेकमि सँभ होते ही तिसोचन आया । उसके आठे ही मैं ने कहा तुम्हारी बहिनों का बाल बलन मुझे अच्छा नहीं लगता है । यह इतना चर्च कहाँ से आता है ?

वह सुनते ही तिसोचन मुझमें में भर गया । बोला आज उन दोनों को आने दो ।

इन्दिरा उसे तुरन्त पछें में ले गयी । धीरे से बोली 'तुम्हारी माँ का माया सदाब है । वह नहीं चाहती कि हम बानों मुख धीरे पति वा धीयन बाचन करें । जमाना बदल गया है और तुम इस बूझी-पूछट की बातों का त्याग करते हो ? यह सब कुछ न कुछ नयी बात सोचनी रहती है ? बाखिर यह ऐसा न सोचे तो सोचे भी क्या ? बँचानी दिन भर बिकम्मी बठी-बँठी ऊब जाती है । जो यह पाँच गाय धीरे जाओ बूम जाओ । और जमाने गीहों में घर कर उमे बूम लिया "मैं तेरी प्रतीक्षा करूँगी ।

तिसोचन एकरम मुझों बल गया । वह पाँच रुपए लेकर बाहर गया गया । उमने आठे ही इन्दिरा माँ पर बरख बड़ी 'मुन पान

मेरा इन जगहों में हम बुटने लगता है। जन्मेरा मेरे लिए बघाव है। धीरे धीरे की स्मृति-शोक में सुनील के कमरे का जन्मेरा बम गया। यह जन्मेरा कितना उत्तेजित न कितना भासनात्मक होता है। गर्म धातियों के समुच्चय में जाकंठ दूबे के दोनों एक-दूसरे को इन बुरी तरह से दुबाने की चेष्टाएँ करते हैं कि दोनों अपनी वस्तुस्थिति से पृथक हो जाते हैं। यह जन्मेरा और यह जन्मेरा। स्वरूप ठीक कदुता है कि यह जन्मेरा सबकुछ में हम सब का बन्धा होता है।

स्वरूप ने सिगरेट जलाने के लिए लाइट जलाया। धब धर के लिए घुसना उगाना हुआ। उस जगहों में सबने एक दूसरे की बाहुलिया देखीं। ये बाहुलियाँ पृथक-पृथक प्रभाव दे रही थीं। स्वरूप की दृष्टि रामा पर थी। बहुत तेज और सार्थक दृष्टि जैसे वह कुछ बूझ रही है कि रामा में कितना परिवर्तन आ गया है ?

उसने लाइट वापस बुझाना चाहा पर रामा ने उसे मना कर दिया "इसे बसा रहने दो मेरा जन्मेरे में हम बुटता है।"

तभी ऐसा आ गयी। उसके साथ मिस्त्री का। मिस्त्री ने जैसे ही पयूज को बीटरी से देखा जैसे ही तिलोचन ने धर में प्रवेश किया। उसके पाँव उगमया रहे थे। वह मस्तमौसा की तरह झूम रहा था।

उसने आठे ही हकलाते हुए स्वर में कहा, "बरे ! तुम लोगों ने जन्मेरा क्यों कर रखा है ? जबाबा करो न ?"

'लाईट जलाव हो गयी है मिस्त्री ठीक कर रहा है।

जोह !" उसने रास जाकर वह सब देखा। कुछ सहमता हुआ वह पर्दे के भीतर जाता गया। पर्दे के भीतर से ही उसने बड़बड़ाया "मुझे नींद आ रही है मुझे मत जगाना।

सब समझ गयी कि वह पीकर जाया है। वह सीमा ही बिगना सम्य हो गया। मैं प्रकाश से बचमया उठा।

स्वरूप ने कहा 'जमा सब तेरा बम नहीं बुटता ?'

“नहीं। इनमें सहृदयता से कहा।

रुपा। यह क्या उपस्थान में तुम्हें समझाने का क्या बर्णन कि इसकी मूल प्रेरणा तुम्हें से ही है।

“नहीं मैं इस का बर्णन करती ?”

यह मैं समझता हूँ। इनमें यह वाक्य रुपा से कहा पर देखा रामा की आर। रामा जब नून पयी। मोक्ष बड़ी कि स्वल्प तथा उनका अपमान करने का प्रयत्न में रहता है। रामा बिड़कर बोली बेवस रुपा को नहीं उसने

रामा। एक ताड़ना ही क्या से स्वर में हर महत्त्व बाण में जहर मठ घाता करो। मनी तो हूँनी-मजाक की बात बल रही है उसे इतना गंभीरता में क्यों मिला हो ?”

मैं क्यों मने मनी ? स्वल्प के टोन से बिड़कर ही मैंने यह कहा। वह क्यों बात-बात पर मुझ पर शक्ति-भ्यंग करता है।

स्वल्प ने तुरन्त अपना माथना मरे स्वर में कहा। येरी महत्त्व बाण को तुम अपर इग तरह मनी हो तो मैं तुमम माटी मंगना हूँ।”

स्वल्प मार कर माटी मंगने में क्या मन्ता है। हूँ ! वह बुणा मे मुँह पिचका का उठ पयी और पन्ने का अन्वित्य करने लयी। स्वल्प भी जरा मया। क्या उनका पास जाकर को उनका म पड़े लयी। मैं क माने की मजर उनकी गड़गड़ी हुई मंग ब रही थी। इन्दिरा पने मैं थी। क्या मे इपर उपर गभी की लाया जान कर पीरे से कहा “रामा। रामा। जीवन में इतना बहमी और अस्मित होकर नहीं बनना चाहिए। स्वल्प तुम्हारी बरी इज्जत करता है।

मैंने उनका कब अपमान किया ?

तुम बचारे में नीचे मुँह बाण भी मनी करनी हो।

‘क्यों कर्क ?’ सीरी। तुमने मुझे अपनी मन्बूरियां लक्ष-लक्ष बताया है। मैं ना मनी ना मैं सब कुछ जान जाओ और जानती भी

धी। रामोदर व तुम्हारा सम्बन्ध और यह पार्थ ? जैसे तुम भी मेरे बारे में रामो कुछ जानती ही होगी लेकिन यह स्वरूप प्यार मुझ से करता और । यह कमीना है बेहद कमीना । इसे वही जाने की मनाही कर दो । यह काँप सी लगी ।

“कर लु ली। कह कर वह व्यथित हो सी पयी ।

राज रीर रक्षी है नीब के पक्षों पर रामा का नीब नहीं । वह राज को प्रयाद निद्रा में देखना चाहती है । सो राज बेतबर है और वह लगी—रामा ।

सुनील उठकी प्रतीक्षा कर रहा है ।

रामा भीतर चुनती है । सुनील उठे बाँहों में भर जाता है । उठके हाथ में गोट बरकड़ता है । कहता है, सो यह पाँच सी रूप अब तो लुप्त हो न ? अपनी बहिन से भी बड़िया साड़ी जाना रामा । मैं ठेरे लिए पासमो के लारे भी ला सकता हूँ ।

सुनील किष्म के हीरो की तरह आचारहीन किन्तु बदनदार संवाद बोलता रहा ।

सम्नाटा और अंधेरा ।

“दरबाजा सुनता नहीं है सुनील ।” भीरे से बड़बड़ामी रामा । एक भवना सा सबा सुनील के दिल पर जमा कूहती हो ? जरा ओर लमाओ ना ?

रामा ने अपनी पूरी सजिन के साथ दरबाजे की बोलने की चैप्टा की पर दरबाजा नहीं लुमा । सुनील के भीतर का हेमिडल पकड़ कर अपनी सम्पूर्ण धरित से सीधा पर फाटक बंद । फाटक बन्द कि उसकी बाँसों बन्द । उसके लारे लरीर से पलीला छूट गया । उसने जबकीक वृष्टि की अंधेरे में फैलाते हुए काँपते स्वर में पूछा “तुम्हें किसी के बैका तो नहीं ?”

“नहीं ।

किर । मजबूत हो आयेना रामा ? मेरी तो बीर नहीं ।

तेरा क्या बिगड़ेगा मैं हूँ बीरल जान मरी मारी इज्जत बूम में मिल पायेगा ।

तेरी इज्जत क्या बूम में मिलेगी । तुम बोलो बहिना का साथ मोहस्ता जानता है कि इनका भाई बजार है और बचारी के बानों बहिनें पैसा करत

“ममील ! इतनी मसन धारण मेर प्रति न बनाया । मैंने तुम्हारे गिबाय किमी को भी समर्पण नहीं किया है । मैं तुम्हें प्यार करती हूँ और तुमने मुझे बचल दिया है कि मैं तुमने विवाह करूया और मात्र ।

मुनील के विचार अभाव न। उठे हर बलिहीन बीरल एक नाप्पी का बूट ही पुर्ण और नहीं बनिमय करती है । तुम कुछ कम पीके ही न।

गमा की भाँसे भर आयी । बहु भरपिस्वर के दागी हम मरीब उकर हैं । हमारे अमाकी के हमार भीतर अम्बन्ध परम्पराओं का जन्म पकर दे दिया है पर हमें कमीना और नीच मन ममता । मुनील ! ।

विवाह गन्थागये ।

उन बोलों की भाँसे एक गयी ।

विवाह गये ।

रामा भय न आशाग होकर मुनील के पीके छुप गयी

‘जनापा करो । मुनील के बाप की शोष मरी अत्याज घायी । मुनील भय न गिहर कर बड़बहाया मेरे पिता के आ गये हैं ।

जनापा हुआ ।

रामा ने देखा कि मुनील के पिता जी न माय उमका भाई निर्माचन नी । बहु भरपिस्वर की प्रति गिर लुका कर नहीं हा गयी । यही स्थिति मुनील की थी ।

देग रहे हा आनी पिताम बहिन का ? मेरे बटे का छमकर बेरा पर नूट रही है । ये रहे, मेरी निजोरी के बुराव हुए समय ।

बिलोचन की आँखें धर्म से झुक गयीं। उसने सुनील के बाप के पांव पकड़ कर कहा, मैं आपका पांव पकड़ता हूँ आप धीरे धीरे खोलिए, बागी से।

आपका क्या बिलड़ा ? यह आश्चर्यचकित इत बरजाठ को मेरे द्वारा ही अपने पुरा पुरा कर दिया चुका है। उन स्वयं को कौन क्या आप मा यह।

रामा भड़क उठी और मेरी इच्छा की कीमत कौन क्या ? आपसे बेचे मे मुझे विवाह के लिए परोसा देकर नहीं मेरी बस्मत् पृथी है उन बमूख का मोल कौन क्या ?

बिलोचन ने मुझे मैं तड़प कर उसे एक बज्जड़ मार दिया। रामा ने उसकी कोई परवाह नहीं की। वह बोली हमने मेरे माथ छस किया मुझे बरबाद किया है।”

‘तू चुप रह बरकार ! मत।

बिलोचन उसका हाथ पकड़ कर ले आया और कमरे में लाकर उसे डंडे से चुपी तरह पीटा। रामा का सारा घट्टर सूब गया। मुह से खून बहने लगा। इन्दिरा और रुपा ने बचाने की चेष्टा की तो बिलोचन ने उन दोनों को भी पालिवाँ दे देकर पीटना शुरू कर दिया। पड़ोसी लोग आ गये। उन्होंने मसती रहस्य का पता लगाने की बजाय यही कहा कि घटना पीने पर आसमी और क्या करेगा ? माथ ही उन्होंने बिलोचन को धाँठ भी कर दिया।

बिलोचन बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोने लगा। रोते रोते उसने उन्मादग्रस्त प्राणी की तरह अपने सिर को पीटा और बचनरा रा पड़ गया।

रामा एक कोने में अपने मुह को छुपाये पड़ी थी। रोते रोते उसकी भी आँखें लाम हो गयी थीं। रुपा और इन्दिरा इस तरह बैठी थीं जैसे वे दोनों किसी का मातम बना रही हों। माँ बिलोचन के पास बैठी थी और उसे धीरे धीरे बसा रही थी। कटुता उनकी धीन

घीलों में हीर नहीं थी। वह अस्पष्ट स्वर में बड़बुदा लठी "यह सब बेरी बहू के करण है। मैं बार-बार बहनी या कि इन छोटियों के सदन बन्दे नहीं हूँ पर बेरी बहू पंगों के नाम में मग्नी हुई जा रही थी।

यदि दूसरा समय हाता तो इन्दिरा नूगी नाम की तरह खोसती हुई साम पर झपट पड़ती पर धनी बहू अङ्गा व नूकता की प्रतिमुनि बनी हुई थी। अपने आन्तरिक मुस्से में अपने दोना हाटों को घुरी तरह भीच रहा थी।

रुपा हा बेहरा महापापी की तरह स्वाह पड़ गया था।

विमोचन ने अपने घन्टस की सारी छिछना जा स्वर में भर कर कहा कम से कम दानों में भर स बाहर पान रखा ना लगे ताड़ हुआ। नौकरी-बाजरी पन्ना तिलना सप बन्द !

बही गह्य मौन !

आगिर धन धन सभी मुच-बुग से मुक्त करने नामा भीर की पेश में अपने अपने बोलित हृदयों को मकर मो पये।

आज कोई मङ्गी पर से बाहर नहीं गयी। विमोचन उदास उदास गा रू रहा। रामा से छिपी ने नी बाणधीन नहीं की। उल्लेख बाणधीन करण वा मतमत्र या कि घर में फिर धर्माति की जगम दना। आज मौ मकिन भीर प्रयत्न बिगामो पड़नी पो। बहू नीर बेटियों स प्रतिपाप गरुत बहू आन्तरिक रूप से प्रस थी बाकि उल्लेखो बनी-पङ्की थीर बगा-बती जाँगी स एक समक या एसा बमक को बिहियों को मङ्गी में बापरे में दिगापी पड़नी है।

मौ ने बाप बनायी। अपने छिपी ने १ बबुरोन नहीं किया। देवम बहू अपने मादने के पाउ गयी भीर उनके गिर पर कोमगाउ से हाप कर कर गिनी नरे स्वर में बानी "ये बाप पी मे।

गिनाचन ने मौ को नामो बुष्टि से देया मोर अपने लम्बा हाँक लिया। धन भर के लिए उनके बियाप में यह दिखार जाना कि मौ

उसे चाप की जगह जहर साकर दे दे, चाप से जहर उत्तम रहेगा । माँ जैसे उसकी स्वर दृष्टि का अभिप्राय समझ पयी हो अपने स्वर को और कोमलतय बनाती हुई बोली से पीले बिना चाप के ऐरी तभीयत ठीक नहीं रहेगी ।

उसने चाप का प्यासा हाथ में धरे दिया । एक बार उसने अपने मुखां परिवार पर दृष्टि डाली—रामा के अतिरिक्त सभी चाप रहे थे पर बिस्तर नहीं छोड़ रहे थे । उसने चाप पी । माँ ने भी । उन दोनों ने जब चाप पीली तब माँ ने कपा से कहा यह चाप पडी है तुम साथ पीना ।”

रुपा ने सठकर चाप प्यासियों में डाली । उसने एक-एक प्यासा घर के सभी सदस्यों की तरफ बढ़ाया । चाप के आधी सभी प्राणियों ने इस बिना प्रेम की चाप का पी भी लिया । सिर्फ रामा ने नहीं पी । रामा ने बिना दृष्टि से सभी सदस्यों को सिर्फ देखा । त्रिमोहन उस दृष्टि को नहीं सह सका । माँ ने बर्से कर कहा ऐमे क्यों भूरती है ? चाप क्यों नहीं पीती ?

मैं चाप नहीं पीऊँगी ।

और प्राणा ।

‘नहीं टाऊँगी । मैं उस कमीने मुनीस को भरे बाजार में जूते न माले तक अन्न-पानी ग्रहण नहीं करूँगी ।

जमी हुई समाका चिपका बो हो इस तरह चिह्नक पड़ा त्रिमोहन वह रामा के शरत यमा । उसके शरतों को बकड़ कर बोला कलमु ही जवान को सयाम नहीं जयायेपी रात भी तमामा देखा उतने भी नहीं भरा । तुम घर से बाहर करम रख बिना तो मैं तुझे पीते भी जला टामू गा ।

जाप जसा देना । जाप मुझे बितना पी जाहे मारवा-पीटना किन्तु मैं उसे मका जनाये बिना नहीं रहूँगी । उसने मुझ पीला दिया है उसने मुझे प्यार के नाम पर बरबाद किया है । मैं उसे माऊ नहीं

कर सकती।" वह बरदमल उत्तेजित स्वर में बोम रही थी।

"बुप रह छिनाम। त्रिताचन मे हाप उटाया। क्ना मे सपक कर उसे पकड़ तिया। त्रिताचन मे दकड़काले हुए स्वर मे हाप छोड़ने की बमकी थी बाद में छकाने की बोप्टा की पर क्ना मे अपने दोनों हाथों से त्रिताचन के हाप को मरबुनी से पकड़े रया।

"बाप पाँठ रहिए, मैं इसे समझा दूँगी।"

घर में एक बार हुल्ना मचने-मचत रह गया। दोपहर को कुछ लोग बाहर बने गये। सब के अपने-अपने काम बहाने थे। मेरी पीठ में रह गयी—क्ना और रामा।

क्ना ने रामा से कहा "तुम बहुत उत्तेजित हो जाओ हा ? रामा ने मुस्तीते स्वर से कहा "हना बड़ा धन हो जाने के बा" कौम पीरत रह गबता है ? मैं उन बमीने का बिना मारे बिन नहीं रहूँगी चाहे मुझे पॉसी की मया हो क्यों न हा पाय ? क्ना ने उसे परामश मरे स्वर में कहा "यह पामनपन है। सेन मरम हो गया है। भाभी बना रही है कि तुनीन को अपने बाप ने मुबह की माड़ी से बाहर भेज दिया है।"

रामा ने गहन को गटक कर उमकी बार देगा।

"हो रामा अपने बाप का अनुमान है कि हम मनी विरे हुए मोब हैं और हम दोनों सोमादरी मने हैं। हुनादी कोई इगजन-बापक मदी है, इसलिए जहूने अपने ही धेरे का दूर भेजना बबला ममता। रामा विमक पड़ो। क्ना ने कहा "अपने जाने का तुम्हें बडा डर है ?"

"दीरी धेरे उसे मरना मारना से प्यार किया बा। निरु इसलिए कि मैं एक ध्यनि क मंत्र जीवन सुराक और बनने मुन से विवाह करने का बादरा किया बा। इसी बाधने पर मैंने उसे अपना सर्वस्व समर्पण किया। एक बीरत से दया बड़ा धन।"

'जो हा गया, उसे मुझ जाने में ही फायदा है।' क्या मे उपदेशक की तरह कहा 'आज का जीवन परवश पतिघोष है। इस तरी में हर यान बोड़े दिनों में मुझा बी जाती है और पू बीबाही युग मे हमारे मूष्यों के मामबंङ्क बरस दिया है। तुम्हें मीने कई बार समझाया था कि मादानी मत करो। तुम मुझ से ही इ पठा एपने सपी। तुम मुझ से ही बीर तेने बनर गयी।

राजा खुप !

क्या मे कहा 'हम बहुत ही मजबूर हैं। मुझे अपने आपको किस दसा में भीषित रसना पड़ रहा है यह मैं ही जानती हूँ। मीने सोचा कि मेरा पठन तुम सोचों का जीवन संसार बेगा पर तुम मुझ से होड़ करने सयो। अभी मैं सजय है, ठोकरे इन्सान की पही रास्ते बिघाती हूँ।

मैं अब यहाँ नहीं रहूँगी। मुझे हम बिस्नी से ही चिड़ हो गयी है। उषः स्वर में बिरबित्त की और बाँधों में जवास परछाईयाँ।

'हम तरह बिरास नहीं होना चाहिए। मीया मुस्ते में है। उसके स्वभिमान और वीरत पर बहुत चोट सपी है इसलिये जसने हम सभी सोचों के जीवन पर अनुचित प्रतिबन्ध सयाने की जाया है बी है पर यह प्रतिबन्ध धमिक दिन बनने वाला नहीं है। भूज सबको ठीक कर देती है। तुम अधिक अपने आपकी पीड़ित मत करो। अधिक आरमा सोचन भी ठीक नहीं। बीठ मदी को भूला देना ही थोपस्कर है।

इस तरह क्या रामा की बड़ी बेर तक समझाती रही और रामा के हृदय में एक नया ही बिचार पनपठा रहा।

×

×

+

असहयोग।

अंग्रेजों के राज्य में ना तो महारामा गाँधी के आह्वान पर क्रिश्चियानों से असहयोग भारतीय जनता ने किया था या अब मेरे लोक

वासी इन गृह-सदस्यों ने विसोचन से किया है।

रामा कृपा और इन्दिरा तीनों एक तरफ हो गए और विसोचन व माँ दूमरी तरफ। रेखा भारत की विदेश नीति की तरह तटस्थ। वह बेचारी सबसे छोटी सबसे अधिक दुःख संभली। हर कोई उम पर हसना समाता और वह बेचारी बक कर टूट जाती।

विसोचन सुबह ही घर से बाहर निकलता और राम तक मारा मारा फिर कर आ जाता। वह इन्दिरा से रोटी नहीं मांगता वह अपनी दोनों बहनों से रोटी नहीं मांगता। वह अपनी माँ से उरमाह हीन स्वर में कहता माँ खाना तैयार है। माँ उसके मुरझाए हुए मांस-नसांत मुँह को देखती और उसका हृदय दुःख से भर जाता। वह बिना कोई उत्तर दिये उसे खाना परोस देती। वह धा सिता। उसका साहस नहीं होता था कि वह परिवार के सदस्यों की ओर देखे। एक घुटन और एक रामोसी धामी रहती थी। एसा लगता था कि यहाँ असहयोग और युवा के अदृश्य इस्तेमाल भूम भूम कर हम भोंदू सबासी फैला रहे हैं।

हर शाम जब रोशनी का समन्दर समंते सूर्य अस्त हो जाता है जैसे अस्त होगा है इसे विसोचन नहीं आगता। क्यों कि वह क्यों से दग पर नहीं गया है और अगन अस्त होते हुए सूर्य को नहीं देखा है। लेकिन ज्यों-ज्यों तिमिर वल फैलने लगते हैं र्यों-र्यों उनका धीरे-धीरे एक टूटन से बिगड़ने लगता और उनको इच्छा होती कि वह शायद ही भावे पर उनको परत जैसे अपनी पत्नी के सम्मुख हाथ फैलाने को बाध्य नहीं करती। वह घमघाम पाट से लौटे हुए इन्सान की तरह उदास और टूट कर पड़ जाता।

बाबू उठे चुन्दा मुँहा हुआ मिला। माँ ने अधमरी दृष्टि से धेरे की ओर देखा। पा गप्पाह भर वे कृपा और रामा पर से धेरे बैठी लज चुरी थी। स्पर्क आया था। उसने घर का रहस्य जानना चाहा पर वह नहीं जान सका। एक अज्ञात मूर्कता के कारण वह वह

जकर समझ गया था कि कोई बलहीन बटना यहाँ जरूर पटी है। रूपा के हाथ लड़े हैं। रामा की सिलबार में भारस्वकता से अधिक ससबटें पड़ी हैं। इन्धिरा भाभी की खीरियाँ बड़ी हुई हैं।

भाप सब सवात क्यों हो ? स्वल्प ने पूछा।

‘गर्ही तो। रूपा ने कहा। बात यह है कि आज मेरे नेट में ऐसा ममानक दर्द हुआ कि परिवार की सारी व्यवस्था बस्त-भ्यस्त हो गयी। बन्नी भी थोड़ा-थोड़ा दब है।’

बात उसके कान में नहीं पड़ी।

त्रिसोबन ने माँ से पूछा ‘बूढ़ा क्या नहीं।

‘नहीं।

‘क्यों?’

बाटा लमक और तैस सभी कुछ धरम हो गया है।’

‘तुम इन्धिरा से वीसा मान लेती।’

इन्धिरा पर्दे के पीछे से घेरनी की तरह बाहर निकली। उसकी बाँहें आज बरसा रही थीं। आज की रात ऊँचा उठकर पोर का झटका देकर वह बोली ‘मेरे पास तुमने लज्जामें भरकर रख लो मैं लम्हें दे दूँ।’

त्रिसोबन की इन्धिरा का वह पचाव असह्य समा। वह सिर से पाँव तक झनझना उठा। उसकी इच्छा हुई थी इस मु हृष्ट की बचीसी एक सापड में लोड़ जाने। लेकिन वह मद्रुप बोर्णों से बँबे इन्साप की तरह बंधा हुआ बैठा रहा। दिल में इतना लूझान लेकर भी वह नहीं उठ सका। केवल जलती बाँहों से इन्धिरा को देखता रहा। इन्धिरा भापस बर्हें में बनी गयी।

माँ ने डिम्न स्वर में कहा ‘जब से तुमने दोनों छोकरियों का बाहर जाना-जाना बब किया है उस से ठीके वह का मात्तम ही हुराम हो गया है। उसे कुछ भी नहीं सुहाता। उसके भेहरे की बमक बीर होठों की हँसी बनी गयी है।’

‘रहू भी कैसे सकती है इन्दिरा मन्स बोली आज यह क्या भाग्य दिन जाना ही था। बेकारी फुल ही बरफी रैबा सुबह से एक बाने के लिए तरस रही है। भण्डा है कि पर में छोटे-छाटे यकबे नहीं हैं वनी यह घर आज जहन्नुम बन जाना। बच्चों का भिमबना बोर ।

तभी बाहर आर का धार मुनावी पडा । एक भादमी बहुताप भावा जा रहा था जैसे वह हरकारा हो घोर कोई लका अपना कर्तव्य समझकर चुना रहा हो। वह कह रहा था—आम रास्ते में एक भीरु को बंधा हो गया रास्ते में एक भीरु न बंधा हो बना। उसकी इस घोषणा से श्रोताओं में उत्पन्न जागती गयी भीर सोय बरबी-बत्ती उस भीर नागने मये।

क्या रामा रेबा भीर में भी अपनी उत्सुकता का नहीं राध सकती। वे सब बात पड़ी। रह गये—इन्दिरा भीर त्रिगोचन।

त्रिगोचन ने उसकी ओर न देखने हुए कहा ‘जरा तम्हार पाम कफ भी पना नहीं है?’

‘नहीं।’

मैं यह समझता हूँ कि तुम्हें बहुत दुःख है पर पर की इतना सबसे बढ़ी है। मैं समझता था कि कृपा बन्दी तनखाह से लानी दे जिसने हम सबका लक्ष्य बसता है लेकिन उस दिन का नया रा लेयर कीन भाई गिर ऊँचा उठाकर चल सकता है। उसने बड़ दुःख से कहा।

‘भापने घोषा न समझा और हाथ हाथ मपा बी। जागिर रामा की जन्म ही क्या है? यकबो है बरफ मदी। इसका मतलब यह नहीं है कि आप हमसे गारे पर की व्यस्तता को छोड़ दें। मैं जानती हूँ कि आपकी दृष्टि दुःख दृष्टा होता पर मुझे भी कम नहीं। मैं भी आप पर्यटन चल गई। गकती। लेकिन इससे बच्चियों पर देसा कटोर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता। मुनीम से रामा को प्रेम का बापना लेकर लाना किया है। इसमें जयका क्या दोष है?’

लेकिन वे क्या ?

इन्दिरा बीच में ही बोली 'यह सब पदार्थ है। सुनोस के बा का पदार्थ भी हो सकता है ? ऐसा करने वह रामा के चरित्र न बिराने का माटकर रख सकता है।

बिज्ञापन का चिट्ठा मंजीर हो गया। कुछ हसनी हस्की जमना ब्याप्त हो गयी।

"कल बनाम का एक बात भी घर में नहीं रहेगा। आपकी का आज सिपटा न जाने कब मिले ? मुठ दो चार दिन से अधिक न निकाली जा सकती। मेरा कहा मानिए और प्रीमन जसा वा वा चलने दीजिए अधिक हो तो आप रामा को बतिये पहुँचा जा कर और वापस से आया करें। इससे आपको मामूम हो जाये कि बच्ची कैसी है ?

बिज्ञापन की मुद्रा बोझी ही उसने पदा मं होती हुई ही मयी स्थिर दृष्टि में तनिक स्वीकृति का आभास जसका। इन्दिरा ने अप को घोर मंजीर बनाते हुए कहा मैं आपका कटती हूँ कि राम परा भी बुरी सड़की नहीं है। आप जानते ही हैं कि रामा बीन मूस परा भी नहीं पटती। पर मैं पसत मिया किसी की भी नहीं कर सकत आप जस धाति से घोष दीजिए, मेरी बातें आपकी ठीक ही लगेंगी।

शेवा की आवाज में उन दोनों को चौंका दिया। बिज्ञापन भी इन्दिरा इस तरह बैठ गये कि जैसे उनमें आपस में परा भी बातला नहीं हुआ है।

शेवा ने आते ही उत्साहपूर्वक कहा "भाभी पनन हो गया है नन्हा फूस रा बच्चा और भीड़ यहाँ के लोम बड़े बेघर हैं। इस तरह ब्रह्मा हो पये जैसे कोई तमासा हो। वह बीरत साज से म रही थी। यह तो आप समझिए कि दो चार बच्ची बहिलाएँ न गयीं और जम्होंने स्थित को काबू कर लिया जग बह स्त्री धर्म से मारे मर जाती।

उसके साथ कोई और नहीं था।

“नहीं। वह निहामठ एक परीब भर ली थीरत है। उतका पति मुबह ही मजदूरी पर जाता जाता था और वह बेचारी भी कही काम काम करने जाती जाती है। इसके साथ ही एक आबमी कह रहा था कि यदि ये दोनों काम न करें तो अपने परिवार का पोषण भी नहीं कर सकते।

इत्याग बहुत मजबूर है।

रुपा ने मैत्र पर बिलारी पुस्तकों को ठरतीब से रखते हुए कहा यहाँ की सरकार को सबसे पहले इत्यागों को जिम्मेवो का ठेका से लेना चाहिए। यह निश्चितता ही मात्र के जीवन को समुद्र और सुधी कर सकती है।

बाउबाँत बहुत देर तक चलती रही। एकाएक इम्बिरा ने समी बावों का पस्ता छोड़ कर कहा ‘रुपा! कत से तुम अपने काम पर जा सकती हो और रामा तुम भी’

माँ को किनी ने जोर की बिकोटी भर ली हो उसे बिहृ क कर बोली ‘ये दोनों पर से माहुर नहीं जा सकती।’

‘नहीं जा सकती क्यों? इम्बिरा ने प्रश्न किया।

माँ ने बिसीपन की ओर देखा पर बिलोचन ने माँ की ओर पसकें नहीं उठायीं। माँ समझा मयो कि इस बुझैत ने मेरे बेटे पर जादू कर दिया है। उसको कोई घुट्टी पिता ही है। फिर भी अपने अपने घरों पर जोर देकर कहा ‘इसलिए कि घर की इज्जत-आबरु सबसे बड़ी है और छोट्टियों के मखन पर भी अकदे नहीं हैं।

‘दि: दि ! कम से कम आपको अपनी इज्जत पर कीपड़ नहीं उछातना चाहिए। सभी लोग अपने घर की इज्जत पर घुम पड़त देखकर उसका डकते हैं और भाव उसे उपाड़ती है। आपका घर बानी चाहिए। और फिर रामा की पढ़ाई मजदूरी पर भावम और रुपा इन तरह नीकरी छोड़ कर घर में बहूँ बैठ सकते। बहू

विम्वेशारी होती है लौकरी की अपनी । इसके मानिक पुलित का भेज कर भी इसे बुला सकते हैं ।

त्रिसोवन इस पर भी चुप रहा । माँ की आँखों में रोप व बुधा शोनों तैर घायी । बोली "एक काठ से भाप उबका दित नहीं मप क्या ? त्रिसोवन में बहती हूँ कि लड़कियों को ।

इम्बिरा बीच से बोली 'भाप के बिस में अविस्वात भर कर गया है । मैं भापका प्यादा दिरोब नहीं करू की । जब तक भापका लड़का काम पर न लवे तब तक क्या काम पर बायैबी घोर रामा की पढ़ाई में भाप बापा नहीं डाल सकती ।

उतका निमय गुनकर सब में हराचल हुई । माँ निःसम्भ तो उम और बाहर साँकने लगी ।

बाहर कीड़ों की तरह इम्मान बस-फिर रहे थे । एक नया बच्चा इस तैजी से भाप या रहा था कि बहनों की आँखों में कीतुक सा उठा और बोठ हँती से भर घाने ।

बोको ही देर माँ बिमुक रो खड़ी रही । वह बहुत बुली परेशान और बिचस थी कि उसका प्रमुल्य भर गया उतका पीरव टूट गया ।

बली से बर्षी निकली । राम नाम राय की ध्यान करती हुई । घामद कोई बबाम की भीत थी इसभिए बर्षी से जाने बाने रो रहे थे । माँ ने मन ही मन कहा 'हे प्रभू तू मुझे भी जब उठा ले ।

×

×

×

एक बर्य बाद—

सबय और लठेर को आँखों में प्रसन्नता और प्राकृतता दोषों शीत ही रही थी । रामा ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया जैसे ही उसकी शोनों आँखों में लुपियों का शावर सहृण उठा । उसके होंठों पर हात रक-रक कर बिहगर रहा था ।

इम्बिरा ने पूछा, 'क्या बात है रामा बाब ?'

कुछ नहीं मानी जीवन बदल जायेगा मेरा सपना पूरा हो
जाएगा ।

'कैसे ?

'मैं बिदेस जाऊँगी । पेरिस न्यूयार्क संभव ।
'सब !'

हाँ । रामा ने बिचित्र तरह अपनी पसलें लपटायी । बाँकों को
इग्लिदा के सूँचे बंधरे पर जमाते हुए उसमें अपनी थोटी को निरद्वैत
सोमा और बनाया फिर उसको झटके के साथ पीछे की ओर फेंकती या
हुई वह कह उठी "पुए की परतों माभी दिन प्रतिदिन पटती या
रही है । रोसनी एकदम स्पष्ट होकर मरे मामने खँन रही है । प्राणी
की एक अविनाशा जैसे ही पूरी होती है जैसे ही गुणियाँ उनके बेहरे
पर आकर कदम हो जाती हैं ।

माभी कुछ उदास भी हो गयी । अपने टण्ट के पस्ते को अपनी
बंभुमी के धोर से बाँधती हुई वह बोली तुम उग गुमी में भेरा
गाय नहीं सोगी जिमका मुझे बरसों से इन्जारे पा ।

'कीन भी ?

'मैं माँ बनने वाली हूँ ।'

एक" उसका माभी को आतिथन में धानज करार चुम लिया ।

माभी का बड़ी ते बड़ी एमस्या में लगा एटस्य रहने वाला बेद्वय
संकोच से मुक गया । अपनी पल्लवों की बरोजियों को लपटाती हुई
कुछ सँपती वह हुई बोली हाँ मैं माँ बनने जाती हूँ । मेरे माँ बनने
के बाद ही तुम्ह जाना होगा ।

सकित माभी ?

'क्या ? माभी की बाँवों में प्रसन्न था ।
मुझे जाने दो । जीवन में सुभनवर बन ही कम मिलते हैं ।

छोमाग्य गमना कि मुझे दूर मुजबमर मिल गया गया है । रैियो में
लगाउमर की मोकरी करने के बाद माभी मुझे अपने जीवन

जब मैं उठना अपना नहीं है जितना पहले होता था। अतः इन्द्रिय
अपने मुकाबला रामा की आर विद्युत है।

बहु सो जाती है। कभी कभी भीर कभी रेखा के साथ सोने में
उठे अशोक अशोक अशोक की अनुभूति होती है। जब उसकी
मुद्रावृत्ति पर पापता की किरणें विकीर्ण हो जाती है और ममता
का सावर विद्रुद-नितमट कर उसके मचनों में आ जाता है। वह
बादीत्व की एक मूंग में लोयी हुई सब अपमपाती रहती है और कभी
कभी भूम भी लेती है तब रेखा आम जाती है। और वह अत्यन्त
सहजता व मीनेपन से युक्ती है 'बड़ी हीरी यह क्या करती ही ?

"तुम्हें भूमती हूँ रेखा तू मेरी कभी है न ?"

रेखा की आँसों में अशोकता नाच उठती है और रमा के चेहरे
की विरता से वह संकित हो जाती है।

रमा ।

असन्तोष की भाग में समिधा की माँति बल रही है। जीवन की
परिस्थितियों और विचलताएँ हवन घामैधी की तरह उसे प्रक्यास्मित
कर रही हैं। इतर उसने अपने घापको जैसे बहुत बड़ी अभाविन
नामा है और उसे महसूस हुआ कि यह निगमस्त ही अत्यन्त जीवन की
रही है। इस जीवन में कोई भी स्वाभाविकता नहीं है कोई सहज
बुद्ध नहीं। अतः वह बहुत ही अस्तमुद्र हो गयी है और इस अस्त-
मुद्रता में उसे उदासियों में डेर दिया है।

जोर की सटसट की आवाज करती हुई राधा जाती है। उसके
अप-अप से सुखदुःख करती है और मेरे मस्तिष्क में एक मारकता का
जाती है। उसका दुपट्टा दुपट्टा का स्रोत है और उसका आचमन
बातावरण में अत्यन्त-बहार साने वाला होता है।

कभी-कभी वह पीकर जाती है। तब उसके कब्रम सङ्घट्टाते हैं।
वह बुनबुनाती है। आकर वह अपने कमरे में फिर आस करती है।
उसका कमरा ठीक मेरे ऊपर है इसलिए बेचारी बुकिया शीतल के

ऊँची निपाहें किए हुए देखती रहती है और कमी-कमी वह खिंचत रहने हुए ही श्वास शुरू कर देती है जब लट खट खट से मेरे तिर में बर होने लगता है और बुद्धिमा परेशान होकर ऊपर जाती है और जब वह वापस सीटती है तब उसकी आँगों में आँसू बरके हुए होते हैं।

सुबह रामा बठकर अपनी सम्पूर्ण शोमती है और उनमें रखे हुए मोटों पर कुछ मोट और रख देती है, खोप भामी को पकड़ा देती है। माथी मूण हो जाती है और रामा अपने विदेह जाने का प्साण सुनाती है। प्साण वह हर रान सुनाती है।

इम तरह जीवन मृरर रहा था इस परिवार का।

×

×

×

अखानर एक मृपान जाया। इम मृपान जो मैं भी सहन नहीं कर सया।

वह सुबह आठतीजो। कुछ मेद-यंड नील दयन पर टक रहे थे। माँ मेरी गोद में बँठी हुई दँबर को घाट कर रही थी कि श्मिच भागी-भायो भामी मास थी क्या दरवाजा नहीं ग्योमती है। हमने कई बार किराड़े गटगटामे हैं।

माँ बेहनाया भाया।

किपोवन जोर जोर से किराड़ लटखटा रहा था और रामा भीच भीच कर क्या का आनाउ लमा रही थी। रेवा चुनचाप गड़ी थी। समी दो-आर पड़ोनी आ बये। उग्होंने घट प्रस्ताव रया कि दरवाजा तोड़ दिया जाय।

दरवाजा तोड़ दिया गया।

देया—

बिस्तरे पर क्या निदा में सोयो हुई है। उसकी सारी देह सखर चादर से ढकी है और ऊपर नीले-नीले बँया बन रहा है।

हुए कहा हलो कहीं से आ रही हो ? घामो बेताई में एक-एक कप चाय पी चाय ।

मैंने मुझे में दति पीसे । कुछ नहीं कहा । तिरुं से बेचती रही । वह बेतमक होकर कह रही थी "यहाँ क्यों सड़ी हो ? बतो न ! घामोदर ने मुझे भी अपने आफिन में एलाइस्टमेंट दे दिया है ।"

मैं शारी कह कर बली घायी । उस दिन मैं वमुना किनारे बहुत देर तक बैठी रही । सहरो पर मनोरमा की दुष्ट बीर अभी हुई मुस्कटाहट तैर नर कर किनारे के पास आ रही थी बीर मुझे बिडा रही थी । बीरे-बीरे सूर्य डूब गया । बम्बेरा अपने मौन शरों से घाने मया । मेरा मन शून्यता से भर गया बीर मुझे बामीदर का प्यार, बावसे बीर उतकी उन्न भर साथ रहने की कसमें बाब जाने लगी । उसने मुझे बायबा किया या कि मैं उन्न भर तुम्हारे प्यार बीर समर्पण की महागता की निमाऊ या । उसे एकनिष्ठ ईश्वर की तरह मानू गा । मैंने उसे सब कुछ दिया । उन, मन बीर बर्षण । बामालोक का तर्षोपरि सरय बीर बम्बना । मैंने भी गोचा कि ऐसा समर्ष मुबक पाकर मैं अपनी बीर अपने परिवार की समस्त समस्याओं की हल कर लू थी । मैंने उसे एक पठितता की तरह शक्या पति माना बीर जीवन के अनितम सन अब मैं भीड़ की पोलियां मुझे बेहोश करेगी उसका ही ध्यान करूँगी क्योंकि अभी मुझे तुम्हें बहुत सी बातें बतानी हैं ।

रामा । उस दिन मुझ जीवन बड़ा अवस्य विनीता घीर बर्षिता मया । इसरे दिन मैंने बामोदर से मिलना चाहा, उससे मुझ से मिलने की घसमर्षता प्रकट कर ली । लेकिन धाय को मैंने किसी भी तरह उसे पकड़ ही लिया । उससे मेरी बहुत सी बातें हुई पर उसने मुझे साफ-साफ धम्कों में कह दिया कि वह मेरे ब्यक्तिगत जीवन में अधिक हस्तक्षेप न करे । लेकिन बार्बिक मरद मैं पूर्ववत् बैठा रहूँगा । वह सतर वा उसका । मैं इसे नहीं छोड़ सकती । मैंने कुछ सचेमित धर्मों

में उसे पिछली जिम्मेदारी के वे क्षण याद दिलाये जो हमारे पवित्र प्यार के प्रतीक से तो उसने एक सचे हुए व्यापारी की तरह कहा 'उसकी कीमत मैं बहुत दे चुका हूँ।

इसके बाद मैंने उससे किसी भी तरह बात-चीत करनी उचित नहीं समझी।

रामा ! स्वरूप से मेरा शुद्ध मैत्री सम्बन्ध है। वह मुझे जो-जो उपहार या रुपये साकर देता या वस्तुतः उन्हें प्यार में उसे पहल साकर दे देती थी। वह बेचारा किसी भीर से प्यार करता है और उसे विश्वास है कि एक म एक दिन वे सामाजिक सम्बन्ध टूट कर उन्हें फिर मिलने दे देंगे। उसे तुम यत्न मत समझना। उसकी आर्थिक-स्थिति भी क्या बुरा प्रकटी नहीं है।

रामा ! अब मैं तुम से कुछ कहना चाहती हूँ। तुम्हारे जीवन का परिणाम क्या हो सकता है ? यह होटल में रात रात भर आना विदेश के सपने देखना और उसके बदले में एक सम्पन्न बिलामी जीवन बीठाना कहीं तक व्याप नसकत है ? समय तुम्हें भी इसी तरह भिखीर कर बना चाहेगा और तुम्हारी समझाएँ उस दिन त्रिभू पीड़ा का अनुभव करेगी। यादर वह तुम्हें भी इसी ब्रजाम से टकराने के लिए बिचल कर दें। फिर क्या तु चाहती है कि तेरी प्यूस भी ऐसा भी इसी तरह हम बिलामी जीवन के लिए, इन्हीं अस्वस्थ परम्पराओं व तरीकों को अपनाए ? वह भी अपनी बुबारी अभिजातियों पर उगी तरह ऐसे ही बाबूदरों को बसाकर करने दे जो बिचाराओं को एक मजाक समझने हों ? वह बचती है घरती की वह पदाई हुई माटी जिसमें बीजा बीज दासोपी बीजा ही देड़ उठेगा। मैं चाहती हूँ कि उनमें कोई बिप हीन न पड़े। वह किसी भी जहरीले दांतों की गिकार न हो ? फिर तेरी माभी भी माँ बनने वाली है। वह भी एक नये त्रिभू को प्यार देगी। क्या इत नये त्रिभू के हाप में बही बगोरा होगी जो उधरी त्रिभू को अजपर की तरह नियत जाये ? जिसके उम्बुछ

मुस्कान इस बुद्धिमा की नहीं, उस संपर्प की है जो पड़ोसी हवाओं और बस्बस्ब सुल भोप में मिट-मर जाती है और स्वस्वता में अनवरत संगीत के तारों की तरह मीन संकृत करती रहती है।

मैं भी खुश हूँ क्योंकि बाहिर हम सब इस संघाति काम की बीड़ में हवाओं विकृतिमों को लेकर कैंठे समष्टि का उच्चार कर सकते हैं ? अनेक तरह के बलिदान ही हमें और हमारे पवन-वैप मधुस्र बीड़ते हुए जीवन को आघात पहुँचा कर उसमें घामुस्रचून परिवर्तन भाष्ये ।

यह परिवार सच्चे सुल की ओर बढ़ रहा है। जब कभी विसौजन रात को काम करते-करते एक जाता है तब रामा जाती है माँ जाती है, रैवा जाती है और सारा परिवार मिल कर एक जागम्ब और उस्ताय के साथ बाठों ही बाठों में सारा काम परम कर बैठा है। मैं बिभोर होकर कह उठता हूँ—यही सच्चा जीवन है। अम में जागम्ब और मेहगत में सुल। और मैं अपना अहम हाप रामा के सिर पर रख बैठा हूँ। मैं उसे बहुत ही प्यार करता हूँ क्योंकि हर कमरा ऐसे ही मबस्वी को प्यार करता है जो जीवन में स्वस्वता लाने की चेष्टा करते हैं और सुब उसे अपने जीवन में कामते हैं।

मेरी कहाना खत्म होती है।

ॐ

श्री यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' की अन्य कृतियाँ

उप-यास

संन्यासी भीर मुन्दरी

[गुजराती मराठी चरु में अनुवित]

बीमा बसा । बीमा बुसा

मिट्टी का कर्मक

[गुजराती व तिबी में अनुवित]

भोफेसर

बापस में दूब बापों में पानी

बू बट के बीमू

नयना भीर भरे

[गुजराती व तैलपु व तिबी म अनुवित]

नया इम्तान

[गुजराती में अनुवित]

गूम का टीरा

बड़ा बाबमी

पप की बंधी

[तैलपु में अनुवित]

मपमा

प्यार के बंग

रायमा अन्नदाता

[राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कार

व गुजराती में अनुवित]

बनादूत

युग बैरता

जम की रीत

[गुजराती में प्रचलित]

मुमाहों की देवी

ठकुरानी

मीमे आकारा तले

एठ नसी बो एव

महानी संप्रह

विष्णामित्र की खोज

नेत्रराग

बरफ की घमाषी

एकांकी संप्रह

पृथ्वी और तारा

बाल-साहित्य

नांग नकटे

मण्डेव बतक

मान का बाबछाह

पद्या का सूरज

झूठी घात

टैमी टोरी

